बी एच ई एल
BHEL

अरुणिमा

अंक-37 अर्धवार्षिक, 2025-26

भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

बीएचईएल की हिन्दी गृहपत्रिका 'अरुणिमा' को नराकास से पुरस्कार

बीएचईएल कॉर्पोरेट कार्यालय की अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका **'अरुणिमा'** को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली द्वारा वर्ष 2024 के लिए श्रेष्ठ हिन्दी गृहपत्रिका की श्रेणी में 'प्रोत्साहन' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह 21 जनवरी, 2025 को आयोजित नराकास की अर्धवार्षिक बैठक के दौरान आयोजित किया गया। बीएचईएल की ओर से श्री राजीव कृष्ण श्रीवास्तव, महाप्रबंधक, कॉर्पोरेट प्रशासन ने नराकास अध्यक्ष से यह पुरस्कार ग्रहण किया।

नराकास प्रतियोगिताओं में बीएचईएल कर्मचारियों ने सात पुरस्कार जीते

नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली के सदस्य कार्यालयों द्वारा नराकास के तत्वावधान में वर्ष 2024 के दौरान 15 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में बीएचईएल के कुल सात कर्मचारियों ने हिन्दी टिप्पण लेखन, हिन्दी प्रशासनिक शब्द अंताक्षरी, सूक्ति लेखन, हिन्दी आशुभाषण जैसी प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीते। नराकास के तत्वावधान में हिन्दी प्रशासनिक शब्द अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन बीएचईएल द्वारा किया गया था।

सभी विजेताओं को 21 जनवरी, 2025 को आयोजित नराकास की 60वीं बैठक में पुरस्कृत किया गया। विजेता कर्मचारियों के अलावा प्रतियोगिता के आयोजन के लिए बीएचईएल कॉर्पोरेट कार्यालय को भी शील्ड एवं प्रमाण–पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।

बी एच ई एल
BHEL

निदेशक (मानव संसाधन)

संदेश

प्रिय साथियो,

"अरुणिमा" के 37वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं। यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि बीएचईएल परिवार की रचनात्मकता, भाषा–प्रेम और संगठनात्मक एकजुटता का जीवंत दस्तावेज है। पिछले अंकों की तरह, इस अंक में भी हमारे कर्मचारियों और उनके परिजनों की सृजनशील अभिव्यक्तियों ने इसे विशेष बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

यह विचारों को जोड़ने और संस्कृति को संजोने का अद्वितीय सामर्थ्य रखती है। **"अरुणिमा"** इसी भावना को साकार करते हुए बीएचईएल की विभिन्न इकाइयों को एक सूत्र में बाँधते हुए राजभाषा के संवर्धन में सराहनीय योगदान दे रही है।

हमारा दृढ़ विश्वास है कि कर्मचारी ही हमारी सबसे बड़ी पूँजी हैं। उनकी सृजनशीलता, विचारों और अभिव्यक्ति को सम्मान देना हमारी प्राथमिकता है। **"अरुणिमा"** इसी उद्देश्य को सार्थक करते हुए कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा व्यक्त करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती है।

इस अंक में बीएचईएल की विभिन्न इकाइयों की प्रमुख राजभाषा गतिविधियों और नवाचारों को भी शामिल किया गया है, जो हमारे निरंतर प्रयासों और प्रगति के प्रतीक हैं। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि संगठन में हर स्तर पर हिंदी के प्रति उत्साह और समर्पण लगातार बढ़ रहा है।

मुझे विश्वास है कि **"अरुणिमा"** का यह अंक पाठकों को प्रेरित करते हुए संगठन में हिंदी के प्रति लगाव एवं सम्मान को और प्रगाढ़ करेगा। कॉर्पोरेट राजभाषा विभाग और संपादकीय टीम का यह प्रयास सराहनीय है।

मैं राजभाषा विभाग से जुड़े हमारे साथियों के साथ–साथ **"अरुणिमा"** के सभी पाठकों, लेखकों, संपादक मंडल तथा पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष योगदान देने वाले साथियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

कृष्ण कुमार ठाकुर

कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)

संदेश

प्रिय साथियो,

"अरुणिमा" के 37वें अंक के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं। यह पत्रिका केवल हिंदी भाषा के संवर्धन का प्रयास ही नहीं, बल्कि हमारे संगठन की सांस्कृतिक एकता और रचनात्मक ऊर्जा का सशक्त प्रतीक भी है। प्रत्येक अंक हमारे सहयोगियों की सृजनशीलता, उत्साह और समर्पण का जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करता है।

हिंदी हमारी पहचान की भाषा है। यह केवल संवाद का माध्यम ही नहीं, बल्कि विचार, संस्कृति और भावना का संगम भी है। संगठन के विभिन्न प्रभागों और इकाइयों को एक साझा मंच पर लाने में **"अरुणिमा"** महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह न केवल हमारी राजभाषा नीति को गति देती है, बल्कि कर्मचारियों और उनके परिवारों की साहित्यिक और रचनात्मक अभिव्यक्ति को भी प्रोत्साहन प्रदान करती है।

यह गर्व का विषय है कि हमारे सभी सहयोगियों ने अपनी प्रतिभा और लेखन से इस अंक को समृद्ध बनाया है। यह सामूहिक प्रयास बीएचईएल की उस सोच को दर्शाता है जिसमें कार्य और संस्कृति, दोनों को समान महत्व दिया जाता है। आशा है कि **"अरुणिमा"** का यह अंक पाठकों को नई प्रेरणा प्रदान करेगा और हिंदी के प्रति हमारे समर्पण को और अधिक प्रगाढ़ करेगा।

मैं सभी साथियों, लेखकों और संपादकीय टीम की सराहना करता हूँ और मुझे विश्वास है कि आने वाले अंकों में यह पत्रिका और ऊँचाइयाँ प्राप्त करेगी।

एम श्रीधर

संपादकीय

"अरुणिमा" का 37वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। सभी इकाइयों और सहयोगी कर्मचारियों के सतत समर्थन से इस पत्रिका के पिछले 36 अंकों का सफल प्रकाशन संभव हुआ है। इस अंक के लिए भी आपने अपनी रचनाएं एवं इकाइयों की राजभाषा गतिविधियों की जानकारी प्रेषित कर जो सहयोग प्रदान किया है, उसके लिए हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

भाषा संस्कृति की संवाहक होती है। जिस प्रकार हिंदी ने पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक भारतवासियों को एकसूत्र में पिरोने का कार्य किया है, उसी प्रकार बीएचईएल की **"अरुणिमा"** पत्रिका अपने व्यापक नेटवर्क के माध्यम से देशभर में स्थित बीएचईएल की इकाइयों को जोड़ते हुए एक सशक्त सांस्कृतिक सेतु की भूमिका निभा रही है।

यह पत्रिका बीएचईएल परिवार की रचनात्मक अभिव्यक्तियों को मंच प्रदान करने का प्रभावी माध्यम है। साथ ही, हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण सृजित करने एवं राजभाषा के संवर्धन में भी **"अरुणिमा"** निरंतर सार्थक योगदान दे रही है।

इस अंक में कर्मचारियों एवं उनके परिजनों की विविध विधाओं पर आधारित रचनाओं को समाहित किया गया है। लगभग सभी इकाइयों की सहभागिता सुनिश्चित करने का विशेष प्रयास किया गया है, जिससे पाठक हिंदी साहित्य की विविधता और समृद्धि का अनुभव कर सकें।

मुझे विश्वास है कि **"अरुणिमा"** को आपका स्नेह और मार्गदर्शन सदैव इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा और यह पत्रिका प्रत्येक नए अंक के साथ अपने उद्देश्यों का विस्तार करते हुए नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगी।

आपसे आग्रह है कि अपने मूल्यवान सुझाव और विचार अवश्य प्रेषित करें, ताकि **"अरुणिमा"** के भावी अंकों को अधिक समृद्ध, रोचक और संग्रहणीय बनाया जा सके।

(आर. के. श्रीवास्तव)
महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट प्रशासन)

संपादक मण्डल

संरक्षक
श्री के सदाशिव मूर्ति
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मार्गदर्शक
श्री कृष्ण कुमार ठाकुर
निदेशक (मा.सं.)

मुख्य परामर्शदाता
श्री एम. श्रीधर
कार्यपालक निदेशक (मा.सं.)

मुख्य संपादक
श्री आर के श्रीवास्तव
महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट प्रशासन)

संपादक
सुश्री चन्द्रकला मिश्र
महाप्रबंधक (राजभाषा)

सह संपादक
श्री अनुराग मिश्र
उप प्रबंधक (राजभाषा)

परामर्शदाता मंडल

सुश्री दीपिका शर्मा
वरि. उप महाप्रबंधक (डिजिटल एचआर–एनालिटिक्स समूह)

श्री उदयराज मीणा
उप महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट प्रशासन)

सुश्री अर्चना महाराम यादव
वरि. प्रबंधक (वित्त)

संपादन सहयोग

सुश्री रेणू दास
वरिष्ठ कार्यपालक (राजभाषा)

श्री सुरेश कुमार
सहायक अधिकारी (अनुवाद)

संपर्क सूत्रः
राजभाषा विभाग, बीएचईएल, कॉर्पोरेट कार्यालय,
बीएचईएल सदन, प्लॉट नं. 25, सेक्टर 16ए, नोएडा–201301
दूरभाषः 0120–6748470, ईमेलः cmishra@bhel.in, मो.: 9810619923

(इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं, सरकार अथवा बीएचईएल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

अनुक्रमणिका

क्रं	शीर्षक	रचना वर्ग	लेखक (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पेज नं.
1	डेटा एनालिसिस: एक परिचय	तकनीकी आलेख	असद अली	8–12
2	धराली का विलाप	कविता	मीनाक्षी बटोला	12
3	ऑफिस में एर्गोनॉमिक्स: स्वास्थ्य और उत्पादकता के लिए आवश्यक कदम	स्वास्थ्य संबंधी	प्रभात कुमार	13–14
4	वैश्विक परिवेश–एक नम्र निवेदन	कविता	दिनेश चंद्र जोशी	14
5	उत्पादकता और सुरक्षा: अटूट सम्बंध	आलेख	राणा रश्मिरथी	15–16
6	कार्य–जीवन संतुलन: एक आधुनिक आवश्यकता	स्वास्थ्य संबंधी	युवराज मोहन	17–18
7	विख्यात भेल का नाम करें	कविता	नवल किशोर सिंह	18
8	भ्रष्टाचार मुक्त भारत– विकसित भारत	आलेख	विजय कुमार अग्रहरि	19–20
9	इंसान ढूंढ़ रहा भगवान	कविता	मणिभ प्रकाश	20
10	शिक्षा का बदलता परिदृश्य	आलेख	साहिल जैन	21–22
11	चित्त गृह	कविता	चंद्रभूषण सिंह	22
12	कविता	कविता	कमल कुलश्रेष्ठ	22
13	भारत की बढ़ती वैश्विक उपस्थिति, डिजिटल युग और हिंदी भाषा	आलेख	डॉ. विजय कुमार मिश्र	23–24
14	महाकुंभ यात्रा वृत्तांत	यात्रा वृत्तांत	अमृत सिंह	25–27
15	नन्ही परी	कविता	इंद्रजीत सिंह भंडारी	27
16	डार्क वेब क्या है? अपने बच्चों को डार्क वेब से कैसे बचाएँ?	तकनीकी आलेख	गौरव अब्रोल	28–29
17	कंपनी में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियां	गतिविधियां	संकलित	30–32
18	राजभाषा संबंधी सामान्य जानकारियां	राजभाषा ज्ञान	संकलित	33
19	'गुनाहों का देवता–एक संस्मरण'	संस्मरण	अनिकेश मणि त्रिपाठी	34
20	हिंदी का वैश्विक विकास : संभावनाएं और मार्ग	आलेख	अभय कुमार	35
21	हिंदी के प्रयोग के लिए तकनीकी सुविधाएं	आलेख	केवल कृष्ण	36–37
22	गुब्बारे वाला बच्चा	कविता	भगत सिंह	37
23	चुनौतियों से व्यक्तित्व विकास	संस्मरण	आँचल चौधरी	38–40
24	सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि	आलेख	तरुण मंडल	41
25	रिश्तेदारी	कहानी	आद्यंत बरनवाल	42
26	स्मार्टनेस	कहानी	नवीन जीनगर	43–44
27	ऑपरेशन सिंदूर	कविता	प्रतिभा शाही	44
28	हिंदी की शक्ति: वैश्विक व्यापार में सफलता की कुंजी	आलेख	प्रवीण लाखे	45–46
29	जीवन की भरपाई	कविता	दीप्ति सिंह	46
30	नारी शक्ति	कविता	नरोत्तम कुमार	46
31	महिला सशक्तिकरण–कब तक सिर्फ एक नारा?	आलेख	सानिया	47
32	सर्व–सम्मान है आवश्यक	कहानी	वैशाली कंचन	48
33	सावन	कविता	शार्वी राजौरा	48
34	माटी दर्शन	आलेख	दीपक कुमार पांडे	49–51
35	पृथ्वी हमारी धरोहर	आलेख	सुमन नकवाल	52
36	ऑपरेशन सिंदूर: एक अद्वितीय शौर्य गाथा	आलेख	शिवनाथ	53–54
37	भाषा परिचय	कविता	सिप्रारानी आचारी	54
38	पंच परमेश्वर	कहानी	मुंशी प्रेमचंद	55–58
39	कंपनी में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियां	गतिविधियां	संकलित	59

डेटा एनालिसिसः एक परिचय

असद अली

आज की अत्याधुनिक तकनीकी दुनिया में, हर क्लिक, हर स्वाइप और हर लेन–देन एक नई डेटा की धारा उत्पन्न करता है। लेकिन कच्चे डेटा का स्वयं में सीमित महत्व है; इसकी वास्तविक शक्ति उन अंतर्दृष्टियों में छिपी होती है जिन्हें यह उजागर करता है। यही अंतर्दृष्टियाँ व्यवसायों की तेज़ी से वृद्धि को प्रोत्साहित करती हैं, स्वास्थ्य क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाती हैं, स्मार्ट शहरों के विकास को गति देती हैं और व्यक्तिगत अनुभवों को नए आयाम प्रदान करती हैं। यह लेख डेटा विश्लेषण (Data Analysis) की अवधारणा, प्रक्रिया, अनुप्रयोग, चुनौतियों और भविष्य पर गहन दृष्टि डालता है तथा स्पष्ट करता है कि क्यों डेटा विश्लेषण डिजिटल युग में निर्णय लेने की सबसे मजबूत नींव बन चुका है।

डेटाः

''डेटा एक कीमती चीज़ है और यह स्वयं प्रणालियों से भी अधिक समय तक टिकेगा।'' – **टिम बर्नर्स–ली,** वर्ल्ड वाइड वेब (www) के आविष्कारक।

डेटा को तथ्यात्मक जानकारी के संग्रह के रूप में परिभाषित किया जाता है, जैसे माप, आंकड़े, तथ्य, संख्याएं या शब्द, जिनका उपयोग तर्क, चर्चा, गणना या निर्णय लेने के आधार के रूप में किया जाता है।

डेटा के प्रकारः

- **संरचित डेटा (Structured Data)**

  एक निश्चित प्रारूप में व्यवस्थित डेटा (अक्सर पंक्तियों और स्तंभों वाली तालिकाओं में), जिससे इसे आसानी से खोजा और विश्लेषण किया जा सके। उदाहरणः SQL डेटाबेस और एक्सेल स्प्रेडशीट।

- **अर्ध–संरचित डेटा (Semi-Structured Data)**

  ऐसा डेटा जो पूरी तरह से संरचित नहीं होता, लेकिन इसमें मार्कर या टैग्स होते हैं, जो डेटा को आंशिक रूप से व्यवस्थित करते हैं। इसे सीधे तालिकाओं में फिट करना मुश्किल होता है, लेकिन फिर भी इसमें कुछ संगठनात्मक संरचना होती है। उदाहरणः XML डॉक्यूमेंट्स, JSON फाइलें।

- **असंरचित डेटा (Unstructured Data)**

  ऐसा डेटा जिसका कोई निश्चित प्रारूप या संरचना नहीं होती। इसे सीधे विश्लेषण और प्रोसेस करना चुनौतीपूर्ण होता है। उदाहरणः ईमेल्स, सोशल मीडिया पोस्ट, इमेजेज, ऑडियो और वीडियो फाइलें।

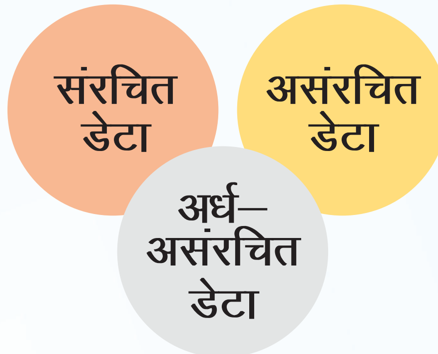

चित्र 1: डेटा के प्रकार

विश्लेषणः

विश्लेषण वह प्रक्रिया है जिसमें किसी विषय, वस्तु या घटना के घटक तत्वों या अवयवों का गहन अध्ययन किया जाता है, ताकि उसके कार्य करने के तरीके, अर्थ या मूल कारणों को बेहतर ढंग से समझा जा सके। **उदाहरणः** किसी कविता का विश्लेषण करते समय उसके विषय, रूपक, भाषा शैली और प्रतीकों का गहन अध्ययन करना, ताकि उसके अंतर निहित अर्थ को समझा जा सके।

डेटा विश्लेषणः

डेटा विश्लेषण वह प्रक्रिया है, जिसके तहत डेटा को एकत्रित (collection), परिवर्तित (transformation) और संगठित (organization) किया जाता है, ताकि उससे निष्कर्ष निकाले जा सकें, पूर्वानुमान लगाए जा सकें और सूझबूझ भरे निर्णय लिए जा सकें। **उदाहरणः** अमेज़न (Amazon) जैसी कंपनियाँ उपयोगकर्ताओं के ब्राउज़िंग इतिहास, पिछली ख़रीदारियों और इच्छा–सूची का विश्लेषण करती हैं, ताकि उन्हें व्यक्तिगत उत्पाद सुझाव दे सकें और ग्राहक अनुभव को बेहतर बना सकें।

डेटा विश्लेषण के प्रकारः

वर्णनात्मक विश्लेषण (Descriptive Analysis): ऐतिहासिक डेटा का सारांश तैयार करना और उसका वर्णन करना ताकि पिछले रुझानों को समझा जा सके। **उदाहरणः** पावर बीआई या एक्सेल डैशबोर्ड, जो वर्षवार राजस्व दिखाता है।

नैदानिक विश्लेषण (Diagnostic Analysis): पैटर्न, रुझान या विसंगतियों के पीछे के मूल कारणों का पता लगाना। **उदाहरणः** यह पहचानना कि किसी विशेष उत्पाद की खराबी के कारण रिटर्न कम हुए।

पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण (Predictive Analysis): भविष्य के परिणामों का पूर्वानुमान लगाने के लिए ऐतिहासिक डेटा और मशीन लर्निंग का उपयोग करना। **उदाहरण:** पिछले रुझानों के आधार पर अगले महीने की बिक्री का पूर्वानुमान लगाना।

अनुदेशात्मक विश्लेषण (Prescriptive Analysis): पूर्वानुमानित जानकारियों के आधार पर सर्वोत्तम निर्णय और रणनीतियां सुझाना। **उदाहरण:** लागत को न्यूनतम करने के लिए उत्पादन समय–सारिणी की सिफारिश करना।

अन्वेषणात्मक विश्लेषण (Exploratory Analysis): बिना किसी पुर्वधारणा के छिपे हुए पैटर्न, संबंधों और विसंगतियों की खोज करना। **उदाहरण:** कर्मचारियों के त्यागपत्र डेटा का विश्लेषण करके इस्तीफों का प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना।

पाठ एवं भाव विश्लेषण (Text & Sentiment Analysis): असंरचित पाठ्य डेटा का विश्लेषण करके महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त करना। **उदाहरण:** एचआर नीतियों में सुधार के लिए कर्मचारियों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करना।

चित्र 2: डेटा विश्लेषण के प्रकार

डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया:

पूछना (Ask): यह प्रारंभिक चरण उस समस्या को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है जिसका उत्तर आवश्यक है। विश्लेषक संबंधित पक्षों से बातचीत करके उनकी आवश्यकताओं, उद्देश्यों और डेटा विश्लेषण से अपेक्षाओं को समझते हैं। **उदाहरण:** शीर्ष प्रबंधन का पूछना की, "पिछली तिमाही में हमारे ग्राहक संतोष रेटिंग में गिरावट क्यों आई है?"

तैयार करना (Prepare): इस चरण में आवश्यक डेटा की पहचान की जाती है, उसे इकट्ठा किया जाता है और पिछले चरण में परिभाषित सवालों के आधार पर व्यवस्थित किया जाता है। इसमें आंतरिक सिस्टम या बाहरी स्रोतों से डेटा इकट्ठा करना शामिल हो सकता है। **उदाहरण:** ग्राहक संतोष का विश्लेषण करने के लिए ग्राहक फीडबैक सर्वेक्षण, कॉल सेंटर लॉग और सोशल मीडिया टिप्पणियों को इकट्ठा करना।

प्रसंस्करण (Process): इस चरण में डेटा को साफ और प्रोसेस किया जाता है ताकि यह सटीक और विश्वसनीय हो। इसमें डुप्लिकेट डेटा हटाना, गायब मानों (Missing Values) को संभावना, और विश्लेषण के लिए डेटा का प्रारूप सही करना शामिल है। **उदाहरण:** अधूरी सर्वेक्षण प्रतिक्रियाओं को हटाना या ग्राहक फीडबेक डेटा में असंगत तिथि प्रारूपों को सुधारना।

विश्लेषण (Analyse): इस चरण में मुख्य विश्लेषणात्मक कार्य होता है। डेटा का सांख्यिकी, विजुअलाइजेशन या मशीन लर्निंग तकनीकों का उपयोग करके अध्ययन किया जाता है ताकि पैटर्न या "पूछना (Ask)" चरण में परिभाषित मूल प्रश्नों के उत्तर मिल सकें। **उदाहरण:** यह पहचानना कि ग्राहक सेवा कॉल में प्रतिक्रिया समय बढ़ने से संतोष रेटिंग घटती है।

साझा करना (Share): इस चरण में परिणामों और अंतदृष्टियों को स्पष्ट रूप से संबंधित पक्षों के साथ रिपोर्ट डेशबोर्ड या प्रस्तुति के माध्यम से साझा किया जाता है, अक्सर उन जानकारियों पर जोर देते हुए जो कार्रवाई योग्य हों। **उदाहरण:** प्रबंधन को एक रिपोर्ट प्रस्तुत करना जिसमें ग्राहक सेवा में देरी और शिकायतों के बीच संबंध दिखाया गया हो।

कार्रवाई करना (Act): इस चरण में विश्लेषण से प्राप्त अंतदृष्टियों के आधार पर निर्णय लिए जाते हैं और समस्या को हल करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाते हैं। इसके बाद प्रभावशीलता सुनिश्चित करने और आगे सुधार के लिए निगरानी की जाती है। **उदाहरण:** बेहतर ग्राहक सेवा प्रशिक्षण लागू करना और अगले तिमाहियों में संतोष रेटिंग को ट्रैक करना ताकि प्रभाव का मूल्यांकन किया जा सके।

चित्र 3: डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया

डेटा विश्लेषण के अनुप्रयोग:

*"सूचना 21वीं सदी का तेल है, और डेटा विश्लेषण उसका दहन इंजन है।" – **पीटर साइनडरगार्ड,** गार्टनर।*

- **स्वास्थ्य देखभाल:**

  मरीजों का डेटा विश्लेषण करके स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता सुधारना, अस्पताल संसाधनों का अनुकूलन करना और व्यक्तिगत उपचार के लिए स्वास्थ्य परिणामों की भविष्यवाणी करना। उदाहरण: **मेयो क्लिनिक** (यूएसए) मरीजों के डेटा विश्लेषण का उपयोग करके व्यक्तिगत उपचार योजनाएँ तैयार करता है और उपचार के परिणामों की भविष्यवाणी करता है।

- **वित्त:**

  वित्तीय डेटा का विश्लेषण करके धोखाधड़ी का पता लगाना, जोखिम का आकलन करना और ग्राहकों के लिए व्यक्तिगत वित्तीय सेवाएँ प्रदान करना। उदाहरण: **जेपी मॉर्गन चेस** डेटा विश्लेषण और एआई का उपयोग करके वास्तविक समय में धोखाधड़ी वाले क्रेडिट कार्ड लेन–देन का पता लगाता है।

- **खुदरा:**

  ग्राहकों के व्यवहार और रुझानों का विश्लेषण करके इन्वेंट्री, मूल्य निर्धारण और व्यक्तिगत विपणन को अनुकूलित करना। उदाहरण: **वॉलमार्ट** डेटा विश्लेषण का उपयोग करके उत्पाद की मांग का पूर्वानुमान लगाता है और इन्वेंट्री को अनुकूलित करता है

चित्र 4: वॉलमार्ट का इंटेलिजेंट रिटेल लैब (ILB)

- **विनिर्माण:**

  सेंसर डेटा का विश्लेषण करके मशीन की खराबी की भविष्यवाणी करना, रखरखाव का समय निर्धारित करना और डाउनटाइम कम करना। उदाहरण: **निसान मोटर्स** ने आईओटी (IoT) सेंसर का उपयोग करके असेंबली लाइन की निगरानी और पूर्वानुमानित रखरखाव लागू किया, जिससे अनियोजित डाउनटाइम कम हुआ।

चित्र 5: निसान की IoT आधारित विनिर्माण सुविधा

- **लॉजिस्टिक्स:**

यातायात, मौसम और डिलीवरी डेटा का विश्लेषण करके मार्गों और संचालन को अनुकूलित किया जा सकता है ताकि लागत और देरी कम की जा सके। उदाहरण: **यू.पी.एस.** (UPS) **"ओरियन"** (ORION) रूटिंग सिस्टम का उपयोग करता है, जो डिलीवरी डेटा का विश्लेषण करके मार्गों को अनुकूलित करता है, जिससे ईंधन की बचत होती है और डिलीवरी समय कम होता है।

चित्र 6: यू.पी.एस. ऑन–रोड इंटीग्रेटेड ऑप्टिमाइजेशन एंड नेविगेशन (ORION) प्लेटफ़ॉर्म

- **विपणन:**

ग्राहकों की जनसांख्यिकी (Demographics) और पसंद का विश्लेषण करके अभियान लक्ष्यीकरण और प्रभावशीलता को बेहतर बनाया जा सकता है। उदाहरण: **अमेज़न** ग्राहक ब्राउज़िंग और खरीद डेटा का विश्लेषण करके व्यक्तिगत सिफारिशें देता है, जिससे बिक्री में वृद्धि होती है।

- **ऊर्जा संरक्षण:**

स्मार्ट मीटर से प्राप्त उपयोग पैटर्न का विश्लेषण करके ऊर्जा आपूर्ति और खपत में संतुलन बनाए रखा जाता है। उदाहरण: यूके की **नेशनल ग्रिड** स्मार्ट मीटर डेटा पर डेटा विश्लेषण का उपयोग करके बिजली आपूर्ति को संतुलित करती है और बिजली कटौती की संभावना को कम करती है।

- **मानव संसाधन:**

कर्मचारी डेटा का विश्लेषण करके भर्ती, प्रदर्शन और कर्मचारी प्रतिधारण की रणनीतियों में सुधार किया जा सकता है। उदाहरण: **गूगल "पीपल एनालिटिक्स"** का उपयोग करके उच्च–प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों की विशेषताओं की पहचान करता है, जिससे भर्ती प्रक्रिया और कर्मचारी प्रतिधारण में सुधार होता है।

- **सुशासन:**

सेंसर और कैमरों से प्राप्त वास्तविक समय के डेटा का विश्लेषण करके ट्रैफिक प्रवाह, सार्वजनिक सुरक्षा और सेवाओं का कुशल प्रबंधन किया जा सकता है। उदाहरण: **बार्सिलोना** (स्पेन) सेंसर डेटा का उपयोग करके ट्रैफिक प्रवाह और कचरा प्रबंधन में सुधार करता है।

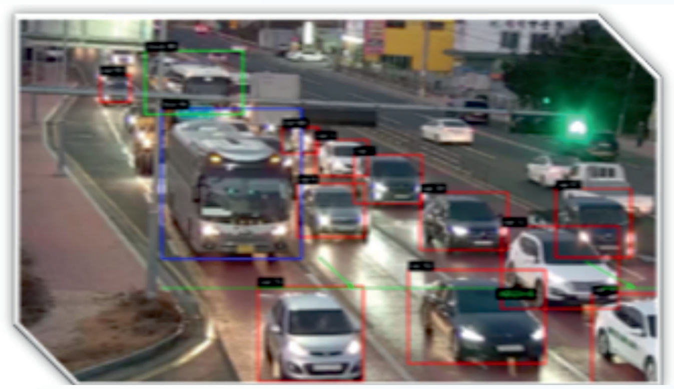

चित्र 7: ट्रैफिक प्रबंधन में एआई और डेटा विश्लेषण का उपयोग

डेटा विश्लेषण की चुनौतियाँ:

- **डेटा सुरक्षा:**

डेटा की सुरक्षा करना और डेटा गोपनीयता नियमों का पालन करना एक जटिल प्रक्रिया है। उदाहरण: फेसबुक को डेटा गोपनीयता संबंधी समस्याओं के कारण जांच और भारी जुर्मानों का सामना करना पड़ा, जिससे उपयोगकर्ताओं का डेटा विश्लेषण पर भरोसा प्रभावित हुआ।

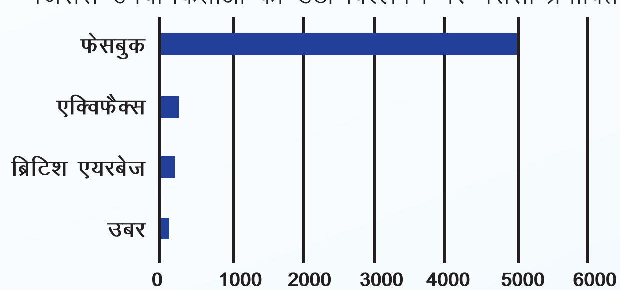

चित्र 6: डेटा गोपनीयता कानून उल्लंघन पर कंपनियों पर लगाए गए जुर्माने (अमेरिकी मिलियन $ में)

- **डेटा साइलो:**

जब डेटा अलग–अलग विभागों में बिखरा होता है, तो एकीकृत

दृष्टिकोण प्राप्त करना कठिन हो जाता है, जिससे निर्णय लेने की गति धीमी हो जाती है। उदाहरणः प्रॉक्टर एंड गैंबल (P&G) को विभिन्न ERP सिस्टम्स से वैश्विक सप्लाई चेन और मार्केटिंग डेटा को संघटित करने में कठिनाई हुई।

- **डेटा गुणवत्ताः**

कमज़ोर, असंगत या अधूरा डेटा गलत अंतर्दृष्टि और महंगी गलतियों का कारण बनता है। उदाहरणः यूके की नेशनल हेल्थ सर्विस (NHS) को COVID–19 के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में असंगत मरीज डेटा के कारण गंभीर परिचालन समस्याओं का सामना करना पड़ा।

- **कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टिः**

सिर्फ डेटा होना पर्याप्त नहीं है; समय पर और कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि निकालना अधिक महत्वपूर्ण है। उदाहरणः नोकिया के पास पर्याप्त मार्केट डेटा होने के बावजूद उसने स्मार्टफोन की ओर हो रहे बदलाव को कम आंका, जिससे उसका मार्केट शेयर गिर गया।

- **डेटा वृद्धिः**

डेटा की विशाल मात्रा, विविधता और गति स्टोरेज, प्रोसेसिंग और एनालिटिक्स इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए चुनौती पेश करती है। उदाहरणः यूट्यूब हर मिनट 500 घंटे से अधिक वीडियो अपलोड को संभालता है और कंटेंट को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए उन्नत AI और क्लाउड समाधानों का उपयोग करता है।

- **डेटा विजुअलाइज़ेशनः**

डैशबोर्ड और रिपोर्ट सहज होने चाहिए। अन्यथा, संबंधित पक्ष महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टियाँ चूक सकते हैं।

उदाहरणः हवाई (Hawaii) मिसाइल अलर्ट (2018)–खराब डिजाइन किए गए इमरजेंसी मैनेजमेंट इंटरफ़ेस के कारण एक झूठा बैलिस्टिक मिसाइल अलर्ट जारी हो गया, जिससे पूरे राज्य में दहशत फैल गई।

- **विविध डेटा स्रोतः**

स्ट्रक्चर्ड, सेमी–स्ट्रक्चर्ड और अनस्ट्रक्चर्ड डेटा को एक साथ जोड़ना तकनीकी रूप से जटिल और संसाधन–सघन होता है। उदाहरणः मेयो क्लिनिक संरचित ईएचआर (EHR), मेडिकल इमेजिंग, जीनोमिक्स और IoT सेंसर डेटा को एकीकृत करके सटीक स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करता है।

- **लागत प्रबंधनः**

डेटा संग्रहण, प्रसंस्करण और विश्लेषण उपकरणों की उच्च लागत, अपनाने की प्रक्रिया को धीमा कर सकती है। उदाहरणः टेस्ला वाहनों से डेटा संसाधित करने के लिए क्लाउड इन्फ्रास्ट्रक्चर पर भारी खर्च करती है।

- **कुशल कर्मचारीः**

कुशल डेटा पेशेवरों की कमी, विश्लेषण पहलों की संभावनाओं को सीमित करती है। उदाहरणः मैकिन्से की रिपोर्ट के अनुसार, अकेले अमेरिका में 1,90,000 से अधिक डेटा वैज्ञानिकों की कमी है, जिससे कंपनियों को विश्लेषण परियोजनाओं में देरी करनी पड़ रही है या उन्हें कम करना पड़ रहा है।

डेटा विश्लेषण का भविष्यः

चित्र 7ः डेटा विश्लेषण का भविष्य

- **इमर्सिव एनालिटिक्सः**

संवर्धित और आभासी वास्तविकता उपयोगकर्ताओं को 3D वातावरण में जटिल डेटा के साथ बातचीत करने में सक्षम बनाएगी, जिससे शहरी नियोजन और स्वास्थ्य सेवा जैसे क्षेत्रों में समझ बढ़ेगी।

- **सिंथेटिक डेटा जनरेशनः**

गोपनीयता संबंधी चिंताओं के कारण, सिंथेटिक डेटा जनरेशन बढ़ेगा, जिससे गोपनीयता अनुपालन को बनाए रखते हुए एआई (AI) और एनालिटिक्स मॉडल का प्रशिक्षण संभव होगा।

- **डेटा लोकतंत्रीकरणः**

यूजर फ्रेंडली स्वयं–सेवा उपकरणों के कारण अधिक उपयोगकर्ता डेटा का विश्लेषण करेंगे, जिससे "नागरिक डेटा वैज्ञानिक" बनेंगे।

- **एज एनालिटिक्सः**

एज पर (डेटा स्रोतों के निकट) रीयल–टाइम डेटा प्रोसेसिंग का महत्व बढ़ेगा, खासकर स्वास्थ्य सेवा और विनिर्माण जैसे समय–संवेदनशील क्षेत्रों के लिए।

- **क्वांटम कंप्यूटिंगः**

क्वांटम कंप्यूटिंग डेटा प्रोसेसिंग की गति और जटिलता में क्रांति लाएगी, और पहले असंभव समस्याओं को हल करेगी।

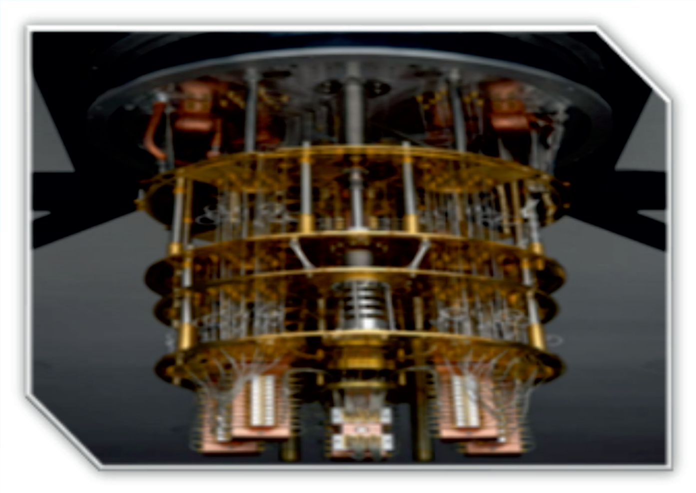

चित्र 8: आईवीएम वाटसनरिसर्च सेटर में क्वांटम कंम्यूटर का एक मॉडल

- **डेटा फैब्रिक:**

  विभिन्न स्रोतों से डेटा को डेटा फैब्रिक आर्किटेक्चर के माध्यम से निर्बाध रूप से एकीकृत किया जाएगा, जिससे डेटा साइलोज़ समाप्त होंगे और समग्र, क्रॉस–फंक्शनल अंतर्दृष्टि प्राप्त होगी।

- **प्रिस्क्रिप्टिव एनालिटिक्स:**

  विश्लेषण केवल डेटा का वर्णन करने से आगे बढ़कर रुझानों की भविष्यवाणी करने और सर्वोत्तम कार्यों को निर्धारित करने की ओर बढ़ेगा, जिससे सक्रिय व्यावसायिक रणनीतियाँ संभव होंगी।

- **एआई–संचालित एनालिटिक्स:**

  एआई और मशीन लर्निंग डेटा विश्लेषण को शुरू से अंत तक स्वचालित करेंगे, जिससे न्यूनतम मानवीय प्रयास के साथ वास्तविक समय में अंतर्दृष्टि प्राप्त होगी।

निष्कर्ष:

''जो कंपनियाँ डेटा को एक रणनीतिक संपत्ति मानती हैं, वे ही जीवित रहेंगी और फलें–फूलेंगी।'' – बर्नार्ड मार्र

फोर्ब्स पत्रिका के अनुसार, 2025 के अंत तक दुनिया 181 ज़ेटाबाइट डेटा उत्पन्न करेगी, फिर भी इसका 2% से भी कम का विश्लेषण किया जाएगा। सूचना के इस महासागर में, वास्तविक प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त डेटा एकत्र करने में नहीं, बल्कि इससे अंतर्दृष्टि निकालने में निहित है।

डेटा विश्लेषण एक आवश्यक विषय है जो कच्चे तथ्यों को कार्रवाई योग्य बुद्धिमत्ता में बदलता है, जो विविध क्षेत्रों में नवाचार को प्रेरित करता है। जैसे–जैसे संगठन संरचित, अर्ध–संरचित और असंरचित डेटा का उपयोग करते हैं, यह प्रक्रिया निर्णय लेने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करती है, रुझानों का पूर्वानुमान करती है और विकास को उत्प्रेरित करती है।

हालांकि सुरक्षा, एकीकरण और कौशल की कमी जैसी चुनौतियाँ बनी रहती हैं, लेकिन एआई (AI), इमर्सिव एनालिटिक्स और क्वांटम कम्प्यूटिंग जैसी उभरती प्रौद्योगिकियाँ इन बाधाओं को दूर करने का भरोसा दिलाती हैं। उन्नत, लोकतांत्रिक और वास्तविक समय विश्लेषण को अपनाने से डेटा विशेषज्ञों और सामान्य उपयोगकर्ताओं दोनों को सशक्त बनाया जाएगा, जिससे एक ऐसा भविष्य बनेगा जहाँ अंतर्दृष्टिपूर्ण निर्णय पहले से कहीं अधिक तेज और प्रभावी होंगे।

प्रबंधक (सीडीटी)
कॉर्पोरेट कार्यालय, नोएडा

धराली का विलाप

मीनाक्षी बटोला

हे उत्तराखण्ड की पावन धरा, तेरे आँचल में था सवेरा।
कल–कल बहती भागीरथी, गाती थी गीत सुनहरा।

पहाड़ों की गोद में बसा, धराली गाँव था स्वर्ग–सा।
देवदारों की महकती छाँव, स्वर्ग समान ये मेरा गाँव।

पर एक रात का क्रूर पहर, ले आया प्रलय का क़हर।
बादल फटा, नभ रो पड़ा, धरती का सीना जो हिल पड़ा।

नदियों का वेग हुआ विकराल, लहरों ने तोड़ा हर जाल।
मकान गिरे, खेत उजड़े, कितने ही जीवन अपनों से बिछड़े ।

गंगा का वेग बना क़हर, लहरों ने ढाया प्रलय स्वर।
पर्वत के आँसू बहते रहे, धराली के सपने ढहते रहे।
सिखाती धराली की आपदा, प्रकृति का महत्व समझो प्यारे।
बचाओं जंगल, नदी और पहाड़, तभी होंगे सुरक्षित हमारे घर–द्वारे।

अपर अभियंता ग्रेड–1 (सिविल प्लानिंग)
हीप, हरिद्वार

ऑफिस में एर्गोनॉमिक्स: स्वास्थ्य और उत्पादकता के लिए आवश्यक कदम

प्रभात कुमार

आज के दौर में कार्यस्थल लगातार बदल रहे हैं। तकनीक के उपयोग ने हमारे काम को आसान और तेज तो बनाया है, लेकिन इसके साथ ही लंबे समय तक कंप्यूटर और डेस्क पर काम करना हमारी दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा बन गया है। इस बदलती जीवनशैली में सबसे ज्यादा महत्व रखने वाला विषय है **एर्गोनॉमिक्स (Ergonomics)**– यानी कार्यस्थल, उपकरण और वातावरण का ऐसा डिजाइन और समायोजन, जो मानव शरीर की प्राकृतिक मुद्रा और क्षमता के अनुकूल हो।

एर्गोनॉमिक्स का उद्देश्य केवल सुविधा प्रदान करना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि कर्मचारी सुरक्षित, स्वस्थ और प्रभावी ढंग से काम कर सकें। जब कार्यस्थल शरीर की ज़रूरतों के अनुरूप होता है, तो कर्मचारी सहज महसूस करते हैं और बेहतर प्रदर्शन कर पाते हैं।

एर्गोनॉमिक्स की अनदेखी के संभावित परिणाम

हालाँकि कई बार काम की व्यस्तता में एर्गोनॉमिक्स पर ध्यान नहीं दिया जाता, लेकिन इसकी अनदेखी से कई तरह की स्वास्थ्य और कार्य संबंधी चुनौतियाँ सामने आ सकती हैं।

1. **मांसपेशी और हड्डी संबंधी कठिनाइयाँ (Musculoskeletal Disorders):** लंबे समय तक गलत मुद्रा में बैठने से पीठ, गर्दन और कंधों में दर्द आम हो जाता है। लगातार टाइपिंग करने या माउस का उपयोग करने से हाथों और कलाई में तनाव बढ़ सकता है। यह स्थिति आगे चलकर कार्यकुशलता को प्रभावित कर सकती है।
2. **आंखों की थकान और असुविधा:** कंप्यूटर स्क्रीन का गलत स्तर, अधिक या कम रोशनी, तथा लगातार स्क्रीन देखने की आदत आंखों की थकान का कारण बनती है। इससे सिरदर्द, धुंधलापन और एकाग्रता की कमी जैसी समस्याएँ हो सकती हैं।
3. **रक्त संचार पर प्रभाव:** लगातार बिना हिले–डुले बैठे रहने से पैरों में रक्त संचार प्रभावित होता है। इससे पैरों में थकान, अकड़न या सूजन हो सकती है। यदि यह आदत लंबे समय तक जारी रहे, तो स्वास्थ्य पर व्यापक असर पड़ सकता है।
4. **मानसिक थकान और ध्यान में कमी:** जब शरीर आरामदायक स्थिति में नहीं होता, तो मन पर भी दबाव पड़ता है। लगातार असुविधा की स्थिति ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को कम कर देती है और कार्य की गति धीमी हो जाती है।

अच्छे एर्गोनॉमिक्स से मिलने वाले लाभ

एर्गोनॉमिक्स को अपनाने से न केवल स्वास्थ्य की रक्षा होती है, बल्कि कार्यस्थल पर एक सकारात्मक वातावरण भी बनता है। इसके कुछ प्रमुख लाभ इस प्रकार हैं:

- **शारीरिक आराम:** सही कुर्सी, डेस्क और उपकरणों के प्रयोग से शरीर पर दबाव कम होता है।
- **बेहतर कार्यक्षमता:** कर्मचारी बिना असुविधा के लंबे समय तक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।
- **स्वास्थ्य संरक्षण:** लंबे समय तक काम करने पर भी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं की संभावना घट जाती है।
- **सकारात्मक कार्य वातावरण:** जब कर्मचारी आरामदायक महसूस करते हैं, तो उनका दृष्टिकोण और व्यवहार भी सकारात्मक होता है।

अपनाए जाने योग्य सरल उपाय

एर्गोनॉमिक्स को जटिल तकनीक की तरह न देखकर इसे कुछ सरल आदतों और उपकरणों से आसानी से अपनाया जा सकता है:

1. **कुर्सी और डेस्क का सही चयन:** कुर्सी समायोज्य (एडजेस्टेबल) होनी चाहिए, ताकि कर्मचारी अपनी ऊँचाई और सुविधा के अनुसार उसे सेट कर सकें। डेस्क की ऊँचाई ऐसी हो कि कोहनी लगभग 90 डिग्री पर हो।
2. **मॉनिटर की स्थिति:** कंप्यूटर स्क्रीन आँखों के स्तर पर और चेहरे से लगभग एक हाथ की दूरी पर होनी चाहिए। इससे गर्दन और आंखों पर अनावश्यक दबाव नहीं पड़ता।
3. **सही मुद्रा बनाए रखना:** सीधे बैठना, पैरों को ज़मीन पर टिकाना और कलाई को सीधा रखकर टाइप करना ज़रूरी है। यह आदत लंबे समय तक स्वास्थ्य की रक्षा करती है।
4. **आंखों की देखभाल 20–20–20 नियम अपनाएँ:** हर 20 मिनट बाद 20 फीट दूर किसी वस्तु को 20 सेकंड तक देखें। इससे आंखों की थकान कम होती है।

5. **नियमित ब्रेक और गतिविधि:** हर घंटे कुछ मिनट के लिए उठकर चलें या हल्की स्ट्रेचिंग करें। यह रक्त संचार को संतुलित करता है और शरीर को सक्रिय रखता है।
6. **एर्गोनॉमिक उपकरणों का उपयोग:** विशेष की–बोर्ड, माउस, हेडसेट और डॉक्यूमेंट होल्डर जैसे उपकरण शरीर पर पड़ने वाले दबाव को कम करते हैं।

"छोटे–छोटे ब्रेक, बड़ी–बड़ी बीमारियों से बचाव"

नियोक्ता और कर्मचारी की साझी ज़िम्मेदारी

एक सुरक्षित और स्वस्थ कार्यस्थल का निर्माण केवल कर्मचारी या संगठन की ज़िम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह दोनों की साझा ज़िम्मेदारी है।

- **नियोक्ता:** कार्यस्थल पर समायोज्य (एडजेस्टेबल) फर्नीचर और उपकरण उपलब्ध कराएँ तथा समय–समय पर कर्मचारियों को सही मुद्रा (posture) और कार्य पद्धति की जानकारी दें।
- **कर्मचारी:** स्वयं भी जागरूक रहकर इन उपायों को अपनाएँ, चिकित्सा विभाग द्वारा जारी किए जा रहे ***एर्गोनॉमिक्स संबंधी लेखों*** को पढ़ें, अपनी जागरूकता बढ़ाएँ तथा स्वयं और दूसरों का ध्यान रखें। एर्गोनॉमिक्स को समझें और सहकर्मियों को भी इसके प्रति जागरूक करें। साथ ही, नियमित रूप से छोटे ब्रेक लें और हल्की शारीरिक गतिविधियाँ करें।

इस साझी ज़िम्मेदारी से न केवल कर्मचारियों के स्वास्थ्य की रक्षा होती है, बल्कि संगठन की समग्र उत्पादकता और कार्य संस्कृति पर भी सकारात्मक असर पड़ता है।

निष्कर्ष

एर्गोनॉमिक्स को केवल आराम का साधन मानना उचित नहीं है। यह कार्यस्थल पर सुरक्षा, स्वास्थ्य और दीर्घकालिक कार्यक्षमता का महत्वपूर्ण आधार है। यदि इसे नज़रअंदाज़ किया जाए तो धीरे–धीरे स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ सामने आ सकती हैं, जो कर्मचारी और कार्य दोनों को प्रभावित करती हैं।

दूसरी ओर, यदि एर्गोनॉमिक्स को अपनाया जाए तो कार्यस्थल अधिक सुरक्षित और सुखद बनता है। कर्मचारी अपनी पूरी क्षमता के साथ काम कर पाते हैं और संगठन की सफलता में योगदान देते हैं।

इसलिए यह कहना उचित होगा कि एर्गोनॉमिक्स में किया गया छोटा–सा निवेश भविष्य में बड़े लाभ देता है। एक स्वस्थ कर्मचारी ही वास्तव में एक सफल संगठन की पहचान होता है।

"एर्गोनॉमिक्स समझो– खुद भी स्वस्थ रहो, दूसरों को भी सिखाओ"

अभियंता (ईएम ब्लॉक 1)
हीप, हरिद्वार

वैश्विक परिवेश-एक नम्र निवेदन

दिनेश चंद्र जोशी

द्वंदों से दुनिया में आफ़त बड़ी है,
युद्ध घोषों से भरी पड़ी है ।।
निजी स्वार्थ और वर्चस्व की है लड़ाई,
लगी 'आग' चहुँ–ओर किसी ने न बुझाई।।
तड़पती–बिलखती, जन–जन की आत्मा है,
ये कैसा अजब खेल परमात्मा है।।
मानव ही मानव के दुश्मन बने हैं,
वही रक्त सभी के तन–तन में है।।
बिलखता, सिसकता जो 'बच्चा' खड़ा है,
रहमो–अमन की वो भीख माँगे,
लिए 'दया' का कटोरा खड़ा है।।
जिसके ना माँ–बाप, बंधु बचा है,
आँखों में अश्रु, अकेला खड़ा है।।

क्या कसूर मेरा, क्योंकर ये सजा दी,
लहू से मासूमों की, ये धरती रंगा दी।।
अब 'ना' कहो इस द्वंद को तुम,
खत्म कर दो इस 'युद्ध' को तुम।।
अमन–चैन की अब नदियां बहा दो,
विश्व प्रेम का एक संदेश दे दो।।
बहा दो प्रेम की रसधार अब तुम,
भाई को भाई से फ़िर से मिला दो,
अमन–चैन की अब दुनियां बसा दो।।

उप अधिकारी
निदेशक (आईएस एण्ड पी सचिवालय)
उद्योग क्षेत्र, नई दिल्ली

उत्पादकता और सुरक्षा: अटूट संबंध

राणा रश्मिरथी

आज की औद्योगिक और तकनीकी दुनिया में हर संगठन का लक्ष्य है – अधिकतम उत्पादकता। कंपनियाँ मशीनों की गति बढ़ाने, तकनीक को आधुनिक बनाने और कर्मचारियों से अतिरिक्त काम लेने की कोशिश करती हैं। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि क्या केवल उत्पादन बढ़ा देना ही विकास का प्रमाण है? यदि सुरक्षा की अनदेखी कर उत्पादन बढ़ाया जाए, तो यह संगठन के लिए "अभिशाप" साबित हो सकता है। एक छोटी–सी चूक से न केवल कार्य बाधित होता है बल्कि मानव जीवन, संसाधन और संगठन की प्रतिष्ठा पर गहरा असर पड़ता है।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) की रिपोर्ट के अनुसार, हर साल दुनिया में लगभग 23 लाख लोग कामकाजी दुर्घटनाओं या व्यावसायिक बीमारियों से जान गंवाते हैं। वहीं भारत में वर्ष 2022 के दौरान खनन, निर्माण और फैक्ट्री क्षेत्रों में 12,000 से अधिक मौतें और लाखों गंभीर चोटें दर्ज हुईं। विश्व बैंक का आंकलन है कि औद्योगिक दुर्घटनाओं से होने वाला आर्थिक नुकसान किसी भी देश की GDP का 3 से 4 प्रतिशत तक हो सकता है। एक हालिया अध्ययन बताता है कि किसी भी कंपनी के कुल उत्पादन लागत का औसतन 5–7% हिस्सा दुर्घटनाओं और उससे जुड़े मुआवज़ों पर खर्च होता है। इन आँकड़ों से साफ है कि सुरक्षा को दरकिनार कर उत्पादन बढ़ाना, अल्पकालिक लाभ और दीर्घकालिक घाटा है।

इतिहास दर्शाता है कि **बड़ी औद्योगिक दुर्घटनाएँ कभी अचानक नहीं होती,** बल्कि यह समय के साथ उपेक्षित की गई छोटी–छोटी गलतियों, सुरक्षा मानकों की अनदेखी और लापरवाही का परिणाम होती हैं। प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं:

1. **भोपाल गैस त्रासदी (1984)**

- सुरक्षा प्रणालियों की उपेक्षा
- समय पर चेतावनी तंत्र का विफल होना
- आपदा प्रबंधन की खराब व्यवस्था

2. **भिलाई स्टील प्लांट विस्फोट (2018)**

- गैस पाइपलाइन में रिसाव
- आपातकालीन प्रबंधन और सुरक्षा व्यवस्था का अभाव
- नियमित निरीक्षण और निगरानी की कमी

3. **LG Polymers गैस लीक, विशाखापट्टनम (2020)**

- पुरानी मशीनरी का उपयोग
- रखरखाव (मेंटेनेंस) की अनदेखी
- सुरक्षा मानकों का पालन न करना

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि दुर्घटनाएँ मानवीय लापरवाही, तकनीकी खामियों और सुरक्षा संस्कृति की कमी के कारण होती हैं। यदि सुरक्षा मानकों का पालन, नियमित निरीक्षण और समय पर सुधार किया जाए तो ऐसी दुर्घटनों को टाला जा सकता है।

"हादसे किस्मत का खेल नहीं, बल्कि लापरवाही का परिणाम हैं।" यदि संगठन ठोस कदम उठाएँ तो अधिकांश दुर्घटनाएँ रोकी जा सकती हैं। बड़ी औद्योगिक दुर्घटनाएँ अचानक नहीं होतीं, बल्कि छोटी–छोटी लापरवाहियों और सुरक्षा मानकों की अनदेखी से धीरे–धीरे जन्म लेती हैं। यदि निम्नलिखित बिंदुओं पर गंभीरता से ध्यान दिया जाए तो दुर्घटनाओं को प्रभावी रूप से टाला जा सकता है–

1. **सुरक्षा संस्कृति (Safety Culture)**

- संगठन में यह सोच विकसित करना आवश्यक है कि "पहले सुरक्षा, फिर उत्पादन"
- हर स्तर पर सुरक्षा को प्राथमिकता देना, चाहे वह प्रबंधन हो, पर्यवेक्षक हो या कर्मचारी।
- कर्मचारियों को यह संदेश स्पष्ट रूप से मिलना चाहिए कि उत्पादन में थोड़ी देरी स्वीकार्य है, लेकिन सुरक्षा से समझौता अस्वीकार्य है।

2. **नियमित प्रशिक्षण और मॉक ड्रील (Mock Drill)**

- सभी कर्मचारियों को मानक संचालन प्रक्रिया (Standard Operating Procedures - SOPs) की गहन समझ होना आवश्यक है।
- समय–समय पर सुरक्षा प्रशिक्षण, वर्कशॉप और मॉक ड्रील आयोजित करना चाहिए।
- आपातकालीन स्थितियों जैसे आग, गैस लीक या मशीनरी की खराबी से निपटने का पूर्व अभ्यास दुर्घटना की गंभीरता को काफी हद तक कम कर देता है।

3. **मशीनों की समय–समय पर देखभाल (Preventive Maintenance)**

- मशीनों और उपकरणों का नियमित निरीक्षण और रखरखाव अनिवार्य हो।
- निवारक रखरखाव (Preventive Maintenance) के साथ–साथ आपातकालीन रोक प्रणाली (Emergency Stop Systems) की उपलब्धता और उनकी नियमित जाँच की जाए।
- "चल रहा है तो ठीक है" वाली मानसिकता से बचना होगा, क्योंकि यही मानसिकता बड़ी दुर्घटनाओं का कारण बनती है।

4. **व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (PPE) का उपयोग**

- हेलमेट, गॉगल्स, ग्लव्स, सेफ्टी शूज़, ईयर प्लग्स आदि का

प्रयोग हर कर्मचारी के लिए अनिवार्य हो।

- PPE का उपयोग केवल नियम भर नहीं, बल्कि एक कार्य संस्कृति के रूप में लागू किया जाना चाहिए।
- प्रबंधन को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि PPE उच्च गुणवत्ता के हों और समय–समय पर बदले जाएँ।

5. आधुनिक तकनीकी उपाय

- गैस लीक डिटेक्टर (Gas Leak Detector), फायर अलार्म (Fire Alarm), और रियल–टाइम मॉनिटरिंग सिस्टम का उपयोग।
- स्वचालन (Automation) के माध्यम से मानव–निर्भर जोखिम को कम करना।
- नवीनतम सुरक्षा तकनीकों को अपनाकर संगठन की सुरक्षा स्तर को वैश्विक मानकों तक पहुँचाना।

6. प्रबंधन की सक्रिय भूमिका

- नियमित सेफ्टी ऑडिट (Safety Audit) से खामियों की पहचान और सुधार।
- दुर्घटना के बाद केवल उपचारात्मक कार्रवाई न करके, रूट कॉज एनालिसिस (Root Cause Analysis) द्वारा मूल कारणों को दूर करना।
- हर कार्य/टास्क के लिए जॉब सेफ्टी एनालिसिस (Job Safety Analysis) अनिवार्य करना।
- वरिष्ठ प्रबंधन को केवल नीतियाँ बनाने तक सीमित न रहकर, ग्राउंड लेवल पर भी सक्रिय सहभागिता दिखानी चाहिए।

7. जीरो टॉलरेंस पॉलिसी

- सुरक्षा मानकों के उल्लंघन पर बिना किसी ढिलाई के कठोर कार्रवाई।
- हर कर्मचारी को स्पष्ट संदेश मिले कि "सुरक्षा नियम वैकल्पिक नहीं, बल्कि अनिवार्य हैं।"
- इस नीति से संगठन में एक अनुशासित और सुरक्षा–प्रधान कार्य संस्कृति स्थापित होती है।

यदि उपरोक्त बिंदुओं पर ईमानदारी और दृढ़ता से अमल किया जाए तो न केवल दुर्घटनाओं की संभावना घटेगी, बल्कि कार्यस्थल सुरक्षित, उत्पादक और विश्वसनीय बनेगा।

यकीनन सुरक्षा में निवेश लाभ का सौदा है। कंपनियों का अनुभव साफ बताता है कि सुरक्षा पर खर्च, खर्च नहीं बल्कि दूरदर्शी निवेश है।

- सुरक्षित कार्यस्थल कर्मचारियों के मनोबल, विश्वास और निष्ठा को मजबूत करता है।
- दुर्घटनाओं से होने वाला बीमा और मुआवजे का बोझ घटता है।
- उत्पादन की निरंतरता बनी रहती है, जिससे ग्राहकों का विश्वास अडिग रहता है।
- सुरक्षा के चलते ब्रांड की साख बढ़ती है और निवेशकों का भरोसा और गहरा होता है।

वास्तव में, सुरक्षा और उत्पादकता जीवन–रथ के ऐसे दो पहिये हैं, जिनमें से किसी एक की उपेक्षा, पूरे रथ को असंतुलित कर देती है और लक्ष्य तक पहुँचने की गति को रोक देती है।

"सुरक्षा है आधार, उत्पादकता है उन्नति का द्वार"

वरि. प्रबंधक (वाणिज्य)
एफएसआईपी, जगदीशपुर

देश की शीघ्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी का प्रयोग आवश्यक है।

– राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

कार्य-जीवन संतुलनः एक आधुनिक आवश्यकता

युवराज मोहन

आज की तेज–तर्रार दुनिया में, जहाँ हर तरफ़ प्रतिस्पर्धा है और सफलता को अक्सर कार्य के घंटों से मापा जाता है, वहाँ कार्य–जीवन संतुलन बनाए रखना एक बहुत बड़ी चुनौती बन गया है। यह इसलिए भी आवश्यक है कि दोनों क्षेत्र एक–दूसरे को नकारात्मक रूप से प्रभावित किए बिना, सकारात्मक रूप से एक–दूसरे का समर्थन करें।

आधुनिक जीवनशैली ने हमें कई सुविधाएँ दी हैं, लेकिन इसके साथ ही इसने कार्य के दबाव और तनाव को भी कई गुना बढ़ा दिया है। अब हम ऑफ़िस के बाद भी ईमेल और फोन कॉल्स के ज़रिए कार्य से जुड़े रहते हैं। यह लगातार कनेक्टिविटी हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर भारी पड़ रही है। इस तरह के माहौल में लोग अक्सर थकान, तनाव और चिंता जैसी गंभीर समस्याओं का शिकार हो जाते हैं। जब कार्य हमारी पूरी ज़िंदगी पर हावी हो जाता है, तो परिवार, दोस्त, और व्यक्तिगत रुचियाँ पीछे छूट जाती हैं, जिससे हमारे रिश्ते कमजोर होने लगते हैं और जीवन से खुशी गायब हो जाती है।

एक स्वस्थ और संतुलित जीवन केवल हमारे व्यक्तिगत विकास के लिए ही नहीं, बल्कि हमारे पेशेवर जीवन की सफलता के लिए भी बहुत जरूरी है। जब हम मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ होते हैं, तो हम अपने कार्य पर अधिक ध्यान केंद्रित कर पाते हैं और हमारी उत्पादकता और रचनात्मकता में भी वृद्धि होती है।

एक अच्छे कार्य–जीवन संतुलन के अनेक लाभ होते हैं जैसे–

1. कम स्वास्थ्य समस्याएं–

जब हम तनावग्रस्त होते हैं और अत्यधिक कार्य करते हैं, तो हम न केवल अपने सामाजिक जीवन को खतरे में डालने का जोखिम उठाते हैं बल्कि हमारा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी खतरे में पड़ जाता है। एक अच्छे कार्य–जीवन संतुलन के द्वारा हम स्वस्थ रहते हुए अपनी उत्पादकता को बढ़ा सकते हैं।

2. कम 'बर्नआउट्स'–

हम सभी समय–समय पर तनावग्रस्त हो जाते हैं। यह अपरिहार्य है। बर्नआउट तब होता है जब हम अभिभूत महसूस करते हैं और निरंतर मांगों को पूरा करने में असमर्थ होते हैं। बर्नआउट के नकारात्मक प्रभाव हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर सकते हैं।

कार्य को व्यक्तिगत जीवन से अलग करने में असमर्थता से बर्नआउट की संभावना काफी बढ़ जाती है, इसलिए एक अच्छे कार्य–जीवन संतुलन के माध्यम से इससे बचने की कोशिश करनी चाहिए।

3. अधिक सचेतनता (माइंडफुलनेस)–

जब हम एक स्वस्थ कार्य–जीवन संतुलन बना पाते हैं और उसे बनाए रखते हैं, तो हम अपने फोकस पर अधिक नियंत्रण विकसित करते हैं और कार्य पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता विकसित करते हैं – इसे "माइंडफुलनेस" के रूप में जाना जाता है।

अतः कार्यस्थल पर लोगों को स्वस्थ कार्य–जीवन संतुलन के लिए प्रोत्साहित करके एक ऐसा वातावरण बनाया जाना चाहिए जहां हर कोई अपने कार्य के प्रति समर्पित हो।

कार्य–जीवन संतुलन प्राप्त करना कोई रातों–रात होने वाली प्रक्रिया नहीं है। इसके लिए सचेत प्रयास और योजना की आवश्यकता होती है। हम अपने दैनिक जीवन में कुछ खास बातों का ध्यान रख एवं कार्य करने के तरीकों में बदलाव लाकर एक स्वस्थ कार्य–जीवन संतुलन को अपना सकते हैं और अधिक खुशहाल, तनाव–रहित एवं उत्पादक जीवन जी सकते हैं–

1. शैड्यूल का कड़ाई से पालन करें–

चाहे हम घर से कार्य करें या कार्यालय से, अपने समय का पालन ज़रूर करें और उस दौरान कोई भी अनावश्यक कार्य करने से बचें। शैड्यूल का पालन न करने से जीवन अस्त–व्यस्त होने लगता है, परिणामस्वरूप व्यक्तिगत और ऑफिस के कार्य उलझ जाते हैं और तनाव बढ़ने लगता है।

2. सहकर्मियों से अच्छे रिश्ते बनाएं–

वर्कप्लेस पर खुश रहें, इसके लिए अपने सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बनाने चाहिए। उनकी मदद करें, कार्य में उनसे मदद लें, हंसी–मजाक करें और एक–दूसरे को आगे बढ़ने में मदद करें। ऐसा करने से हमारे सहकर्मियों से रिश्ते बेहतर बनेंगे और ऑफिस में अच्छा महसूस होगा।

3. हर कार्य में परफेक्शन नहीं मिल सकती–

इस बात को समझना जरूरी है कि हर कार्य में परफेक्शन मिलना नामुमकिन है। इसलिए कार्य को लेकर एक हेल्दी एटिट्यूड रखें। इससे मानसिक रूप से कम थकान होगी और कार्य करने में मजा आएगा। इसलिए जरूरी है कि हर कार्य में परफेक्शन खोजने की कोशिश न करें और अपने कार्य को एन्जॉय करें।

4. कार्य के घंटों के दौरान उचित ब्रेक लें–

विशेषज्ञ सुझाव देते हैं कि कार्य के दौरान ब्रेक ज़रूर लें ताकि हम अपनी एकाग्रता के स्तर को बढ़ा सकें और अपने दिमाग और शरीर को आराम करने का मौका दे सकें। यह छोटे ब्रेक स्फूर्ति से भर देते हैं और नतीजतन, उत्पादकता और दक्षता के स्तर में वृद्धि का अनुभव होगा।

5. 'ना' कहने की भी आदत डालें–

कभी–कभी "ना" कहना भी आना चाहिए, ऐसा न कर पाने पर होता यह है कि आप पर अतिरिक्त कार्य का बोझ डाल दिया जाता है जो आपको मानसिक थकान देता है और उस कार्य की गुणवत्ता भी ख़राब हो सकती

है। ''ना'' नहीं कहना हताशा का कारण बन सकता है और व्यक्तिगत के साथ–साथ पेशेवर संबंधों में भी बाधा उत्पन्न कर सकता है।

6. वीकेंड पर लोगों से मिलें–जुलें–

अक्सर हम कार्य करते हुए उसी चहारदीवारी में क़ैद हो जाते हैं, और बाहर निकलना मुमकिन नहीं हो पाता। इसका असर कार्य पर भी पड़ सकता है, इससे हमेशा थका हुआ महसूस कर सकते हैं, रिश्तों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, और हमारे लिए किसी से संवाद करना या जुड़ना मुश्किल हो सकता है। अतः वीकेंड पर अपने परिवार एवं दोस्तों के साथ वक्त बिताएँ। परिवार और दोस्तों के साथ बिताया गया गुणवत्तापूर्ण समय हमें भावनात्मक रूप से मजबूत बनाता है। एक शाम की सैर, एक कप चाय पर बातचीत, या साथ में एक फिल्म देखना– ये छोटी–छोटी चीजें हमारे जीवन को खुशी और अर्थ से भर देती हैं।

7. अपने ख्वाबों को भी पूरा करें–

यदि हम अपने ऑफिस के कार्यों को करते हुए अपने कुछ ख्वाबों को भी पूरा करने के लिए वक्त निकालते हैं तो यह जीवन में संतुलन प्रदान करता है, अन्यथा एक समय के बाद कार्य उबाऊ लगने लग सकता है। इसलिए अपने पैशन को फॉलो करना बहुत ज़रूरी है।

पेंटिंग, लेखन, कसरत करना, पढ़ना, कुकिंग, इस तरह के शौक से जुड़े होने पर जब हम उसे पूरा करते हैं तो हम मानसिक रूप से संतुष्ट भी होते रहते हैं और दिमाग़ ताज़ा भी बना रहता है। यह कार्य और जीवन को ठीक प्रकार से बैलेंस करने में भी मदद करता है।

8. बदलाव को अपनाएं–

ऐसा जरूरी नहीं कि ऑफिस में कोई बदलाव नहीं होंगे। इसलिए कार्य को लेकर फ्लेक्सिबल रहना जरूरी है। नए आइडियाज के लिए या कार्य करने के नए तरीकों को अपनाने में झिझकना नहीं चाहिए। ऐसा करने से हम कम एंग्जायटी महसूस करेंगे और ऑफिस में अच्छा महसूस होगा।

9. मदद मांगने में हिचकें नहीं–

यदि किसी भी समय यह लगता है कि तनाव का स्तर बहुत अधिक है तो तुरंत किसी मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ से बात करनी चाहिए। कभी–कभी हमें अपनी सच्ची भावनाओं और डर को अपने दोस्तों और परिवार के सामने व्यक्त करने में कठिनाई होती है, और यह हमें तब तक पीड़ा देता है जब तक कि हम अंत में टूट नहीं जाते। अपने तनाव को इस हद तक न बढ़ने दें।

कार्य–जीवन संतुलन केवल व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह नियोक्ताओं और समाज की भी जिम्मेदारी है। कंपनियों को अपने कर्मचारियों के लिए लचीले काम के घंटे, घर से काम करने की सुविधा और अवकाश नीतियों को बढ़ावा देना चाहिए। एक स्वस्थ और खुश कर्मचारी अधिक उत्पादक होता है, जिससे व्यवसाय में भी उन्नति होती है।

अंततः, हमें यह स्वीकारना होगा कि हमें अपने जीवन का अधिकांश समय कार्य स्थल पर ही व्यतीत करना होता है, इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि हम कार्य–जीवन में संतुलन बनाते हुए अपनी ज़िंदगी को अधिक उत्पादक, तनाव–रहित एवं खुशहाल बनाएँ। कार्य –जीवन संतुलन सिर्फ एक व्यक्तिगत लाभ नहीं है, बल्कि यह एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए भी आवश्यक है। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि जीवन सिर्फ कार्य करने के लिए नहीं है, बल्कि इसका आनंद लेने, रिश्तों को संजोने और खुद को जानने के लिए भी है। विभिन्न परिस्थितियों से सामंजस्य बिठाते हुए ही जीवन को संपूर्णता में जिया जा सकता है। ।

उप–प्रबन्धक
पीईएम, नोएडा

विख्यात भेल का नाम करें

मिलकर ऐसे हम काम करें।
विख्यात श्भेलश का नाम करें।
हमें निभाकर जिम्मेवारी।
उत्पादन करना है भारी।
खोट बिना हो जॉब हमारा,
गुणवत्ता हरदम हो प्यारी।
उत्पादन हम अविराम करें।
रीति–नीति की करके कक्षा।
कार्य सदा करना है अच्छा।
दुर्घटना को दूर भगाकर,
जान–माल की करें सुरक्षा।
रक्षित अपना यह धाम करें।

नवल किशोर सिंह

सेहत से हरदम हो यारी।
दूर सदा रखनी बीमारी।
तन चंगा तो मन चंगा भी,
चलो देख आएँ फुलवारी।
सहज योग प्राणायाम करें।
लाभ–वृद्धि की लेकर मंशा।
ग्राहक सेवा की अनुशंसा।
मिल–जुलकर पाने हैं हमको,
भले काम से सतत प्रशंसा।
पाकर मंजिल आराम करें।

अभियंता (गुणवत्ता नियंत्रण)
एचपीबीपी, तिरुच्चि

भ्रष्टाचार मुक्त भारत- विकसित भारत

विजय कुमार अग्रहरि

"भ्रष्टाचार एक अपराध है; आइए इसे नष्ट कर दें इससे पहले कि यह हमें नष्ट कर दे"

भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है–भ्रष्ट आचरण, भ्रष्ट आचरण ऐसा आचरण है जो किसी भी दृष्टि में अनैतिक और अनुचित हो। जब कोई व्यक्ति न्याय व्यवस्था के मान्य नियमों के विरुद्ध जाकर अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए गलत आचरण करने लगता है, तो वह व्यक्ति भ्रष्टाचारी कहलाता है।

किसी को निर्णय लेने का अधिकार मिलता है तो वह एक या दूसरे पक्ष में निर्णय ले सकता है। यह उसका विवेकाधिकार है और एक सफल लोकतन्त्र का लक्षण भी है। परंतु जब यह विवेकाधिकार वस्तुपरक न होकर दूसरे कारणों के आधार पर इस्तेमाल किया जाता है तब यह भ्रष्टाचार की श्रेणी में आ जाता है अथवा इसे करने वाला व्यक्ति भ्रष्ट कहलाता है। किसी निर्णय को जब कोई शासकीय अधिकारी धन अथवा अन्य किसी लालच के कारण करता है तो वह भ्रष्टाचार कहलाता है। भ्रष्टाचार के संबंध में हाल ही के वर्षों में जागरुकता बहुत बढ़ी है। जिसके कारण भ्रष्टाचार विरोधी अधिनियम –1988, सिटीजन चार्टर, सूचना का अधिकार अधिनियम –2005, कमीशन ऑफ इन्क्वायरी एक्ट आदि बनाए गये हैं।

अंग्रेजों ने भारत के राजा महाराजाओं को भ्रष्ट करके, भारत को गुलाम बनाया। उसके बाद उन्होंने योजनाबद्ध तरीके से भारत में भ्रष्टाचार को बढावा दिया और भ्रष्टाचार को गुलाम बनाये रखने के प्रभावी हथियार की तरह इस्तेमाल किया। देश में भ्रष्टाचार भले ही वर्तमान में सबसे बड़ा मुद्दा बना हुआ है, लेकिन भ्रष्टाचार ब्रिटिश शासनकाल में ही होने लगा था जिसे वे हमारे राजनेताओं को विरासत में देकर गये थे।

भ्रष्टाचार भारत में चर्चा और आंदोलन का एक प्रमुख विषय रहा है। आजादी के एक दशक बाद से ही भारत को भ्रष्टाचार के दलदल में डूबा हुआ देखा गया। 21 दिसंबर 1963 को भारतीय संसद में भ्रष्टाचार के अंत पर बहस में राम मनोहर लोहिया का भाषण आज भी प्रासंगिक है। **डॉ. लोहिया ने कहा था** कि "सिंहासन और व्यापार के बीच संबंध भारत में जितना दूषित, भ्रष्ट और बेईमान हो गया है उतना दुनिया के इतिहास में कहीं नहीं हुआ है।"

सरकार को भ्रष्टाचार मुक्त भारत के कार्य को एक जिम्मेदारी के रूप में लेना चाहिए क्योंकि हमारा देश प्रगति नहीं कर सकता यदि यह समस्या बनी रहती है। भ्रष्टाचार की ओर ले जाने वाले सभी रास्तों को जड़ से हटाना होगा। अगर सरकार भ्रष्ट है, तो देश के लोगों की ऊर्जा भटक जाती है। देश की पूंजी का रिसाव हो जाता है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा तैयार की गई भ्रष्टाचार रैंकिंग में अमेरिका 28वें, चीन 76वें और भारत 96वें स्थान पर है।

2005 में भारत में ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल संस्था द्वारा किये गये एक अध्ययन में पाया गया कि 62% से अधिक भारतवासियों को सरकारी कार्यालयों में अपना काम करवाने के लिये रिश्वत या ऊँचे दर्ज़े के प्रभाव का प्रयोग करना पड़ता है।

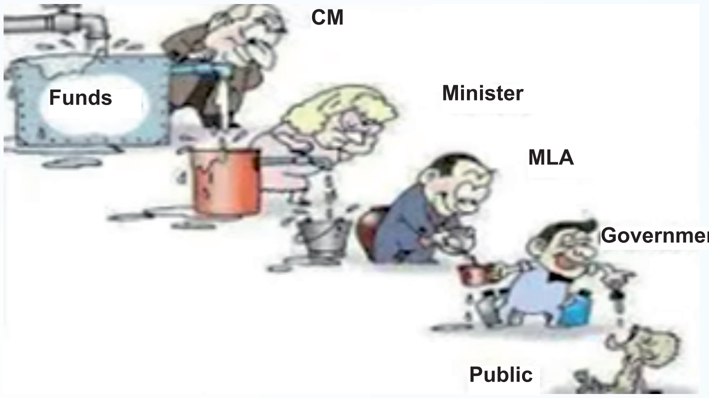

भारत में भ्रष्टाचार के कारण–

क) नौकरी के अवसरों की कमी
ख) सख्त सजा का अभाव
ग) शिक्षा की कमी
घ) लालच और बढ़ती प्रतियोगिता
ङ) पहल की कमी

विविध भ्रष्टाचार

क) समय–समय पर समाचारों में आता है कि राज्य सभा की सदस्यता एक करोड़ में खरीदी जा सकती है।
ख) मंत्रियों, सांसदों, विधायकों की सम्पत्ति एक–दो वर्ष में ही तीन–चार गुनी हो जाती है।
ग) समय–समय पर विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं में लाखों रुपए लेकर परीक्षा में नकल कराकर मेरिट सूची में लाने के समाचार आते हैं।
घ) संसद में प्रश्न पूछने के लिए पैसे लेना।
ङ) पैसे लेकर विश्वास–मत का समर्थन करना।
च) राज्यपालों, मंत्रियों आदि द्वारा विवेकाधिकार का दुरुपयोग।
छ) चिकित्सकों का भ्रष्टाचारः आनावश्यक जाँच लिखना, जेनेरिक दवायें न लिखना, भ्रूण की जाँच करना और लिंग परीक्षण करना।
ज) वकीलों द्वारा भ्रष्टाचारः, फर्जी डिग्री या बिना डिग्री के प्रैक्टिस करना, अपने विरोधी को रहस्य बता देना, तारीख पर तारीख डालना, मुकदमे को कमाई का साधन बना देना।
झ) अवैध गृहनिर्माण (हाउसिंग)।
ञ) बूथ कब्जा करना।
ट) चार्टर्ड अकाउंटेंटों द्वारा भ्रष्टाचार – किसी व्यापार या कम्पनी के वित्तीय कथनों पर निर्भीक राय न देना, वित्तीय गड़बडियों को छिपाना।

भ्रष्टाचार मुक्त भारत के लिए कुछ सुझाव–

क) बड़े नोटों (2000, 500 आदि) का संचालन बंद कर देना चाहिए।

ख) जनता के प्रमुख कार्यों को पूरा करने और शिकायतों पर कार्रवाई करने के लिए समय सीमा तय की जाए। लोक सेवकों द्वारा इसे पूरा न करने पर दण्ड का प्रावधान किया जाय।

ग) वर्तमान पर आधारित विशेषाधिकार और विवेकाधिकार को कम या हटाया जा सके।

घ) सभी 'लोक सेवक' (मंत्रियों, सांसदों, विधायकों, नौकरशाहों, अधिकारियों, कर्मचारियों) को हर साल अपनी संपत्ति की घोषणा करनी चाहिए।

ङ) भ्रष्टाचार करने वालों को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए। भ्रष्टाचार की आय (सरकार द्वारा जब्ती) को जब्त करने का प्रावधान होना चाहिए।

च) चुनाव सुधार किया जाना चाहिए और भ्रष्ट और आपराधिक तत्वों को चुनाव लड़ने से प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।

छ) विदेशी बैंकों में जमा भारतीयों का काला धन भारत लाया जाए और इससे जनहित का काम किया जाए।

वर्तमान में भ्रष्टाचार के विरुद्ध उठाए गए महत्वपूर्ण कदम–

क) हजारों एनजीओ संस्थाओं एवं शेल–कम्पनियों को बन्द किया गया।

ख) यूरिया की नीम–लेपन करना।

ग) डिजिटलीकरण को बढ़ावा तथा अनेक सरकारी सेवाओं को ऑनलाइन कर दिया गया।

घ) गैस तथा अन्य सब्सिडी को सीधे लाभार्थियों के खातों में पहुंचाया जा रहा है।

ङ) सैकड़ों बड़े भ्रष्ट अधिकारियों को नौकरी से निकालना।

राजनीतिक दलों का मूल उद्देश्य सत्ता पर काबिज रहना है। उन्होंने ऐसा हथकंडा निकाला है कि गरीबों को राहत देने के नाम पर अपने समर्थकों का समूह बना लेते हैं। कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए एक विशाल नौकरशाही स्थापित की जा रही है। सरकारी स्कूलों और अस्पतालों की दुर्दशा जगजाहिर है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली में 40 प्रतिशत माल खर्च हो रहा है। इस समस्या का एकमात्र समाधान यह है कि हमारे सभी नेता तथा उच्च पदाधिकारी अपने पदों का सदुपयोग जनता के कल्याण में करें। अन्यथा व दिन दूर नही जब हमारी एकता, अखंडता, राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता समाप्त हो जाएगी। हमें इसका खुलकर विरोध करना चाहिए ताकि हमारा देश उन्नतिशील और विकसित बन सके।

वरि. अभियंता,
पीएसबीजी–1, नोएडा

इंसान ढूंढ़ रहा भगवान

मणिभ प्रकाश

तेरे अंतस में ही छुपा है,
तुझे तनिक भी न है भान,
सूक्ष्म रूप में उसे देखा है,
इंसान फिर भी ढूंढ़ रहा भगवान।

देता है तुझे प्रतिदिन स्वर,
करता तेरा मस्तिष्क प्रखर,
तथास्तु कर रहा वह कितना वर,
इंसान फिर भी ढूंढ़ रहा भगवान।

कितना विचारों का है अवसान,
अपने आप को भी दे न रहा तू मान,
''शिवोऽहम्'' की जाप ने भी न दिया ज्ञान,
इंसान फिर भी ढूंढ़ रहा भगवान।

साध अपने आप को,
पहले पा ले अपने आप को,
महसूस करो तब वृहत अस्तित्व को,
कब उसने छोड़ा है, जो इंसान ढूंढ़ रहा भगवान।

सर्वज्ञ है वह सम्भावन,
सब को है वह अति मनभावन,
रूह उनमें मिल, हो जाये अति पावन,
इंसान फिर भी ढूंढ़ रहा भगवान।

गज को जैसे न अपने स्वरुप का ज्ञान,
चक्षु–बुद्धि और पंख खोल बना सामर्थ्य महान,
कैसे? प्रकृत रूप से सीख, भरसक ले हर संज्ञान,
अद्भुत अपने से बाहर! इंसान फिर भी ढूंढ़ रहा भगवान।

स्वतः प्रणाली उसने विकसित किया है,
वृक्ष और प्रकृति ने वैसा अनुसरण किया है,
बन आत्मनिर्भर, कर कल्याण, हलाहल जैसे उसने पिया है,
न खोज कही और उसे, हमेशा वह तेरे ही भीतर जिया है।

तेरे अंतस में ही छुपा है,
तुझे तनिक भी न है भान,
सूक्ष्म रूप में उसे देखा है,
इंसान फिर भी ढूंढ़ रहा भगवान।

अपर महाप्रबंधक
(सिविल, स्ट्रक्चरल एवं चिमनी)
पीएसईआर– सागरदिघी परियोजना

शिक्षा का बदलता परिदृश्य

साहिल जैन

परिचय

शिक्षा का क्षेत्र लगातार विकसित हो रहा है और प्रौद्योगिकी ओर समाज में तेजी से हो रहे बदलाओं को अपना रहा है। पिछले एक दशक में हमने छात्रों के सीखने के तरीके और उन्हें पढाने के तरीकों में नाटकीय परिवर्तन देखा है। यहां कुछ प्रमुख कारक हैं जिन्होंने आज शैक्षणिक परिदृश्य, उनके लाभ तथा संभवित भविष्य की समस्या को बदल दिया है।

शिक्षा को बदलने वाले कारकः

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

शिक्षा सहित कई उद्योगों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग तेजी से प्रचलित हो रहा है। एआई संचालित उपकरण शिक्षकों के पढाने और छात्रों के सीखने के तरीके को बदल रहे हैं। व्यक्तिगत सीखने के अनुभव से लेकर स्वचालित ग्रेडिंग तक, एआई छात्रों को अधिक कुशल और प्रभावी तरीके से ज्ञान और कौशल हासिल करने के नए अवसर प्रदान कर रहा है।

ऑनलाइन शिक्षा

हाल के वर्षों में शिक्षा परिदृश्य मे ऑनलाइन शिक्षा का उदय सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन में से एक रहा है। विद्यार्थी अब घर बैठे ही अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म, डिजिटल पाठ्य पुस्तकों और शैक्षिक एप्स के उदय ने शिक्षा को अधिक सुलभ और सुविधाजनक बना दिया है।

वैश्वीकरण

दुनिया अधिक परस्पर जुड़ रही है और इसका प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ रहा है। इंटरनेट और ऑनलाइन पाठ्यक्रम के उदय के साथ छात्र अब अन्य संस्कृतियों और देशों के बारे में अधिक आसानी से सीखते हैं। इससे वैश्विक पाठ्यचर्या मानकों का उदय हुआ है और वैश्विक स्तर पर विचारों का आदान–प्रदान हुआ है।

नए उद्योगों का उदय

ऑटोमेशन के उदय के साथ, कई पारंपरिक नौकरियों को मशीनों द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है और कृत्रिम बुद्धिमता, डाटा विज्ञान और साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में नई नौकरियां उभर रही हैं। नौकरी के बाजार में बदलाव शिक्षा परिदृश्य में महत्वपूर्ण बदलाव ला रहे हैं।

सकारात्मक पक्षः

- ऑनलाइन शिक्षण और ए–आई संचलित शिक्षा प्रणालियों के साथ, शिक्षा दुनिया के सभी लोगों के लिए अधिक सुलभ हो जाएगी। यह विकसित और विकासशील देशों के बीच शिक्षा के अंतर को कम करने में मदद करेगा और अधिक लोगों को शिक्षा प्राप्त करने और आधुनिक दुनिया में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल हासिल करने में सक्षम करेगा।
- ए–आई और ऑनलाइन शिक्षण उपकरणों के कारण भविष्य में शिक्षा छात्रों के लिए अधिक व्यक्तिगत हो जाएगी। यह छात्रों को व्यक्तिगत सीखने के अनुभव प्रदान करेगा जो उनकी व्यक्तिगत जरूरतों, सीखने की शैली और वरीयताओं के अनुरूप है। यह शिक्षा को अधिक प्रभावी और कुशल बनाएगा।
- वैश्वीकरण और ऑनलाइन सीखने के कारण दुनिया के विभिन्न हिस्सों के लोग एक दूसरे से जुड़ने में सक्षम है और छात्रों के बीच विभिन्न समाजों और उनकी संस्कृतियों के बारे में जागरूकता बढ़ेगी । यह अधिक विविध और वैश्विक कार्यबल तैयार करेगा।
- यह संभावना है कि भविष्य में शिक्षा अधिक कौशल आधारित हो जाएगी क्योंकि नौकरी बाजार उन उद्योगों की ओर बढ़ रहा है जिनके लिए विशेष कौशल की आवश्यकता होती है। सूचना को याद रखने और मानकीकृत परीक्षण देने का पारंपरिक दृष्टिकोण अब नौकरी के बाजार में सफलता के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता है क्योंकि प्रौद्योगिकी नियमित कार्यों को कर लेती है इसलिए कंपनियां ऐसे कर्मचारियों की तलाश करेंगे जो रचनात्मक रूप से सोच सके और जटिल समस्याओं को हल कर सकें। इससे शिक्षा प्रणाली अपनी छात्रों में महत्वपूर्ण सोच समस्या को सुलझाने और रचनात्मकता के साथ–साथ नई भर्ती नौकरियों के लिए आवश्यक तकनीकी कौशल विकसित करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करेगी।

नकारात्मक पक्षः

- शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी पर अधिक निर्भरता का भी छात्रों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है जैसे सामाजिक मेलजोल कम होना और स्क्रीन टाइम बढ़ना।
- शिक्षा में असमानता बढ़ सकती है क्योंकि हर छात्र ऑनलाइन सीखने के लिए आवश्यक स्मार्टफोन और अन्य तकनीक नहीं खरीद सकता है ।
- वैश्वीकरण और ऑनलाइन सीखने से क्रॉस सांस्कृतिक समझ में वृद्धि होगी हांलाकि यह सांस्कृतिक संघर्ष और स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों और मानदंडों की समझ की कमी को भी जन्म दे सकता है।
- नौकरी के बाजार में तकनीकी परिवर्तन की तीव्र गति शिक्षा प्रणाली को व्यापक शैक्षिक लक्ष्यों की कीमत पर नौकरी की तैयारी पर अपना ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर कर सकती है ।

निष्कर्षः

जैसे–जैसे हम भविष्य की ओर बढ़ते हैं शिक्षा के परिदृश्य को बदलने

वाले कारक हमारे पढ़ाने और सीखने के तरीके को आकार देते रहेंगे। जबकि एआई, ऑनलाइन शिक्षण, वैश्वीकरण और नए उद्योगों की बढ़ती भूमिका के लिए निश्चित रूप से कई लाभ हैं। ऐसे संभावित नुकसान भी हैं जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है। इन परिवर्तनों से सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को स्वीकार करके हम एक अधिक समान और प्रभावी शिक्षा प्रणाली बनाने की दिशा में काम कर सकते हैं जो व्यापक शैक्षिक लक्ष्यों को बढ़ावा देने के साथ–साथ बदलते नौकरी बाजार की मांगों के लिए छात्रों को तैयार करती है।

प्रबंधक (सीओएम),
कॉर्पोरेट कार्यालय–नई दिल्ली

चित्त गृह

चंद्रभूषण सिंह

मेरा तन देवालय जैसा कोई स्थल नहीं
जिसकी बाहर से पूजा की जाए।
यह तो एक पावन गृह है
जहाँ मेरा हृदय और मन निवास करते हैं।
हृदय भावनाओं की भाषा में बोलता है
मन, तर्क और कारण से उत्तर देता है।
दोनों प्रायः असहमत होते हैं
फिर भी दोनों मुझे दिशा देना चाहते हैं।
हृदय मुझे करुणा, प्रेम और विनम्रता सिखाता है
मन मुझे स्पष्टता, शक्ति और अनुशासन का बोध कराता है।
उनकी बहस में ही मेरे जीवन का संघर्ष छिपा है
क्या मैं भावनाओं की ऊष्मा का अनुसरण करूँ
या बुद्धि के अनुशासन का
पर सत्य शायद किसी एक को चुनने में नहीं है
सत्य तो उनकी समरसता सीखने में है।
क्योंकि केवल मन से चलने वाला जीवन शुष्क होता है
और केवल हृदय से शासित जीवन अंधा।
जब वे दोनों साथ चलते हैं
तभी मैं उस पथ को पाता हूँ जो सचमुच मेरा है।
और जहाँ मेरा हृदय और मन निवास करते हैं।

अपर अभियंता ग्रेड–2 (मानव संसाधन)
कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

कविता

कमल कुलश्रेष्ठ

भारत मां के आंचल की , कुछ गौरव गाथा गाता हूँ।
महारत्न बीएचईएल का कर्मचारी हूँ , मैं अपनी कथा सुनाता हूँ।
पावर क्षेत्र में कार्य कर, हम जीवन में उजाला लाते हैं।
लगभग 68 वर्षो से हम, ऊर्जा की अलख जगाते हैं।
टरबाइन और जनरेटर को हम सब मिल बनाते हैं।
ग्राहक को संतुष्ट कर भारत में नाम कमाते हैं।
साईट पर हम सब मिलकर के पावर प्लांट बनाते हैं।
सेफ्टी और क्वालिटी के साथ हम प्रोजेक्ट सफल बनाते हैं।
डिफेंस, सोलर, और एफजीडी जैसे नए क्षेत्रो में प्रवेश कर।
नित नए अवसर और विविधताओ में जाते हैं।
सकारात्मक प्रबन्धन से, हर पग पर सहयोग पाते हैं।
टीम भाव से कार्य कर सकल लाभ हम पाते हैं।
आओ सब कर्मचारी मिलकर हम, बीएचईएल का उद्धार करें।
इस समाज का हिस्सा बन, भारत का कल्याण करें।

वरिष्ठ अभियंता (एचएसई)
रामागुंडम साइट, पावर सेक्टर पश्चिमी क्षेत्र

भारत की बढ़ती वैश्विक उपस्थिति, डिजिटल युग और हिंदी भाषा

डॉ. विजय कुमार मिश्र

डिजिटल युग, जिसे सूचना युग भी कहा जाता है, एक ऐसा समय है जब डिजिटल प्रौद्योगिकियों, विशेष रूप से इंटरनेट, कंप्यूटर और मोबाइल उपकरणों का व्यापक उपयोग हो रहा है। इसने संवाद, सूचना तक पहुंच, कामकाज की संस्कृति और दुनिया के साथ संवाद के तरीके को बदल कर रख दिया है। डिजिटल युग में संचार अत्यंत ही तेज और अधिक ही प्रभावी हो गया है। डिजिटल उपकरण और सॉफ्टवेयर ने कार्य प्रक्रियाओं को स्वचालित किया है और व्यवसायों को वैश्विक स्तर पर काम करने की अनुमति दी है। ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल संसाधनों ने शिक्षा को अधिक सुलभ और आकर्षक बना दिया है। डिजिटल स्ट्रीमिंग सेवाएं, ऑनलाइन गेमिंग और सोशल मीडिया ने मनोरंजन के तरीके को बदल दिया है। डिजिटल युग ने सामाजिक संपर्क, सांस्कृतिक आदान–प्रदान और राजनीतिक सक्रियता को भी प्रभावित किया है।

डिजिटल दौर में तकनीकी का विकास ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर साहित्य और संस्कृति का विस्तार भी हुआ। इस विस्तार में हिंदी ने भाषा के तौर पर अपनी वैश्विक स्थिति को मजबूत किया है और अपनी विशिष्ट पहचान कायम की है। आज दुनिया के बहुत सारे मुल्कों में हिंदी बोली जाती है और उन मुल्कों में भारतीय संस्कृति, परंपरा, धार्मिक अनुष्ठान, तीज–त्योहारों का आयोजन भी समय–समय पर होता रहता है। भारतीय संगीत और नृत्य को लेकर पश्चिमी देशों में बड़ा आकर्षण है। इसके साथ ही भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति को जानने व समझने के लिए भी बहुत सारे लोग हिंदी सीख रहे हैं।

आज दुनिया में हिंदी बोलने वालों की संख्या एक अरब तीस करोड़ के पार पहुंच चुकी है जो कि दुनिया में बोली जाने वाली किसी भी भाषा से अधिक है। हिंदी की वैश्विक स्वीकार्यता का बड़ा कारण भारत का डिजिटल माध्यमों के जरिए भाषा का विस्तार और उसके फलस्वरूप उपभोक्ता बाजार, हिंदी सिनेमा और भारतीय संस्कृति को जानने–समझने की ललक है। इस ललक में डिजिटल माध्यमों के जरिए हिंदी की उपस्थिति एक महत्वपूर्ण कारक है। हिंदी संबंधी तकनीकी विकास और सोशल मीडिया, यूट्यूब, ब्लॉग आदि के जरिए हिंदी की वैश्विक उपस्थिति ने भारत के प्रति दुनिया भर के लोगों की जिज्ञासा को बढाया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भी भाषा के सवाल को गंभीरता से लिया गया है. डिजिटल माध्यमों के जरिए हिंदी भाषा ने भिन्न–भिन्न देशों के बीच पुल का काम किया है और भारतीय ज्ञान, विज्ञान को लेकर पश्चिमी देशों में जो जिज्ञासा का भाव था उसे पंख दिए हैं. भारत, अपनी समृद्ध वैदिक संस्कृति के विविध संदर्भों के कारण विश्व भर के लोगों का केंद्र रहा है. भारत की मजबूत आध्यात्मिक परंपरा और विश्व बंधुत्व की परिकल्पना भी शेष विश्व के नागरिकों को आकर्षित करती रही है।

डिजिटल क्रांति की देन है कि हिंदी तकनीक की भाषा भी बन चुकी है, बड़ी–बड़ी ई– कॉमर्स कंपनियां हिंदी के माध्यम से लोगों को उत्पाद बेच रही हैं। फ्लिपकार्ट, अमेज़ॉन जैसी ऑनलाइन कंपनियों के साथ–साथ किंडल जैसे प्लेटफॉर्म पर भी हिंदी समेत अन्य भारतीय भाषाओं की कृतियाँ आसानी से उपलब्ध होने लगी हैं।

आज हिंदी का अपना एक वैश्विक बाजार निर्मित हो चुका है। इस वैश्विक बाजार में हिंदी सबकी जरूरत है। इसलिए बड़ी–बड़ी कंपनियों के मालिक अपने कर्मचारियों को अन्य भाषाओं के साथ–साथ हिंदी सीखने पर ज़ोर दे रहे हैं। डिजिटल दौर में दुनिया में बाजार और व्यवहार की भाषा हिंदी बनती जा रही है। आज दुनिया के 40 से अधिक देशों के 600 से अधिक विश्वविद्यालयों और स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई हो रही है। यह सिर्फ एक भाषा की पढ़ाई नहीं बल्कि भाषा के जरिए भारत की संस्कृति को जानने व समझने का भी अवसर है।

इस डिजिटल युग में अलग–अलग माध्यमों और तकनीकी के जरिए पूरी दुनिया भारतीय नृत्य, संगीत एवं अन्य कलाओं से गहरे रूप में परिचित हो पा रही है। विदेशों में भारतीय शास्त्रीय संगीत को लेकर लोगों में बड़ी गहरी रुचि है। वहाँ लोग भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ–साथ सांस्कृतिक परंपरा से जुड़ना चाहते हैं और आज दुनिया के तमाम छोटे–बड़े देशों में भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का ज़ोर है।

हिंदी भाषा को आधार बनाकर दुनिया भर में चलने वाली विविध गतिविधियाँ विदेशों में बसे भारतीयों को अपनी जड़ों से जोड़े रखती हैं और भारतीय संस्कृति को सहेजे हुए हैं। विदेशों की कई संस्थाएँ भारतीय शास्त्रीय नृत्य व हिंदी सिनेमा के गीतों पर नृत्य पाठशाला चला रहे हैं।

दुनिया के आर्थिक मानचित्र पर जब उदारीकरण, भूमंडलीकरण के साथ 'ग्लोबल विलेज़' की अवधारणा ने आकार लिया तो उसके बहुत पहले से ही भारतीय ज्ञान व सांस्कृतिक परंपरा के प्रति विश्वभर के लोगों की रुचि रही है। आज बाजार ने भाषा और संस्कृति को भी उत्पाद में बदल दिया है लेकिन इन सबके बावजूद हिंदी की ताकत को बाजार और पूरी दुनिया ने माना है। वैश्वीकरण के माहौल में अब हिंदी विदेशी कंपनियों के लिए भी लाभ का जरिया बनने लगी है। वे अपने उत्पादों को बड़ी आबादी तक पहुंचाने के लिए हिंदी को माध्यम बना रहे हैं। ***गूगल से लेकर दुनिया की तमाम बड़ी–बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ हिंदी को तरजीह दे रही हैं। इनका मकसद भले ही उपभोक्ता हो पर उससे कहीं न कहीं हिंदी एक वैश्विक ताकत के तौर पर तो मजबूती पा रही है।***

वैश्विक स्तर पर हिंदी अब व्यापार, रोजगार और पहचान की भाषा बन चुकी है। इस पहचान को मजबूत करने में हिंदी सिनेमा का भी महत्वपूर्ण योगदान है। एक समय में जैसे देवकी नन्दन खत्री के उपन्यासों को पढ़ने के लिए बहुत से उर्दू भाषी लोगों ने हिंदी सीखी ठीक उसी प्रकार आज देश–विदेश में बहुत से भिन्न–भिन्न, भाषा–भाषी हिंदी सिनेमा एवं डिजिटल माध्यमों के कारण हिंदी सीख रहे हैं। भाषा के माध्यम से वह भारत व भारत की संस्कृति से भी परिचित हो रहे हैं। बहुत सी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की शाखाएँ भारत में भी हैं। वह बेहतर व्यापार के लिए अपने कर्मचारियों को हिंदी सीखने के लिए बकायदा प्रोत्साहित करते हैं। इस तरह डिजिटल युग में हिंदी की वैश्विक पहचान

निर्मित हुई है। आज भाषा सीमाओं से पार, लोगों तक आसानी से पहुँच रही है। इसमें डिजिटल माध्यमों की ही भूमिका रही है।

डिजिटल दौर में भाषा को बरतने की प्रविधि में बदलाव भी आए हैं। वह ज़बान के जरिए तो विस्तार पाती ही है लेकिन अब तकनीक भी उसके विस्तार में महत्वपूर्ण कड़ी है। डिजिटल दौर में हिंदी एक ओर वैश्विक स्तर पर स्थापित हो रही है लेकिन अपने ही देश में हिंदी को लेकर जितनी गंभीरता अपेक्षित है उसमें हमेशा कमी देखी गई है। हाल के वर्षों में इस स्थिति में काफी सकारात्मक बदलाव आया है किन्तु यह पर्याप्त नहीं है. भाषा से संस्कृति का गहरा नाता है। इसलिए यह चिंता सिर्फ भाषा के सवाल तक सीमित नहीं रहती है। इसका दूरगामी प्रभाव है। भाषा का कमजोर होना, समाज एवं संस्कृति का कमजोर होना भी है. इसलिए हम सबका यह राष्ट्रीय दायित्व है कि अपनी भाषा के विस्तार, प्रसार और संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सतत सचेत एवं सक्रिय रहें। तभी हिंदी अपने सम्पूर्ण प्रभाव के साथ भारत की वैश्विक स्थिति को सुदृढ़ करने में बड़ी भूमिका निभा सकेगी।

सहायक प्रोफेसर
हिंदी विभाग, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

शब्द परिचय

अंग्रेजी शब्द	हिंदी अर्थ	हिंदी में प्रयोग / Usage in English
Absorption	शामिल, समावेशन	कर्मचारियों को नियमित सेवा में शामिल करने का मामला विचाराधीन है। The **absorption** of the employees in regular service is under consideration. राज्य सरकार ने प्रवासियों के **समावेशन** को रोकने हेतु एक नया कानून लागू किया है। The State Government has introduced a new Law prohibiting further absorption of immigrants.
Acceptance	स्वीकृति	मुख्य अतिथि की **स्वीकृति** मिल गई है। The **acceptance** has been received from the Chief Guest.
Balance sheet	तुलन पत्र	कंपनी का **तुलन पत्र** इसकी अच्छी वित्तीय स्थिति को दर्शाता है। The **balance sheet** of the company shows its sound financial position.
Bond	बंधपत्र, बॉन्ड	इस परियोजना के बड़े हिस्से का वित्त पोषण सरकारी **बंधपत्र** के जरिए किया जाएगा। The major parts of this project will be financed by the Government **Bond.**
Character	चरित्र	शिकायतकर्ता ने उसके **चरित्र** पर आरोप लगाया है। Complainant has made allegation against his **character.**
Circular	परिपत्र	प्रधान कार्यालय के **परिपत्र** में अध्ययन अवकाश लेने की प्रक्रिया बताई गई है। **Circular** from Head office explains the procedure of availing study leave.
Deduction	कटौती	सकल आय के निर्धारण में कुछ अन्य **कटौतियों** को शामिल करने की अनुमति नहीं है। Certain other **deductions** are not allowed in determining Gross Income.
Delete	हटाना, निकालना	सेवानिवृत्त अधिकारियों के नाम सूची से **हटा** दिए गए हैं। The names of the retired officers have been **deleted** from the list.
Entitle	हकदार होना	समूह 'ख' के अधिकारी रेल की एसी द्वितीय श्रेणी में यात्रा करने के **हकदार** हैं। The group 'B' officers are **entitled** to travel in the AC Tier II by rail.
Fair price	उचित मूल्य	उपभोक्ताओं ने **उचित मूल्य** की दुकानों के खिलाफ ढेर सारी शिकायतें की हैं। The consumers have made a lot of complaints against the **fair price** shops
Finance Bill	वित्त विधेयक	संसद ने **वित्त विधेयक** पारित कर दिया है। The Parliament has passed the **Finance Bill.**
Giveaway	अनुचित लाभ	आयोग ने कुछ निजी कंपनियों को किए गए भूमि आवंटन को **अनुचित लाभ** कहा। The commission said that the allotments of land to some private companies were **giveaways.**
Handwritten	हस्तलिखित	फ़ाइल में **हस्तलिखित** दस्तावेज भी शामिल हैं। The file includes the **handwritten** document also.
Imprest	अग्रदाय	**अग्रदाय** एक प्रकार का अग्रिम है जिसका हिसाब दिया जाना होता है। **Imprest** is a sort of advance which has to be accounted for.
Joint venture	संयुक्त उद्यम	**संयुक्त उद्यम** दो या दो से अधिक कंपनियों /इकाइयों के बीच हो सकता है। **Joint venture** can be between two or more companies / entities etc.

महाकुंभ यात्रा वृत्तांत

अमृत सिंह

टेलीविजन पर महाकुंभ 2025 की तैयारियों को देखते हुए और इन तैयारियों पर राजनैतिक दलों की छींटाकशी को सुनते हुए, मुझे भी प्रयागराज महाकुंभ 2025 में जाने और वहाँ पर महाकुंभ के दौरान माँ गंगा में स्नान करने की तीव्र उत्कंठा हुई। फिर क्या था, प्रयागराज के लिए रेलगाड़ी में हैदराबाद से झांसी होकर आने–जाने के लिए सपरिवार आरक्षण कर लिया क्योंकि 'महाकुंभ' का अवसर किसी भी व्यक्ति के जीवन में सिर्फ एक बार ही आता है। कुंभ यात्रा वृतांत प्रारंभ करने से पहले कुंभ के बारे में महत्वपूर्ण बातें जान लेते हैं कि यह क्यों, कब, कहाँ और कैसे आयोजित किया जाता है?

कुंभ का ऐतिहासिक महत्व

कुंभ शब्द का अर्थ होता है 'कलश'। कुंभ का ऐतिहासिक संदर्भ वेदों, पुराणों और अन्य इतिहास ग्रंथों में वर्णित है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, कुंभ मेले की शुरुआत तब हुई जब देवताओं और असुरों के बीच **"समुद्र मंथन"** हुआ और इस समुद्र मंथन से उत्पन्न अमृत को प्राप्त करने की होड़ मची और छीना–झपटी में इस अमृत कलश से अमृत की कुछ बूँदें भारत के हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक नामक स्थानों में गिरीं। इसी कारण इन स्थानों को अत्यंत पवित्र स्थान माना जाता है और कालांतर में यह तीर्थ बन गए। ऐसा विश्वास है कि इन स्थानों पर धार्मिक रीति–नीति के अनुसार स्नान एवं धार्मिक क्रिया कलाप करने से मनुष्य को पापों से मुक्ति मिलती हैं। इन चारों स्थानों पर जहाँ अमृत की बूंदें गिरीं वहाँ हर 12 वर्ष के उपरांत कुंभ मेले का आयोजन होता है। हालांकि बीच में अर्ध कुंभ का भी आयोजन होता है। केवल प्रयागराज के हर बारहवें कुंभ को **महाकुंभ** का विशेष दर्जा प्राप्त है, जो कि 144 वर्ष के बाद आता है। मान्यता है देवताओं को समुद्र मंथन में 12 दैवीय वर्ष लगे थे और एक दैवीय वर्ष 12 मानवीय वर्ष का होता है, जो कि कुल 144 मानवीय वर्ष होते हैं, इसी कारण 144 वर्षों के उपरांत होने वाले कुंभ को **'महाकुंभ'** कहते हैं। महाकुंभ किसी भी व्यक्ति के जीवन में सिर्फ एक बार ही आता है इसलिए हर भारतीय को इस मौके का लाभ उठाना चाहिए। प्रयागराज में पिछला महाकुंभ सन 1881 में अंग्रेजों के शासनकाल में हुआ था।

कुंभ मेले का आयोजन कब किया जाता है

कुंभ मेले का आयोजन बृहस्पति ग्रह की सूर्य की परिक्रमा के आधार पर किया जाता है जो कि बारह वर्ष की होती है। ज्योतिषीय गणना के आधार पर **सूर्य और बृहस्पति ग्रह की स्थिति के मुताबिक कुंभ मेले का समय निर्धारित किया जाता है।** जब बृहस्पति ग्रह वृषभ राशि में होते हैं और उसी समय सूर्य मकर राशि में गोचर करते हैं तो कुंभ का आयोजन प्रयागराज में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती नदी के संगमतट पर किया जाता है। इसी प्रकार जब कुंभ राशि में बृहस्पति और मेष राशि में सूर्य हो तब गंगा नदी के तट पर हरिद्वार में; जब सिंह राशि में बृहस्पति और सूर्य हो तब गोदावरी नदी के तट पर नासिक में और जब सिंह राशि में बृहस्पति और मेष राशि में सूर्य हो तब उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर कुंभ का आयोजन किया जाता है। हम भारतीय इस पर गर्व महसूस कर सकते हैं कि जब विश्व की अन्य सभ्यताएं, जो कि श्रेष्ठता मनोभाव यानि Superiority Complex से ग्रसित हैं, पृथ्वी को चपटा व ब्रह्मांड का केन्द्र मानतीं थीं, उस समय भी हम भारतीय सूर्य व अन्य ग्रहों की सटीक ज्योतिषिय गणना करने में दक्ष थे। कुंभ मेले में आध्यात्मिक ज्ञान, गौरवशाली सनातन सभ्यता, सामासिक संस्कृति तथा सामाजिक समरसता का आदान–प्रदान होता है। साथ ही इस महोत्सव में सनातन, भारतीयता एवं राष्ट्रीयता का जो विहंगम दृश्य दिखता है वह सनातन एवं भारतीयता को आघात पहुंचाने वाली राजनैतिक शक्तियों एवं राष्ट्र विरोधी तत्वों के मुंह पर भारतीय समाज का करारा तमाचा भी है।

हमने दिनांक 02 फरवरी को हैदराबाद से अपनी यात्रा आरंभ की और झांसी होकर दिनांक 03 फरवरी 2025 को प्रयागराज रेलवे स्टेशन पर निर्धारित समय से तीन घंटे देरी से लगभग शाम सात बजे पहुँचे। जैसा कि सामान्यतः होता है कि रेलगाड़ी में चढ़ने वाले यात्रियों को उतरने वाले यात्रियों से ज्यादा आतुरता रहती है, इस अव्यवस्था को रोकने के लिए रेलगाड़ी के हर डिब्बे के हर दरवाजे पर पुलिस की उचित व्यवस्था देखने को मिली ताकि यात्री आसानी से उतर–चढ़ सके। यात्रियों की सुगमता के लिए तथा अव्यवस्था की आशंका को रोकने के लिए प्लेटफार्म पर आने व प्लेटफार्म से बाहर निकलने के लिए अलग–अलग पुल व रास्ते निर्धारित किए गए थे और पुलिस के जवान लगातार दिशा–निर्देश दे रहे थे। आम धारणा के विपरीत पुलिस वालों का व्यवहार काफी मधुर एवं अपनत्व भरा था। रेलवे स्टेशन के बाहर महाकुंभ के दौरान पुण्य कमाने को आतुर लोगों द्वारा निःशुल्क चाय और प्रसाद का वितरण किया जा रहा था। यहाँ तक कि वाहनों में बैठी सवारियों को भी निःशुल्क चाय एवं प्रसाद दिया जा रहा था। चूंकि 29 जनवरी, 2025 को संगम तट पर हुई भगदड़ में लगभग 30 लोगों की मौत की सूचना हमें मिल चुकी थी इसलिए हमने अपने ठहरने की व्यवस्था संगम तट की बजाय अरैल घाट की ओर की थी, जो कि नदी के दूसरी ओर है। थोड़ा स्थानीय यात्री वाहन, थोड़ा पैदल संघर्ष करते हुए हम अपने निर्धारित ठिकाने पर पहुंचे जो कि अरैल घाट के बहुत निकट था। रेलवे स्टेशन से अपने ठिकाने तक जाते हुए हमने प्रयागराज में अस्थाई तौर पर बसी हुई टेंट सिटी के दर्शन किए जिसमें हजारों लोगों के ठहरने की व्यवस्था की गई थी। भीड़ के चलते संभावित आशंकाओं को देखते हुए जगह–जगह पुलिस ने बैरिकेड्स लगा कर वाहनों के बहाव को नियंत्रित किया हुआ था। स्नानोपरांत हम अपने ठिकाने से अरैल घाट की ओर घूमने निकल पड़े। रात में काफी ठंड हो गई थी लेकिन घाटों पर लोगों के स्नान का सिलसिला लगातार जारी था; जैसे कि ठंड का कोई एहसास ही ना हो। सफाई कर्मचारी साफ–सफाई के कार्य में लगे हुए थे और मेला परिसर को अगले दिन के लिए तैयार करने के लिए उद्विग्न थे। छोटे–छोटे दुकानदार अपना माल बेचने को आतुर थे जिसमें गंगाजल को अपने घर तक ले जाने के लिए प्लास्टिक की कैनों की मांग एवं आपूर्ति बहुत ज्यादा थी। इस महाकुंभ के दौरान शायद

करोड़ों प्लास्टिक की कैनों की बिक्री हुई होगी। रात्रि 11 बजे के करीब भोजन हेतु हम एक बहुत बड़ी प्राइवेट फैसिलिटी में पहुंचे जिसमें दूध, चाय, कॉफी से लेकर पिज्जा तक अलग–अलग प्रकार के भोजन की उपलब्धता थी। लेकिन सरकारी नियंत्रण वाले क्षेत्र के विपरीत यहाँ साफ– सफाई का स्तर बेहद खराब था। भोजनोपरांत हम अपने ठिकाने पर आकर सो गए। रात में बहुत ठंड थी और काफी थकान होने के कारण हम सूर्योदय के बाद ही उठ पाए।

अगले दिन महाकुंभ में स्नान की इच्छा के साथ हम चल पड़े घाटों की ओर। घाटों के रास्ते में दोनों ओर छोटे–छोटे दुकानदार अपने सामान को श्रद्धालुओं को बेचने को आतुर थे, जिसमें पूजा से संबंधित सामान बहुतायत था। जिधर देखो लोग घाटों की ओर उमड़े जा रहे थे और लाखों लोग बिना किसी सामाजिक भेद–भाव, ऊंच–नीच के महाकुंभ में गंगा– स्नान कर रहे थे। नदी में तैरने वाले प्लास्टिक के घनाकार नगों को जोड़कर एक बाड़ तैयार की गई थी ताकि कोई श्रद्धालू गलती से गहरे पानी में ना पहुंच जाए और किसी प्रकार की दुर्घटना न हो। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी श्रद्धालू इस बाड़ के भीतर ही स्नान करें; सरकारी सुरक्षा कर्मियों को नियुक्त किया गया था। स्नान करने के बाद श्रद्धालुओं के वस्त्र बदलने के लिए भी पुनःचक्रित प्लास्टिक से निर्मित बहुत सी सुविधाएं थी जिनमें अधिकांशतः स्त्रियां अपने वस्त्रों को बदल रहीं थीं। त्रिवेणी घाट पर स्नान की इच्छा संजोए हम नाव की सुविधा को खोजते हुए घाटों के किनारे–किनारे आगे बढ़ रहे थे। आसमान में पैरा–ग्लाईडिंग हो रही थी और निश्चित समय में पैरा ग्लाइडर एक निश्चित क्षेत्र के भीतर चक्कर लगा रहे थे। साथ ही आसमान में ध्रुव हैलीकाप्टर से महाकुंभ मेले की लगातार निगरानी की जा रही थी। हम आगे बढ़ ही रहे थे कि अचानक एक मल्लाह ने हमें त्रिवेणी घाट तक अपनी नाव में ले जाने की पेशकश की। मौखिक तौर पर दाम व अन्य शर्तें तय हो जाने के बाद हम उसकी नाव पर चढ़ गए। बहुत ही छोटी नाव थी और नाव पर बैठने के साथ ही हमें लाइफ बोट पहनने के लिए दी गईं और हम चप्पू से चलने वाली इस नाव पर सवार होकर चल पड़े त्रिवेणी घाट की ओर। नदी का पानी कुल मिलाकर साफ दिखाई दे रहा था और नदी में सीगल पक्षियों की भरमार थीं। नाव से यात्रा करने वाले लोग इन सीगल पक्षियों को भोजन डाल रहे थे। लोगों के भोजन को पानी में डालते ही सीगल पक्षियों का झुंड़ उस भोजन पर टूट पड़ता और कुछ ही क्षणों में वह भोजन खत्म हो जाता। यह नज़ारा बेहद मनमोहक था। किसी भी संभावित दुर्घटना से तुरंत निपटने के लिए नदी के बीचों बीच फ्लोटिंग पॉन्टून डॉक्स बने हुए थे जिन पर सुरक्षाकर्मी स्पीड बोट्स के साथ तैनात थे और दूरबीन से चारों ओर निगरानी कर रहे थे। नदी के बीच से किनारो का नज़ारा अद्भुत था। जिधर देखो लोग ही लोग थे। मल्लाह ने हमसे पूछा कि क्या हम भी सीगल पक्षियों को भोजन डालना चाहेंगें? हमारी स्वीकृति पर उसने बीच नदी में पक्षियों का भोजन बेचने वाली दूसरी एक नाव को अपनी ओर आने का इशारा किया। पक्षियों का भोजन खरीदकर हमारा एक परिवारजन पक्षियों को भोजन डालने लगा जिस पर सीगल पक्षियों का झुंड़ टूट पड़ रहा था, वहीं दूसरा इसका वीड़ियो बनाने लगा। दृश्य अविस्मरणीय था। इसी तरह के अद्भुत एवं अविस्मरणीय दृश्यों को देखते–देखते हम त्रिवेणी पहुंच गए। बहुत ही अच्छी व्यवस्था थी। त्रिवेणी पर पहुंचकर हमने गंगा स्नान किया व गंगा जल पिया। मां गंगा व सूर्य को तर्पण किया। अपने पूर्वजों, अपने परिवार, अपनी आने वाली पीढ़ियों, अपने देश व सम्पूर्ण विश्व के लिए मंगल कामनाओं के साथ गंगा मैया में डुबकियां लगाईं। मल्लाह ने भी त्रिवेणी में डुबकियां लगाईं। इसके अलावा गंगाजल ले जाने के लिए जो प्लास्टिक की कैन हमने खरीदीं थीं वो कैन मल्लाह ने त्रिवेणी के गंगाजल से भर दीं। त्रिवेणी में गंगा स्नान के बाद हमने कपड़े बदले और मल्लाह के साथ चल पड़े वापिस अरैल घाट की ओर। रास्ते में पुनः हमने सीगल पक्षियों के लिए भोजन खरीदा और उन्हें न केवल भोजन डाला बल्कि पक्षियों के भोजन पर टूट पड़ने के वीडियो भी बनाए। वापिसी में मल्लाह ने हमें अरैल घाट पर उतार दिया। हम वापिस जा ही रहे थे तो रास्ते में एक धार्मिक संस्था द्वारा हमें निःशुल्क प्रसाद में खिचड़ी प्रदान की गई और आश्चर्यजनक रुप से हमें खिचड़ी का प्रसाद देने वाला एक फिरंगी था। इसके बाद हमने भोजन किया और कुछ समय आराम करने अपने ठिकाने पर आ गए।

अपराह्न के समय हम चल पड़े संगम घाट की ओर श्री बड़े हनुमान जी के मंदिर के दर्शन करने, जिन्हें लेटे हुए हनुमान जी भी कहा जाता है। किराए की मोटरसाइकिल ने हमें यमुना पार कराकर संगम की तरफ मुख्य मार्ग तक छोड़ दिया। आगे का रास्ता हमें पैदल ही तय करना था। मेला परिसर में प्रवेश करने के बाद हम इसकी व्यवस्था देखकर हैरान थे। पंक्ति से अस्थाई शौचालय बने हुए थे और लगभग हर शौचालय में एक सफाई कर्मी सफाई के काम में लगा हुआ था तो वहीं एक शौचालय से सक्शन मशीन (Suction Machine) द्वारा अन्यत्र कहीं मल–मूत्र के निपटान हेतु अस्थाई शौचालय को खाली किया जा रहा था। इतनी भीड़ व इतने अस्थाई शौचालय के बाबजूद कहीं से भी मल–मूत्र की बदबू का कोई नामोनिशान ना था। मेला परिसर को देखते–दाखते और पूछते–पाछते हुए हम श्री बड़े हनुमान जी के मंदिर की ओर बढ़ते रहे। रास्ते में हमें कांटो पर लेटे हुए एक साधु के दर्शन हुए। बड़े हनुमान जी के मंदिर में अच्छी–खासी भीड़ थी। खैर, लगभग 3 घंटे में बड़े हनुमान जी के दर्शन हो गए। बड़े हनुमान जी के दर्शन के बाद मेला परिसर होते हुए हम पुलिसवालों से पूछते हुए अरैल घाट की ओर जाने के लिए पान्टून पुल की ओर बढ़ने लगे। बीच रास्ते में खोया–पाया स्टॉल की घोषणाएं लगातार जारी थीं। हमारी भी इच्छा थी कि कोई न्यूज चैनल हमारा भी इंटरव्यू ले, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। गंगा–तट पर पहुंचे तो वहाँ गंगा आरती की तैयारी हो रही थी। हम रुककर गंगा आरती में शामिल हो गए। आरती लेकर हम फिर चल पड़े पान्टून पुल की ओर। लोगों की भीड़ को देखते हुए पुलों का प्रयोग सिर्फ आने या जाने के लिए ही हो रहा था। पुलिसवालों से मार्गदर्शन लेते हुए हम 4 नम्बर के पान्टून पुल पर पहुंचे जो कि झूसी जाने के लिए था। पान्टून पुल जिसे पीपा पुल के नाम से भी जाना जाता है अपने आप में अभियांत्रिकी का एक अजूबा है। पीपा पुल के ऊपर से संगम, अरैल तथा झूसी का नज़ारा बेहद मनमोहक था। हर ओर से भजन कीर्तन की आवाजें आ रहीं थीं साथ ही वातावरण में पूजा–पाठ की सामग्री की सुगंध समाई हुई थी। पुल पार कर हम झूसी पहुंच गए। अब हमें अरैल की ओर जाने के लिए दूसरे पीपा पुल को ढूंढना था जो हमें यमुना और सरस्वती के गंगा में मिलन के बाद की गंगा को पार कराता। हमें बहुत चलना पड़ा।

रास्ते में एक पीपा पुल मिला भी लेकिन वह प्रशासनिक अमले के लिए आरक्षित था और आम जनता के लिए वह पुल प्रतिबंधित था। लगभग एक किलोमीटर लंबे अगले पीपा पुल से हमने गंगा को पार किया और आ गए अरैल की ओर। यह पुल आने और जाने दोनों के ही लिए था और इस पर सैंकडों लोग–आ जा रहे थे। पुल पार करने तक हम थक कर चूर हो चुके थे। पुल पार करने के बाद हम टिर्री यानि बैटरी वाली गाड़ी से अपने ठहरने के ठिकाने तक पहुंचे।

अगली सुबह हम पुनः स्नान के इंतजाम के साथ अरैल घाट पहुंचे। अरैल घाट जाने के दौरान हमने महसूस किया कि सुरक्षा बलों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। पूछताछ करने पर पता चला कि प्रधानमंत्री मोदी जी आने वाले हैं। तभी मन में विचार आया कि कहीं हमारे स्नान से पहले ही घाट को प्रतिबंधित न कर दिया जाए और हम तेजी से घाट की ओर बढ़े। एक ओर जहाँ भारत के प्रधानमंत्री के आगमन की तैयारियों के चलते अरैल घाट पर साफ–सफाई पूरे जोर–शोर से चल रही थी जिसमें मशीनों से भी काम लिया जा रहा था। वहीं दूसरी ओर हजारों लोग अरैल घाट में गंगा स्नान कर रहे थे, कुछ लोग गंगा–जल को घर ले जाने के लिए प्लास्टिक की कैन में भर रहे थे तो वहीं घाट पर गंगा स्नान कर चुके लोग अपने वस्त्रों को बदल रहे थे, जिसके लिए भी विशेष इंतजाम किए गए थे। स्नानोपरांत हम वापिस अपने ठिकाने की ओर चल पड़े। नाश्ते के बाद हम चल दिए श्री सोमेश्वर महादेव मंदिर में शिवजी के दर्शन करने। सुरक्षा बल धीरे–धीरे ट्रैफिक पर अपने शिकंजा कसते जा रहे थे और जब तक हम श्री सोमेश्वर महादेव मंदिर के दर्शन कर वापिस आए तब तक ट्रैफिक को मोदी जी के लिए सुरक्षा कारणों से रोक दिया गया था। वापिस अपने ठिकाने तक पहुंचने तक हमें पता चला कि मोदी जी अरैल घाट पहुंच चुके हैं। कुछ ही समय बाद मोदी जी को गंगा स्नान कर वापिस जाना था अतः हम भी प्रधानमंत्री मोदी जी के दर्शन की आंकांक्षा लिए सुरक्षा घेरे के बाहर रुक गए। हमारी ही तरह कुछ लोग मोदी जी के दर्शन के लिए उत्कंठित थे तो वहीं पर गंगा स्नान को आतुर कुछ लोग उनके रोके जाने पर पूरे वी.आई.पी. तंत्र को कोस भी रहे थे। कुछ समय के बाद पूरे सुरक्षा–बंदोबस्त के साथ मोदी जी का काफिला निकला और हमें कार की अगली सीट पर बैठे हुए मोदी जी के दर्शन हुए। फिर सामान पैक कर हम प्रयागराज से झांसी तक टैक्सी पकड़ने के लिए अरैल घाट के नजदीक मुख्य मार्ग पर आ गए। हम टैक्सी का इंतजार कर ही रहे थे, जो कि ट्रैफिक की वजह से लेट हो रही थी, कि अचानक अपने कार्यालय के एक सहकर्मी से गंगाजल व गंगा की मिट्टी लाने का अनुरोध प्राप्त हुआ। गंगाजल तो हम पहले ही ला चुके थे। गंगा की मिट्टी लाने के लिए घाट की ओर तेज कदमों से गया और गंगा की धारा में से एक मुठ्ठी गंगा की मिट्टी ले आया। कुछ समय बाद टैक्सी आ गई और हम चल पड़े झांसी की ओर। इस तरह हमारी कुंभ यात्रा समाप्त हो गई। हम न केवल भाग्यशाली हैं कि हमारे जीवन काल में महाकुंभ जैसा अवसर आया बल्कि हम परम भाग्यशाली हैं कि हमें महाकुंभ के दौरान गंगा स्नान और इस महोत्सव में विश्व के सबसे लोकप्रिय नेता एवं हमारे प्रधानमंत्री मोदीजी के दर्शन का अवसर प्राप्त हुआ।

महाकुंभ केवल एक धार्मिक मेला ही नहीं है बल्कि यह भारतीय समाज की एकता और भाईचारे का प्रतीक भी है। यहां विभिन्न धर्म, जाति और संस्कृति के लोग एकत्र होते हैं और सभी का मुख्य उद्देश्य धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति होता है। यह मेला समाज में आपसी सहयोग, एकता और सद्भावना का संदेश देता है। महाकुंभ 2025, न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और विश्व की एकात्म चेतना का बेहतरीन उदाहरण भी है। यह हमें हमारी आध्यात्मिक धरोहर से जोड़ने और जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझने का एक अवसर प्रदान करता है। इस मानव चेतना के अद्वितीय और भव्य आध्यात्मिक एवं धार्मिक आयोजन का हिस्सा बनना, हर श्रद्धालु के लिए एक विशेष अनुभव और गौरव की बात है। परमपिता का धन्यवाद कि हमें यह अवसर प्रदान किया।

जय हिंद, जय महाकुंभ, जय गंगा मैया।

अपर अभियन्ता ग्रेड–2 (क्रय)
एचपीईपी, हैदराबाद

नन्ही परी

इंद्रजीत सिंह भंडारी

खुशियाँ लेकर आई नन्ही परी
जिंदगी में नयापन लाई नन्ही परी
नए रिश्तों का जन्म हुआ आज
एक बेटी का बाप बन हुआ नाज आज

खुशियों की आज हुई है झमाझम बारिश
खुशियां समेटना चाहता हूं सारी
पर सिमटती नहीं बाहों में मेरी

कदम आज जमीन पर नहीं है मेरे
जिंदगी को मानो नए पंख लग गए मेरे
पाप पुण्य से आगे निकल गया हूँ
अपने देवो के आगे झुक गया हूँ

एक नई जिंदगी जीना चाहता हूँ दोबारा
गम के आँसुओ में डूब के बिताई है कई रातें मैंने
अपने गमों को भी आज खुशी के आँसुओं से भुलाया मैंने

आँखें आज भी हैं नम पर खुशी के मारे
महसूस कर रहा हूँ बंद आँखों से आसमां के तारे

मेरे घर आई है खुशी यह सब को बताया मैंने
मेरे घर आई है खुशी यह सब को बताया मैंने

उप अपर अभियंता ग्रेड–3 (डीएबीजी)
हीप, हरिद्वार

डार्क वेब क्या है? अपने बच्चों को डार्क वेब से कैसे बचाएँ?

गौरव अब्रोल

इंटरनेट ने मानव जीवन को स्थायी रूप से बदल दिया है। इंटरनेट वरदान भी है और अभिशाप भी। सही हाथों में और सही मार्गदर्शन के साथ, यह सीखने और विकास के अद्वितीय अवसरों का मार्ग हो सकता है किन्तु उचित नियमों के बिना, यह अत्यंत विनाशकारी भी हो सकता है और आपके बच्चे के भविष्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। एक भौतिक खेल के मैदान की तरह, ऑनलाइन क्षेत्र में भी हानि की संभावना है, विशेष रूप से बच्चों के लिए जो सतह के ठीक नीचे होने वाले खतरे से पूरी तरह अनभिज्ञ हैं: ***डार्क वेब।***

(चित्र स्रोतः https://webinhindi.com/)

डार्क वेब क्या है और यह खतरनाक क्यों है?

जैसा कि नाम से पता चलता है, डार्क वेब डिजिटल दुनिया का सबसे गहरा पहलू है। यह मुख्य रूप से दुष्ट, डरावना और खतरनाक होने से जुड़ा है। डार्क वेब, इंटरनेट के एन्क्रिप्टेड भागों को संदर्भित करता है जहां केवल विशेष सुरक्षित ब्राउज़र जैसे टीओआर (द ओनियन नेटवर्क) का उपयोग करके पहुँचा जा सकता है।

माता–पिता अपने बच्चों को इससे दूर रखना चाहते हैं। लेकिन क्या होगा अगर वे वास्तव में रुचि रखते हैं? क्या होगा अगर उन्हें कुछ ऐसा मिल जाए जो उन्हें नहीं मिलना चाहिए?

2015 में किए गए एक शोध के अनुसार, लगभग 57 प्रतिशत डार्क वेब पेजों ने अनधिकृत सामग्री होस्ट की।

डार्क वेब पर किस प्रकार की सामग्री उपलब्ध है?

डार्क वेब का उपयोग मुख्य रूप से अवैध गतिविधियों के लिए किया जाता है। चूंकि बच्चे डार्क वेब के बारे में उत्सुक रहते हैं, इस कारण वे इसकी ओर आकर्षित हो संकट में पड़ सकते हैं। डार्क वेब में कई तरह की खतरनाक सामग्री हो सकती है, जिनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया गया है:

1. **मैलवेयर:**

   मैलवेयर हानिकारक सॉफ़्टवेयर है जो आपके डिवाइस को नुकसान पहुंचा सकता है। बच्चे अनजाने में इंटरनेट से ऐसी फ़ाइल डाउनलोड कर सकते हैं जिसमें मैलवेयर है, जो किसी वेबसाइट से डाउनलोड करके या ईमेल संदेश में संक्रमित अटैचमेंट खोलकर कंप्यूटर को संक्रमित कर सकता है। मैलवेयर साइबर अपराधियों को आपके कंप्यूटर पर अदृश्य रूप से नियंत्रण करने की अनुमति देता है, जिससे उन्हें आपके व्यक्तिगत और वित्तीय डेटा तक पहुंच मिलती है। यही नहीं कुछ मैलवेयर आपके कंप्यूटर के सबसे महत्वपूर्ण सिस्टम को ब्लॉक कर सकते हैं।

2. **बाल अश्लीलता:**

   बाल यौन शोषण का एक रूप चाइल्ड पोर्नोग्राफी है। पोर्नोग्राफी के संपर्क में आने से बच्चों का मानसिक विकास बाधित होता है। कम उम्र में अश्लील सामग्री देखना एक बच्चे को अन्य बच्चों के प्रति यौन व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है।

3. **नशीले पदार्थों की तस्करी:**

   बच्चे अवैध मादक पदार्थों की तस्करी करने वाली वेबसाइटों के संपर्क में आ सकते हैं। बच्चों में दवाओं के बारे में अधिक जानने की उत्सुकता भी हो सकती है। अवैध दवाएँ अत्यंत हानिकारक होती हैं, जिनमें मस्तिष्क, हृदय और अन्य महत्वपूर्ण अंगों को नुकसान पहुंचाने की क्षमता होती है। जब बच्चे नशीली दवाओं का उपयोग करते हैं, तो वे मूर्खतापूर्ण या हानिकारक कदम उठा सकते हैं जो उन्हें – या किसी को भी नुकसान पहुंचा सकती हैं।

4. **सरकारी डेटा हैक करना:**

   डार्क वेब पर, हैक किया गया सरकारी डेटा लाभदायक है, कई ग्राहक हजारों पतों की सूची, सामाजिक सुरक्षा नंबर और अन्य गोपनीय जानकारी खरीदने की कोशिश कर रहे हैं जो अवैध और दण्डनीय है।

5. **अवैध हथियारों की खरीद और बिक्री:**

   डार्क वेब, पहले से ही काला बाजार में बेचे जा चुके अवैध आग्नेयास्त्रों के वितरण की सुविधा और कानूनी रूप से प्राप्त हथियारों की तस्करी का एक संभावित स्रोत प्रदान करता है। आग्नेयास्त्रों के बारे में बच्चों की जिज्ञासा उन्हें डार्क वेब पर ले जा सकती है।

(चित्र स्रोतः https://www.tech-wonders.com./)

बच्चों को डार्क वेब से बचाने के लिए सुझाव

डार्क वेब की लत से उबरना बहुत मुश्किल होता है। अपने बच्चों को इसके हानिकारक प्रभावों से बचाने के लिए कुछ सुझावः

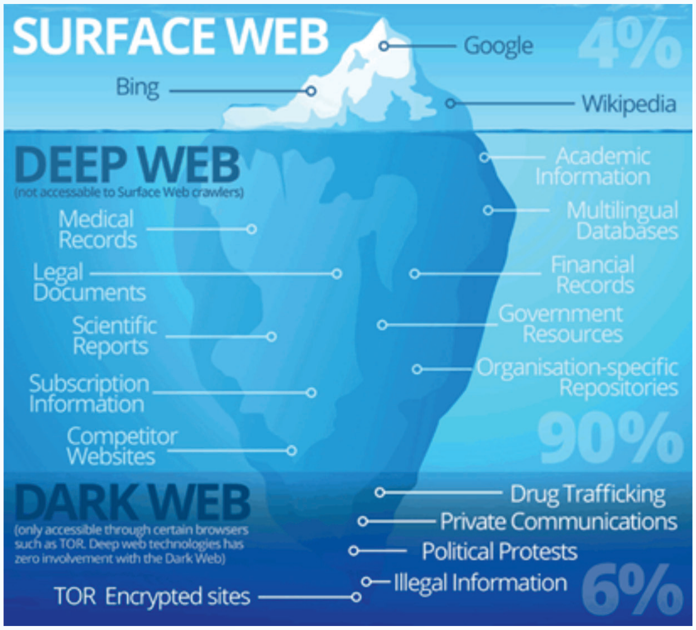

1. ऑनलाइन गतिविधि की निगरानी

माता–पिता को अपने बच्चे की गोपनीयता का सम्मान करते हुए एक नियामक और संरक्षक भी बनना होगा। बच्चे के डिजिटल उपकरणों और उपयोग किए जाने वाले सॉफ़्टवेयर, एप्लिकेशन और टूल की लगातार जांच करना आवश्यक है, विशेष रूप से जिन्हें टीओआर (TOR) या आई2पी (I2P) एक्सेस की आवश्यकता होती है। बच्चों के ऑनलाइन समय उनकी गतिविधियाँ, वे किसके साथ बातचीत करते हैं और उनके व्यवहार की निगरानी करना भी उचित है। अभिभावकों को चाहिए बच्चों के लिए दिन में इंटरनेट उपयोग करने के लिए एक विशिष्ट समय निर्धारित करें और निर्दिष्ट समय के दौरान इंटरनेट एक्सेस बंद कर दें जैसे रात को सोने से पहले।

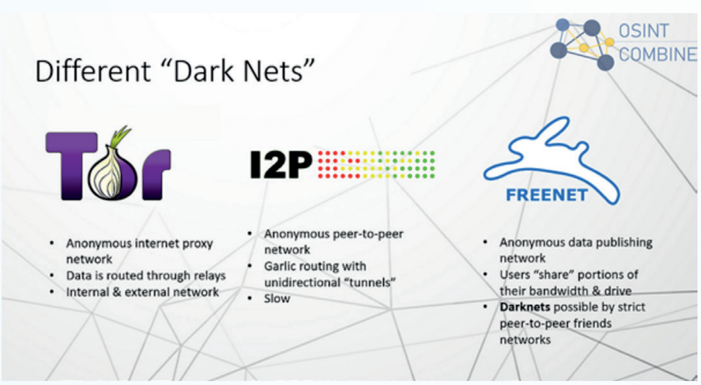

(चित्र स्रोतः https://www.osintcombine.com/)

2. अपने बच्चों के साथ समय बिताएं, बातचीत करें और उन्हें शिक्षित करें:

आज की भाग –दौड़ भरी ज़िन्दगी में माता – पिता को अपने बच्चों के साथ मैत्रीपूर्ण बातचीत शुरू करने के लिए कुछ समय निकालना चाहिए। उनसे उनकी पसंद/नापसंद, रुचियों और चिंताओं के साथ–साथ उनके जीवन में किसी भी नए विकास के बारे में चर्चा करें। इस प्रकार से आप उन्हें नशीले पदार्थों के उपयोग, यौन शिक्षा, बदमाशी, ऑनलाइन जानकारी साझा करने और हिंसक व्यवहार जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में शिक्षित कर सकते हैं।

3. बच्चों को डिजिटल डिटॉक्स के लिए बाहर ले जाएं:

आज हम पहले से कहीं अधिक समय डिजिटल उपकरणों के साथ बिता रहे हैं बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए सरल शारीरिक गतिविधियों को शुरू करें, जैसे कोई नया शौक सीखना, पार्क में टहलना आदि। शारीरिक व्यायाम तनाव और लत से छुटकारा पाने का एक असरदार उपाय है। शारीरिक व्यायाम बच्चों को मानसिक स्पष्टता विकसित करने, एकाग्रता बढ़ाने और साथ ही आपको अपने बच्चे के साथ अधिक समय बिताने और अपने संबंध को मजबूत करने में सहायक है। बच्चों को यात्रा पर ले जाएं, छुट्टियों के दौरान परिवार की तस्वीरें लें, स्वादिष्ट भोजन की योजना बनाएँ और अपने बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताएँ, जहां एक बच्चा डार्क वेब से दूर रह सकेगा।

4. स्मार्ट गैजेट्स के माध्यम से उनके संपर्क में रहें:

डिजिटल रूप से समझदार माता–पिता मोबाइल ऐप व स्मार्ट घड़ियों के माध्यम से अपने बच्चे की गतिविधियों को ट्रैक करने में सक्षम हो सकते हैं। ऐसी स्मार्ट घड़ियाँ ऑनलाइन या आस–पास के गैजेट्स शोरूम से खरीदी जा सकती हैं।

5. उनकी ऑनलाइन खरीदारी की निगरानी करें:

यदि आपने अपने बच्चे को स्वयं का क्रेडिट/डेबिट कार्ड दिया है, तो इसे अपने खाते से लिंक करना हमेशा सर्वोत्तम होता है। यह आपको बच्चे के ऑनलाइन लेन–देन व खरीदारी के बारे में जानकारी देता है। विशेषज्ञों द्वारा बच्चों के ऑनलाइन ऑर्डर, खाली डिलीवरी कार्टन, पैकेज विवरण और भुगतान के तरीके की जांच की भी सलाह दी जाती है।

निष्कर्षः

इंटरनेट, जीवन की अधिकांश चीजों की तरह, वरदान और अभिशाप दोनों है। सही हाथों में और सही मार्गदर्शन के साथ, यह सीखने और विकास के अद्वितीय अवसरों का मार्ग हो सकता है। आज के डिजिटल युग में बच्चों को डार्क वेब से बचाना महत्वपूर्ण है। चूंकि बच्चे अच्छे और बुरे में अंतर नहीं कर सकते, इसलिए माता–पिता को अपने बच्चों को निर्देशित करना और अपने बच्चे को डार्क वेब के खतरों से बचाना महत्वपूर्ण है, जैसे कि घोटालों, नशीली दवाओं और हथियारों की तस्करी, चाइल्ड पोर्नोग्राफ़ी, आदि। जिम्मेदार माता–पिता अपने बच्चों को डार्क वेब से बचाने के लिए उपरोक्त युक्तियों का पालन करें और अपने बच्चे को डार्क वेब के कष्टदायक रास्ते पर चलने से बचाएँ!

प्रबन्धक (सीडीटी)
कॉर्पोरेट कार्यालय, नोएडा

माननीय भारी उद्योग मंत्री द्वारा अरुणिमा के 36वें अंक का विमोचन

माननीय भारी उद्योग एवं इस्पात मंत्री, श्री एचडी कुमारस्वामी द्वारा 7 जनवरी, 2025 को आयोजित **"बीएचईएल दिवस एवं उत्कृष्टता उत्सव"** के अवसर पर बीएचईएल की अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका **'अरुणिमा'** के 36वें अंक का विमोचन किया गया। इस अवसर पर भारी उद्योग मंत्रालय के सचिव श्री कामरान रिजवी, मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री विजय मित्तल, बीएचईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के सदाशिव मूर्ति, बीएचईएल के निदेशक (मानव संसाधन) श्री कृष्ण कुमार ठाकुर, निदेशकगण तथा बड़ी संख्या में कर्मचारीवृंद उपस्थित थे।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कॉर्पोरेट कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 17 मार्च, 2025 को कॉर्पोरेट कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया गया। यह निरीक्षण श्री कुमार पाल शर्मा, संयुक्त निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा किया गया। इस दौरान भारी उद्योग मंत्रालय के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। निरीक्षण अधिकारी ने मानव संसाधन, एचएसई, सतर्कता सहित कई विभागों का निरीक्षण किया तथा कार्यालय प्रमुख श्री एम. श्रीधर से शिष्टाचार भेंट की। श्री शर्मा ने बीएचईएल में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति की सराहना की तथा इसे और बेहतर करने के लिए कुछ सुझाव भी दिए।

भारी उद्योग मंत्रालय द्वारा कॉर्पोरेट कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण

भारी उद्योग मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा 30 मई, 2025 को कॉर्पोरेट कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया गया। यह निरीक्षण सुश्री पारुल कौशिक, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी द्वारा किया गया। निरीक्षण अधिकारी ने कॉर्पोरेट कार्यालय के विभिन्न विभागों का निरीक्षण किया तथा विभाग प्रमुखों से शिष्टाचार भेंट की। बीएचईएल ने निरीक्षण अधिकारी के समक्ष अपनी राजभाषा संबंधी गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर एक पीपीटी प्रस्तुतीकरण दिया। मंत्रालय ने बीएचईएल में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति की सराहना की तथा इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों को जारी रखने का सुझाव दिया।

जनवरी-जून 2025 के दौरान चार कार्यशालाओं का आयोजन

भारत सरकार के निर्देशानुसार कर्मचारियों को हिन्दी में प्रवीण बनाने के उद्देश्य से जनवरी–जून 2025 की अवधि में कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा चार पूर्ण दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में कुल 113 कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। कार्यशालाओं में कर्मचारियों को राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन, अनुवाद, हिन्दी के ई–टूल्स जैसे विषयों पर गहन जानकारी दी गई।

अखिल बीएचईएल राजभाषा सम्मेलन 2025 का आयोजन

अखिल बीएचईएल राजभाषा सम्मेलन 2025 का आयोजन बीएचईएल सदन, नोएडा में 27 जून, 2025 को किया गया। सम्मेलन में बीएचईएल की विभिन्न इकाइयों/प्रभागों के 33 राजभाषा अधिकारियों/पदाधिकारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर श्री आर के श्रीवास्तव, महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट प्रशासन) एवं सुश्री चन्द्रकला मिश्र, महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट राजभाषा) की उपस्थिति रही। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कार्यपालक निदेशक (मा. सं.), श्री एम श्रीधर ने की। कार्यपालक निदेशक (मा. सं.) ने अपने संबोधन में बीएचईएल को भारत सरकार द्वारा वर्ष 2023–24 के लिए **'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'** से सम्मानित किए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की और यह कहा कि हमें आने वाले वर्षों में इससे भी बड़ी उपलब्धियां हासिल करनी हैं।

सम्मेलन के दौरान प्रतिभागियों के लिए कई उपयोगी सत्रों का आयोजन भी किया गया। श्री केवल कृष्ण, सेवानिवृत्त वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने 'हिन्दी ई–टूल्स' विषय पर व्याख्यान दिया। श्री शम्मी सुख, सेवानिवृत्त अपर महाप्रबंधक, बीएचईएल ने 'राजभाषा कार्यान्वयन–चुनौती या अवसर' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

समापन सत्र में अपने उद्बोधन में निदेशक (मानव संसाधन), श्री कृष्ण कुमार ठाकुर ने राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में विभिन्न इकाइयों/प्रभागों द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। निदेशक महोदय ने संसदीय राजभाषा समिति द्वारा ईडीएन, बेंगलुरू के राजभाषा निरीक्षण का उल्लेख करते हुए कहा कि सभी इकाइयों को संसदीय राजभाषा समिति, भारत सरकार के राजभाषा विभाग अथवा भारी उद्योग मंत्रालय द्वारा किए जाने वाले निरीक्षणों के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा इकाइयों का राजभाषा निरीक्षण

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार, कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा नियमित रूप से अधीनस्थ इकाइयों/प्रभागों का राजभाषा निरीक्षण किया जाता है। इसी क्रम में जनवरी–जून 2025 की अवधि में, कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा एचपीवीपी विशाखापत्तनम, पीएसएसआर चेन्नई, बीएपी रानीपेट, पीईएम नोएडा, ईडीएन बेंगलुरु सहित 10 इकाइयों/प्रभागों का राजभाषा निरीक्षण किया गया। कॉर्पोरेट कार्यालय के प्रतिनिधियों द्वारा संबंधित इकाइयों के साथ राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर विचार–विमर्श किया गया तथा हिन्दी में काम काज को बढ़ाने पर जोर दिया गया।

कॉर्पोरेट आर एण्ड डी, हैदराबाद में नराकास सिकन्दराबाद (उपक्रम) की अर्द्धवार्षिक बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

दिनांक 29 मई 2025 को कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद – सिकन्दराबाद की 61 वीं अर्द्धवार्षिक बैठक एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम संपन्न हुआ। श्री अनुराग कुमार, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ईसीआईएल एवं अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) ने बैठक की अध्यक्षता की। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती बी जे वसुन्धरा, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने किया। इस अवसर पर नगर के विभिन्न उपक्रमों से कार्यालय प्रमुखों एवं राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया। श्री वी वी सुब्रह्मण्यम, महाप्रबंधक एवं प्रमुख, कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास ने राजभाषा गतिविधियों का जिक्र करते हुए सभी का स्वागत किया। क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय से श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक ने राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की।

बैठक के दौरान वर्ष 2024–25 के लिए उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए उपक्रमों को पुरस्कृत किया गया। कुल 85 प्रतिनिधियों ने कार्यक्रम के अंतर्गत भागीदारी की।

कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास राजभाषा शील्ड से सम्मानित

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद–सिकंदराबाद की ओर से कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास, हैदराबाद को वर्ष 2024–25 हेतु बेहतरीन राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। श्री अनुराग कुमार, सीएमडी ईसीआईएल एवं अध्यक्ष नराकास से इस पुरस्कार को श्री वी वी सुब्रह्मणयम, महाप्रबंधक एवं प्रमुख, श्री एम मोहन राव, महाप्रबंधक (सीआरडी 3 एवं मासं) तथा श्रीमती के सुजना, अपर महाप्रबंधक (मा सं) ने ग्रहण किया।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2025-26 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम

हिन्दी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित) के लिए निर्धारित लक्ष्य

क क्षेत्र से		ख क्षेत्र से		ग क्षेत्र से	
1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को	100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को	90%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को	60%
2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को	100%	2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को	90%	2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को	60%
3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को	70%	3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को	60%	3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को	60%
4. क क्षेत्र से क तथा ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100%	4. ख क्षेत्र से क तथा ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90%	4. ग क्षेत्र से क तथा ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	60%

अन्य कार्यों के लिए निर्धारित लक्ष्य

क्र.	कार्य विवरण	क क्षेत्र	ख क्षेत्र	ग क्षेत्र
1.	हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
2.	हिंदी में टिप्पण/टिप्पणी	80%	55%	35%
3.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
4.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
5.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
6.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
7.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
8.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
9.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद।	100%	100%	100%
10.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
11.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	(i) मंत्रालयों, विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स. /निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
13.	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%

संस्मरण

गुनाहों का देवता-एक संस्मरण

अनिकेश मणि त्रिपाठी

4 सितम्बर। श्री धर्मवीर भारती की पुण्यतिथि।

1997 में वह दुनिया से विदा हुये तब मैं बी.एस.सी. प्रथम वर्ष का विद्यार्थी था। अखबारों में उन्हीं की चर्चा थी और सबसे ज्यादा चर्चा थी उनके लोकप्रिय उपन्यास 'गुनाहों का देवता' की। किसी अखबार में पढ़ा कि एक बार धर्मवीर भारती इलाहाबाद आने वाले थे। एक व्यक्ति रेलवे स्टेशन पर एक हाथ में टूटी हुई बोतल और दूसरे हाथ में 'गुनाहों का देवता' लेकर किसी को व्याकुलता से ढूँढ़ रहा था। अचानक वह भारती जी से टकरा गया। उसने पूछा– ''आप धर्मवीर भारती को पहचानते हैं? आपने देखा कहीं उन्हें? भारती जी ने कहा– नहीं तो, लेकिन आप उन्हें क्यों ढूँढ़ रहे हैं?'' और फिर उसने जो कहा उसे सुनकर भारती जी के होश उड़ गये। ''यदि वह मुझे मिल जाये तो यह बोतल उसके सीने में घुसा दूँ। इस उपन्यासकार ने मुझे बहुत रुलाया है।'' भारती जी बिना तनिक देर किये वहाँ से खिसक गये। उस समय किताबों पर लेखक की तस्वीर नहीं छपती थी... नहीं तो जाने क्या हो जाता!

किसी कृति की लोकप्रियता का इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा कि पाठक और रचना के पात्र एकमेक हो जायें।

मैं 17 वर्ष का था जब मैंने यह उपन्यास पढ़ा था। जैसा कि बता चुका हूँ कि उस समय मैं गोरखपुर विश्वविद्यालय के सेंट एंड्रूज़ कालेज में बी.एससी. प्रथम वर्ष का छात्र था। उन दिनों 'गुनाहों का देवता' का जादू सिर चढ़कर बोल रहा था। कॉलेज के पुस्तकालय में जाने कितनी बार इस उपन्यास की माँग की लेकिन हर बार यही सुनना पड़ा कि इसकी सभी प्रतियाँ अन्य छात्रों को जारी की जा चुकी हैं। मन निराश हो गया। कब यह उपन्यास पढ़ सकूँगा कुछ पता नहीं था। पढ़ने की लालसा बलवती होती गयी। मेरे दिन कैसे बीत रहे थे, बता नहीं सकता। वे बेचैनी भरे दिन थे। बाजार में पुस्तक उपलब्ध थी– हार्ड बाउंड और मूल्य था 100 रुपये। तब गोरखपुर में पेपरबैक संस्करण उपलब्ध नहीं था । सन् 1997 में अति साधारण मध्यवर्गीय परिवार के छात्र के लिए 100 रुपये बहुत बड़ी धनराशि होती थी, क्योंकि पूरे माह का बजट ही 1000 रुपये था, जिसमें पाठ्य पुस्तकें खरीदना, कमरे का किराया, भोजन और अन्य सभी व्यय शामिल थे।

मन कचोटता रहता कि इतने पैसे भी नहीं कि चिर अभिलाषित एक पुस्तक खरीद सकूँ। आखिर मैंने पैसे बचाकर पुस्तक खरीदने की योजना बनाई। हर माह पैसे बचाता। चाय समोसा खाना बंद किया। कपड़े खुद धुलने और प्रेस करने लगा। साइकिल सलीके से चलाता कि कहीं बिगड़ न जाये नहीं तो नाहक पैसे खर्च होंगे। और फिर जब इतने पैसे जमा कर लिये कि पुस्तक खरीद सकूँ, तब तक मैं बी.एससी. छोड़कर बी. टेक. करने आगरा पहुँच चुका था। एक दिन मेरे मित्र आशीष ने ऐसी खबर सुनाई कि मन आकाश में उड़ने लगा। ऐसा लगा कि सबकुछ पा लिया। आशीष ने बताया कि 'गुनाहों का देवता' का पेपरबैक संस्करण आ गया है सिर्फ 50 रुपये में। हम दोनों तुरंत दयालबाग रोड गये और आखिर 'गुनाहों का देवता' खरीद ही लिया। 3 किलोमीटर दूर खंदारी तक का सफर कितनी जल्दी पूरा कर लिया– पता ही नहीं चला। कमरे पर पहुँचे और 'गुनाहों का देवता' पढ़ना शुरु किया।

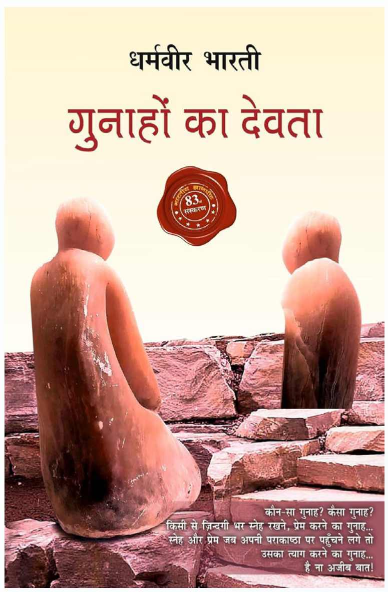

कमरे की निस्तब्धता में 'गुनाहों का देवता' पढ़ते हुए समय जैसे थम–सा गया। पन्ना–दर–पन्ना भावनाओं की तीव्रता बढ़ती रही और अंत तक पहुँचते–पहुँचते सुधा की मृत्यु ने मन को भीतर तक हिला दिया। आँखों से बहते अश्रु, सुधा को दी गई मौन श्रद्धांजलि बन गए।

यह उपन्यास केवल कथा नहीं है, बल्कि यह दिखाता है कि श्रेष्ठ साहित्य कैसे धीरे–धीरे लोकप्रिय साहित्य में बदलकर हर हृदय की धड़कन बन जाता है। चन्दर और सुधा सिर्फ पात्र नहीं रहे। वे हर हिंदी पाठक की स्मृतियों में जीवित हैं। आज भी सुधा की सरलता, उसका निष्कलुष भोलापन और रेशम–सी कोमलता मन को आंदोलित कर देती है।

यह वही साहित्य है, जो पढ़ने के बाद पाठक को खाली नहीं छोड़ता– बल्कि भीतर कहीं स्थायी छाप अंकित कर देता है।

'गुनाहों का देवता' पढ़ने के बाद धर्मवीर भारती हमारे चहेते रचनाकार बन गये। फिर तो उनकी ढेर सारी पुस्तकें पढ़ीं– सूरज का सातवाँ घोड़ा, कनुप्रिया, ठंडा लोहा, अंधा युग और भी कई रचनाएँ...

'सपना अभी भी' काव्य संग्रह के लिए 1994 में भारती जी को 'व्यास सम्मान' प्रदान किया गया। किन्तु 'गुनाहों का देवता' की बात ही कुछ और है!

धर्मवीर भारती को श्रद्धा सुमन!
(25 दिसंबर 1926 – 4 सितंबर 1997)

वरिष्ठ प्रबंधक (एमपीएल),
पीईएम, नोएडा

हिंदी का वैश्विक विकासः संभावनाएं और मार्ग

अभय कुमार

भाषा संवाद का माध्यम मात्र नहीं, बल्कि विचार से व्यवहार, व्यवहार से संस्कार और संस्कारों से संस्कृति की यात्रा का अनवरत पथ है। भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि वह जीवन–धारा है जो व्यक्ति और समाज को जोड़ती है तथा सभ्यता को दिशा देती है।

जहाँ तक हिंदी के वैश्विक विकास का प्रश्न है, यह तभी संभव होगा जब हम इसे भावनात्मक आग्रह से आगे बढ़ाकर व्यावहारिक आवश्यकता, आधुनिक सृजन और अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा के अनुरूप विकसित करें। इसके लिए कुछ ठोस कदम सहायक हो सकते हैं:

विश्वस्तरीय साहित्य का सृजन– हमें हिंदी साहित्य को उस ऊँचाई तक ले जाना होगा जहाँ वह वैश्विक सम्मान अर्जित कर सके। जैसे गैब्रियल गार्सिया मार्क्वेज़ ने One Hundred Years of Solitude स्पेनिश में लिखकर उसे विश्व साहित्य का रत्न बना दिया, वैसा ही प्रयास हमें हिंदी में करना होगा। हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि हर वर्ष हिंदी साहित्य से नोबेल पुरस्कार, बुकर पुरस्कार और अन्य वैश्विक सम्मान प्राप्त हों।

हिंदी साहित्य पहले ही अनेक अमर कृतियों से समृद्ध है। जिनमें से कुछ विशेष उल्लेखनीय हैं।

गोदान–प्रेमचंद, गबन–प्रेमचंद, मैला आँचल – फणीश्वरनाथ रेणु, तमस– भीष्म साहनी, गुनाहों का देवता – धर्मवीर भारती, आधा गाँव – राही मासूम रज़ा, कितने पाकिस्तान – कमलेश्वर, राग दरबारी – श्रीलाल शुक्ल, रेत समाधि – गीतांजलि श्री (अंतरराष्ट्रीय बुकर विजेता), कसप –मनोहर श्याम जोशी और भी कई....

इन कृतियों ने हिंदी को एक विशिष्ट पहचान दी है। अब आवश्यकता है कि इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए हिंदी साहित्य को वैश्विक मंच पर निरंतर नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया जाए।

साहित्यकारों के लिए सशक्त प्रोत्साहन– हिंदी लेखकों और कवियों के लिए प्रोत्साहन और सम्मान का स्तर बढ़ाया जाना चाहिए। साहित्य अकादमी पुरस्कार और अन्य सम्मानों की राशि इतनी हो कि रचनाकार अपनी मूलभूत चिंताओं से मुक्त होकर पूर्ण समर्पण के साथ साहित्य सृजन कर सकें।

कला–सिनेमा को संरक्षण– हिंदी सिनेमा का वैश्विक स्तर पर प्रतिनिधित्व तभी संभव है जब हम व्यावसायिक फिल्मों से इतर कला–सिनेमा को संरक्षण दें। इन्हें कर–मुक्त किया जाए ताकि निर्देशक और लेखक ऐसी फिल्में बना सकें जो ऑस्कर और अन्य अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त करने में सक्षम हों।

ज्ञान–विज्ञान में हिंदी का प्रयोग–हिंदी का विकास तभी हो सकेगा जब वह केवल साहित्य या संस्कृति तक सीमित न रहकर विज्ञान, तकनीक और शोध की भाषा बने। हमें लक्ष्य रखना चाहिए कि हमारे सभी पेटेंट और शोध–पत्र हिंदी में भी दर्ज हों। इससे हिंदी का प्रयोग अंतरराष्ट्रीय बौद्धिक मंचों पर बढ़ेगा।

सरल और व्यवहारिक हिंदी – हिंदी को सरल और व्यावहारिक बनाना समय की आवश्यकता है। इसे सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल माध्यमों पर सहज उपयोग योग्य बनाया जाए। कठिन और अप्रचलित शब्दों की जगह नए, व्यवहारिक और आधुनिक शब्दों को स्वीकार करना होगा।

हिंदी का वैश्विक विकास केवल भावनात्मक आग्रह से संभव नहीं है। इसके लिए आवश्यक है कि हम इसे साहित्य, कला, विज्ञान और संचार के सभी क्षेत्रों में प्रासंगिक, आधुनिक और प्रतिस्पर्धी बनाएं। जब हिंदी विश्वस्तरीय कृतियों और आविष्कारों की भाषा बनेगी, तभी उसका वैश्विक विकास वास्तविक अर्थों में साकार होगा।

और अंत में एक बात और स्पष्ट करना चाहूँगा–

"जबकि विदेशी भाषाओं के छिछले ज्ञान को भी शिक्षा का मानदंड मान लिया जाता है,

यदि किसी की भाषा समृद्ध हिंदी है तो यक़ीन मानिए, उसे भी विद्वान ही माना जाएगा।"

प्रबंधक (अनुरक्षण एवं सेवाएं)
सीएफएफपी, हरिद्वार

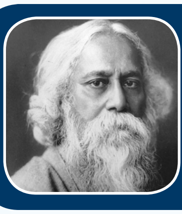

भारत की सब प्रांतीय बोलियां अपने घर में रानी बन कर रहें... और आधुनिक भारतीय भाषाओं के हार की मध्यमणि हिंदी भारत – भारती होकर विराजती रहे।

– गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर

आलेख

हिंदी के प्रयोग के लिए तकनीकी सुविधाएं

यूनिकोड एनकोडिंग क्यों?

यूनिकोड मानक सार्विक करैक्टर इनकोडिंग मानक है जिसका प्रयोग कंप्यूटर प्रोसेसिंग के लिए टेक्स्ट के निरूपण के लिए किया जाता है। कंप्यूटर पर एकरूपता के लिए एकमात्र विकल्प कैरेक्टर इनकोडिंग के लिए यूनिकोड है । इससे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर अंग्रेजी की तरह ही सरलता से 100% कार्य किया जा सकता है, कंप्यूटर पर हिंदी में सभी कार्य जैसे–वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, ई–मेल, वैबसाइट निर्माण आदि किए जा सकते हैं। हिंदी में बनी फाइलों का आसानी से आदान–प्रदान तथा हिंदी की–वर्ड पर गूगल या किसी अन्य सर्च इंजन पर सर्च कर सकते हैं।

राजभाषा विभाग ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एनकोडिंग की एकरूपता को ध्यान में रखते हुए सभी केंद्रीय कार्यालयों को कंप्यूटरों में यूनिकोड एनकोडिंग प्रणाली अथवा यूनिकोड समर्थित ओपन टाइप फोंट का ही प्रयोग करने का निदेश दिया है। अतः सभी मंत्रालय एवं अधीनस्थ कार्यालय/उपक्रम/सरकारी बैंक केवल यूनिकोड समर्थित फोंट एवं यूनिकोड एनकोडिंग के अनुरूप सॉफ्टवेयर का ही प्रयोग करें।

यूनिकोड का महत्व तथा लाभ

- एक ही दस्तावेज में अनेक भाषाओं के text लिखे जा सकते हैं।
- किसी सॉफ्टवेयर उत्पाद का एक ही संस्करण पूरे विश्व में चलाया जा सकता है। क्षेत्रीय बाजारों के लिए अलग से संस्करण निकालने की जरूरत नहीं पड़ती।

कंप्यूटरों में हिंदी में कार्य करने के लिए तीन की–बोर्ड विकल्प हैं:–

- इंस्क्रिप्ट
- रेमिंग्टन
- फोनेटिक

माइक्रोसॉफ्ट वॉयस टाइपिंग

अपनी आवाज के साथ टाइप करें, जिसे आसान तरीके से दस्तावेज़ में अपनी आवाज के साथ टाइप कर सकते हैं। यह सुविधा विंडोज 11 तथा एमएस ऑफिस के 365 वर्जन में उपलब्ध हैं।

हिंदी स्वयं शिक्षण – लीला–प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ पाठ्यक्रम

यह पैकेज विशेष रूप से सरकारी एवं अर्धसरकारी कार्यालयों, सार्वजनिक प्रतिष्ठानों, निगमों और बैंकों के उन कर्मचारियों के लिए लाभप्रद है, जो हिंदी में सभी क्रियाकलापों को संपादित करने के लिए दक्षता अर्जित करना चाहते हैं ।

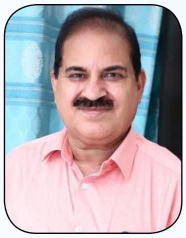

केवल कृष्ण

इस पैकेज का पूर्ण उपयोग करने के लिए प्रयोक्ता को हिंदी प्रवीण स्तर तक का वाचिक और लिखित हिंदी का पूर्व कार्यसाधक ज्ञान होना आवश्यक है। हालांकि, इसके अतिरिक्त इसका उपयोग वे लोग भी कर सकेंगे जिनकी मातृभाषा हिंदी तो है किंतु इसकी भाषा–संरचना, अभिव्यक्ति और कार्यालयीन हिंदी की तकनीकी शब्दावली के अभाव में कार्यालयीन कार्य को हिंदी में करने में अपने को पूर्णतः सक्षम नहीं कर पाते। समान रूप से यह पैकेज अध्यापकों के लिए शिक्षण में पूरक सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग किए जाने हेतु भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इस पैकेज का प्रयोग वैयक्तिक रूप में करने के साथ ही विनिर्दिष्ट प्रशिक्षण केंद्रों के माध्यम से सामूहिक स्तर पर भी हो सकता है।

लीला (LILA-Learn Indian Languages through Artificial intelligence) स्वयं शिक्षण मल्टीमीडिया पैकेज है। मोबाइल तथा वैब पर लीला हिंदी स्वयं–शिक्षण पैकेज के पाठ्यक्रम कई भाषाओं (अंग्रेजी, कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलुगु, बंगला, असमी, उड़िया, मणिपुरी, मराठी, पंजाबी, कश्मीरी, गुजराती, नेपाली तथा बोडो) के माध्यम से हिंदी सीखने के लिए, निःशुल्क उपलब्ध हैं।

Android based मोबाइल तथा टैबलेट में Play Store से lila-rajbhasha ऐप डाउनलोड कर सकते हैं।

वैब वर्जन https://rajbhasha.gov.in पर निःशुल्क उपलब्ध है।

प्रौद्योगिकी और अनुवाद उपकरण

भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा एआई आधारित अनुवाद टूल 'भाषिणी' को विकसित किया गया है, जो विभिन्न भारतीय भाषाओं में सामग्री के अनुवाद और वितरण में सहायक हैं। इस टूल के माध्यम से अंग्रेजी, संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल सभी 22 भाषाओं के साथ–साथ अवधी, भोजपुरी, ब्रज, गोंडी, काकड़ी, खासी, मगही, तुलु में भी परस्पर अनुवाद, संवाद किया जा सकता है। यह टूल वेब अधारित तथा मोबाइल वर्जन में निःशुल्क उपलब्ध है। https://anuvaad.bhashini.gov.in के माध्यम से तथा BHASHINI मोबाइल एप्प के माध्यम से एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद, टैक्सट टू स्पीच, स्पीच टू टेक्सट एवं स्पीच टू स्पीच कर सकते हैं। यह टूल Neural Machine Translation (NMT) पर आधारित है। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन में एक–एक शब्द का ट्रांसलेशन करने के बजाय पूरे वाक्य को समझकर उसका ट्रांसलेशन किया जाता है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग ने मेमोरी आधारित अनुवाद 'कंठस्थ 2.0' विकसित किया है। मशीन अनुवाद Neural Machine Translation Engine + स्मृति आधारित अनुवाद Memory based Translation पर आधारित है। यह अनूदित वाक्यों के लिए एक मिलान प्रतिशत उपलब्ध कराता है। जिन वाक्यों का अनुवाद स्मृति में

से नहीं होता है (लोकल या ग्लोबल) उन वाक्यों का अनुवाद Neural Machine Translation Engine से होता है तथा ऐसे सभी वाक्यों के आगे (NMT) लिखा होता है। प्रयोगकर्ता द्वारा पहले किए अनुवाद को स्मृति में से उपलब्ध कराता है। कंठस्थ प्रयोगकर्ताओं द्वारा ग्लोबल मेमोरी में शेयर किए गए अनुवाद में से भी उपलब्ध कराता है। वर्तमान में ग्लोबल मेमोरी में लगभग 5 करोड़ वाक्य हैं तथा प्रतिदिन 1–2 लाख वाक्य इसमें जुड़ते हैं। कंठस्थ 2.0 में डाटा सिक्योरिटी 100% है तथा 20 एमबी तक की फाइल अपलोड सुविधा तथा अनूदित फाइल को शेयर करने की सुविधा उपलब्ध है। विभिन्न 36 प्रकार के फार्मेट जैसेः– .doc, .docx, .dot, .odt, .pdf आदि की फाइल अपलोड करने की सुविधा है। कंठस्थ 2.0 में https://kanthasth.rajbhasha.gov.in या मोबाइल एप्प के माध्यम से अनुवाद कर सकते हैं।

सभी क्षेत्रों में अनुवाद की मांग को देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि विशिष्ट डिजिटल संसाधनों का उपयोग किया जाए जैसे, भाषिणी, कंठस्थ 2.0"

वरिष्ठ तकनीकी निदेशक (से.नि.)
राष्ट्रीय सूचना–विज्ञान केंद्र – राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

गुब्बारे वाला बच्चा

भगत सिंह

घूम रहा था
बीच सड़क के
पैदल पथ पर
दस–दस, के गुब्बारे बांधे
होंगे दस या बीस
बांस की लकड़ी पर लटके गुब्बारे
रंग बिरंगे तैर हवा में
छेड़ रहे थे अजब स्पंदन
एक दूजे को छेड़–छेड़ कर
मानो दो जोड़ो के कंधे
आपस में मिलकर टकराते
फिर थोड़ा हटकर मुस्काते
दी थी उसने साँसे
उन निर्जीव से दिखते
रबर के थैलों,को अपने
हिस्से की मिली साँसे भरकर
उसी साँस से जीवन पाकर
हवा तैरते और लहरते
इंद्रधनुष के रंग बिखेरे
जीवन रूपी बरखा पाकर
मन ही मन फूले गुब्बारे
बच्चों को ललचा कर अपनी ओर पुकारे,
दो गुब्बारे ले लो मुझ बच्चे से
अपने दो नन्हें बच्चों की खातिर
लौट के लेंगे , जब लौटे तो
देख के उछला खुशी दबा
पर छिपा न पाया
जाहिर होती खुशी अनोखी
जो कदमों से शुरू हुई
उनको उछला कर
हाथों की उँगली की थोड़ी
मुट्ठी बन कर
होठों में थोड़ा मुस्काकर
आँखों को करके बंद
सिरहन भरकर एक अनोखी
छोटी खुशियाँ जितनी छोटी
उनमें उतनी, बड़ी
सुकूँ की ठंडी लहरें
उर के उड़ते गरम रेत पर
टकरा कर शीतल कर जाती
मुड़कर फिर वापिस आएगी
चाँद हृदय का फिर लाएगा
लहरों से हिलते गुब्बारे
हाथ में धागा,धागे से लिपटे गुब्बारे
दो छोटे रूखे हाथों से
खुलकर जाते
दो छोटे कोमल हाथों में
बच्चे मचले दोनों
लेने वाले,देने वाले भी
पर देने वाला उससे थोड़ा
ज्यादा खुश था
पल भर की खुशी
अगले पल चिंता की रेखा
होगी माथे पर उसके
जीवन इतना कहाँ सरल है
तंगी का पल–पल पीता वो घूंट गरल है
जीवन जीना, फिर भी उसको रास है आया
जीवन में, जीवन का उसने हिस्सा पाया।।

अभियंता (वाणिज्य)
एचपीबीपी, त्रिची

संस्मरण

चुनौतियों से व्यक्तित्व विकास

आँचल चौधरी

मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं यह लिखूँगी, लेकिन अनुभव साझा करने से खुद को रोक नहीं पा रही हूं। जीवन में अचानक सदमा, दुर्घटना, अनहोनी आदि के पड़ाव आते रहते हैं। विपरीत परिस्थितियों के दौरान व्यक्ति को इसका सामना करना होता है और सर्वोत्तम संभव तरीकों से इनसे उबरना भी होता है। निःसंदेह नुकसान हम पर भारी पड़ता है, लेकिन इसमें कुछ सीख भी छिपी होती है। यदि आप इस सीखों को डिकोड करने में सक्षम हैं, तो यह आपको मजबूत और बेहतर बनाती है। विपरीत परिस्थितियों में हमारा दिमाग हमें सर्वश्रेष्ठ करने में कैसे मदद कर सकता है, यही मैंने इस लेख में उजागर करने की कोशिश की है।

मातृत्व खुशी लाता है और मैं अपनी गर्भावस्था के बारे में जानकर उतनी ही उत्साहित थी। दोनों परिवारों में जश्न और उत्साह सातवें आसमान पर था क्योंकि यह मेरे माता–पिता और ससुराल वालों के लिए पहली पोती/पोते की खबर थी। जल्द ही पता चला कि ये जुड़वाँ बच्चे हैं, मैंने तुरंत अपनी गोद में जुड़वा बच्चों की कल्पना की, हमारी खुशियाँ दोगुनी हो गईं। लेकिन कुछ दिनों बाद, रिपोर्ट में कुछ जटिलताओं की पुष्टि हुई, दुर्भाग्य से मुझे बताया गया कि गर्भावस्था को समाप्त करना होगा, वह भी सर्जरी के साथ। यह जानकर पूरे परिवार का दिल टूट गया। इसे सही करने के लिए कुछ नहीं किया जा सकता था।

आगे बढ़ें: मैं उस शाम रोई और पूरी रात सो नहीं सकी । प्रश्न जैसे "मैं ही क्यों, अभी क्यों, क्या गलत हुआ, क्यों नहीं, आदि।" मेरी तरफ बार–बार दौड़कर आये। अगली सुबह इस एहसास ने, कि इससे बचने के लिए कुछ नहीं किया जा सकता, मुझे इस तथ्य को स्वीकार करने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। मैंने फैसला किया कि मैं अब और नहीं रोऊँगी। उन चीज़ों में अपनी ऊर्जा लगाने का कोई मतलब नहीं है जिन्हें आप बदल नहीं सकते। जितनी जल्दी यह एहसास होगा, उतना अच्छा होगा। अन्यथा हम इतना प्रयास और आशा करते रहते हैं जो व्यर्थ चला जाता है, जो वास्तव में आपको बर्बाद कर देता है जिससे चीजें और भी बदतर हो जाती हैं। बेशक, भावनाओं और दुःख को एक या दो बार बाहर आने दें, लेकिन सभी के अच्छे के लिए स्थिति को बदलना होगा। खासकर तब जब यह अभी ख़त्म नहीं हुआ है ।

रचनात्मक रूप से संलग्न रहें: मैं अस्पताल में भर्ती हुई। एक हाथ से कैनोला IV(आई वी) और दूसरे हाथ से टेस्ट के लिए समय–समय पर नमूने लिए गए। लेकिन बीच–बीच में मेरा एक हाथ खाली रहता था। मैंने पेंसिल पकड़ ली और सुडोकू खेलना शुरू कर दिया। या फिर फोन पर लेख पढ़ना या संगीत/ऑडियो किताबें सुनती। जब नर्स सुई चुभाती थी, तो मैं और मेरे पति सुडोकू गेम जीतने के लिए अगली चाल पर चर्चा करते थे। इसने वास्तव में मुझे और परिवार के सदस्यों को अस्पताल में भर्ती होने के शुरुआती दिनों के दौरान चिंताओं, दर्द और बेचैनी को कम करने में मदद की। यहां तक कि नर्सें भी अब हमें देख मुस्कुराती थीं और रचनात्मक व्याकुलता के विचारों की सराहना करते हुए खेल के बारे में चर्चा करती थीं। हमारी स्थिति के बारे में प्रारंभिक दुःखद भावनाएँ धीरे–धीरे ख़त्म हो गईं क्योंकि हमने आगे देखने और रचनात्मक रूप से संलग्न होने के अलावा कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी। इससे पूरे माहौल में काफी सकारात्मकता आ गई। खोने का दुःख अब हम पर हावी नहीं हो पा रहा था, क्यूंकि हमने अपनी ऊर्जा और ध्यान दुःख से हटा कर रचनात्मक कार्यों में लगा दिया ताकि सकारात्मकता के साथ हम आगे बढ़े। निश्चित ही जो खोया उसकी भरपाई तो कोई नहीं कर सकता, लेकिन अपनी ऊर्जा को कहीं और केंद्रित करने से हम मानसिक अशांति को रचनात्मक नज़रिये में परिवर्तित कर सकते हैं।

कृतज्ञता की शक्तिः अचानक चीजें खराब हो गईं, पैरामीटर असामान्य थे, और मुझे ऑपरेशन थिएटर में ले जाने की तैयारी की जा रही थी। मैं मुश्किल से चल पा रही थी, शरीर ठंडा हो रहा था और मुझे अजीब सा महसूस हो रहा था जो मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था। आसपास के डॉक्टरों और नर्सों की बातचीत से यह स्पष्ट हो गया कि स्थिति और खराब हो सकती है, इसलिए सब जल्दी करना होगा। अब मेरे दोनों हाथ व्यस्त हो गए थे। एक हाथ से खून और दूसरे हाथ से तरल दवा शरीर में प्रवेश कर रही थी। अब मैं बस अपने जीवनसाथी, परिवार के सदस्यों और दोस्तों को मुस्कान भेज रही थी। उनकी भीगी आँखों से पता चल रहा था कि वे जानते थे कि इतने दर्द के साथ उस हालत में मुस्कुराना कितना कठिन था। किसी तरह मैंने अपने सारे आँसू रोक लिए, न जाने क्यों? जैसे ही स्ट्रेचर को ऑपरेशन थियेटर में ले जाया जा रहा था, मैंने मन ही मन सभी को धन्यवाद देना शुरू कर दिया – मेरे माता–पिता,

मेरे जीवनसाथी, मेरे दोस्त, डॉक्टर, नर्स, अब तक के जीवन में आशीर्वाद और अनुभव आदि। जैसे ही मुझे ऑपरेशन टेबल पर ले जाया गया, दो सर्जन शामिल हुए। मैंने उन्हें शुभकामनाएँ दीं – "हृदय से शुभकामनाएं, मुझे पता है कि आप मुझे बचा लेंगे। दोनों खुद को रोक नहीं पायी, मेरी आंखों में देखकर मुस्कुराईं और बोलीं– "आपको भी शुभकामनाएं। आप एक योद्धा हैं। हम सर्वश्रेष्ठ करेंगे।"जब तक एनेस्थीसिया का इंजेक्शन नहीं लगाया गया तब तक मैंने धन्यवाद देना जारी रखा। तीन घंटे बाद, मुझे होश आया, जब स्ट्रेचर को आईसीयू की ओर खींचा जा रहा था। मैं अपने परिवार और शुभचिंतकों को धुंधला–सा देख पा रही थी।

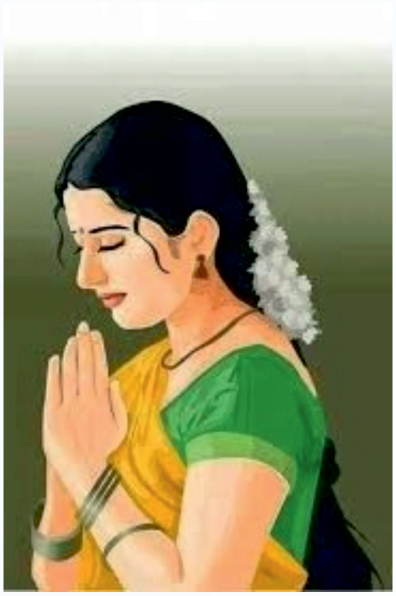

बाद में, जब मैं घर आ गई, तो मेरे पति ने मुझे बताया कि डॉक्टरों ने मुझे ऑपरेशन थियेटर में वेंटिलेटर पर रखने के लिए परिवार की सहमति ली थी, अगर स्थिति और भी ज़्यादा खराब होती। लेकिन ऑपरेशन के बाद, डॉक्टरों ने बताया कि चूंकि पैरामीटर स्थिर थे और ऑपरेशन के दौरान इसमें और गिरावट नहीं आई, इसलिए अन्य रोगियों के विपरीत, वे ऑक्सीजन मास्क के साथ इसे प्रबंधित कर पाये। यह कृतज्ञता का चमत्कार था जिसके माध्यम से मन को आराम मिला और बाधाओं को रोका गया। कल्पना करें कि एक शांत दिमाग हमारे पक्ष में कैसे काम कर सकता है, अगर हम चिंता करने और तनाव बढ़ाने के बजाय संकट में भी शांत और आभारी रहना सीख लें। लेकिन क्या उस स्थिति में ऐसा करना इतना आसान था? कुछ हद तक, हाँ! मैं पिछले 3 वर्षों से हर सुबह धन्यवाद देने का अभ्यास करती आ रही हूँ। इसलिए स्ट्रेचर पर इसे करना आसान था क्योंकि लगातार अभ्यास एक आदत बन गई है। जैसे ही मुझे स्ट्रेचर पर ले जाया गया, मैं सिर्फ धन्यवाद के बारे में सोच रही थी, न कि यह सोचने के बजाय कि क्या मैं आगे जीवित बचूंगी, आगे क्या होगा, मेरे जुड़वां बच्चों को मुझसे क्यों छीना जा रहा है, क्या कभी मातृत्व का सुख मिल पायेगा, आदि, आदि ? सबसे खराब स्थिति में, जीवन में अब तक की खूबसूरत चीजों के लिए आभारी क्यों न हों। मैं परिवार, नौकरी, दोस्त आदि जैसे कई आशीर्वादों के लिए आभारी हूं, जो अभी भी कई लोगों के लिए मात्र एक सपना हो सकता है। जीवन में हमने जो खोया है या जो हमारे पास नहीं है उस पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय हमारे पास जो आशीर्वाद हैं उनके लिए आभारी रहें। हालात बदतर भी हो सकते थे, लेकिन जब तक मैं जीवित हूं, मेरे पास अभी भी फिर से प्रयास करने और जीवन का अनुभव करने का मौका है।

अभिव्यक्ति का जादू: दर्द अपने चरम पर, आसपास के मरीजों के दर्द से कराहने की आवाज, पैनलों से अलार्म की बीप बीप बीप की आवाज। मैं शुरू में सो रही थी, लेकिन जैसे–जैसे दवाओं का असर कम होता गया, मुझे एहसास हुआ कि आसपास क्या हो रहा है। मैं अपनी बाईं ओर इंट्रा–एब्डॉमिनल ड्रेन पाइप महसूस कर पा रही थी, पेट के निचले हिस्से में तेज दर्द हो रहा था और दोनों हाथों में आईवी के माध्यम से तरल पदार्थ। मैं काफ़ी देर के लिए लगभग स्थिर हो गई क्योंकि थोड़ी सी भी हलचल इतना दर्द पैदा करता था कि अशांति बढ़ जाता थी।

इससे उबरने के लिए मैंने दिन की शुरुआत धन्यवाद देने के साथ की। धीरे–धीरे मैंने उन सभी चीजों की कल्पना करना शुरू कर दी जो मैं आईसीयू से बाहर आते ही करुँगी। जैसे मैं परिवार–दोस्तों से मिल सकती हूं और वे मेरे साथ रह सकते हैं, बात कर सकते हैं, मुझे अपने पति, परिवार और दोस्तों को जो बातें बतानी हैं, कि मैं उनसे कितना प्यार करती हूं और उन्हें जीवन में पाकर धन्य महसूस करती हूं, संगीत/ऑडियो किताबें सुन सकती हूं, सोडोकू आदि खेल सकती हूं।

इससे मैं अपना ध्यान दर्द से हटाकर आगे आने वाली चीजों की कल्पना करने की खुशी की ओर स्थानांतरित करने में सक्षम हो गई। इससे मेरे चेहरे पर मुस्कान आ गई और मुस्कुराहट संक्रामक होती है। आस–पास के कर्मचारी और डॉक्टर मुझे मुस्कुराता देख मुस्कुराने लगते। जल्द ही हमने एक दूजे से एक अंजाना सा बंधन विकसित कर लिया। अगली शाम मुझे ज़मीन पर खड़ा कर दिया गया। हालाँकि इतनी सारी चीज़ें अभी भी मुझसे जुड़ी हुई थीं, इसलिए चलना संभव नहीं था। अगली दोपहर मुझे आईसीयू से कमरे में शिफ्ट कर दिया गया। जाने से पहले आईसीयू की नर्स ने मुझे कसकर गले लगाया और कहा– "खुश रहो और मैं चाहती हूं कि तुम्हें दोबारा अंदर न देखूं। मैं अभी भी उस आलिंगन की गर्माहट को संजोकर रख सकती हूं।

मैं मुश्किल से ही कुछ भी पचा पाती था, यहां तक कि पानी भी नहीं। इस हालत में अस्पताल से छुट्टी मिलना काफी दूर की बात थी। दाहिनी नासिका से आरटी (राइल्स ट्यूब) डाला गया। डॉक्टर ने मुझे सामान्य स्थिति में आने के लिए जितना हो सके चलने के लिए कहा। बाईं ओर ड्रेन पाइप और दाईं ओर आरटी टैग के साथ, हाथों में IV के साथ, चलने की कल्पना करना कठिन था। मेरे पति ने दाईं ओर से मुझे सहारा दिया और नर्स ने बाईं ओर से, मैंने दोनों को पकड़ लिया और गलियारे की ओर बढ़ गई। मैं आसपास के लोगों को देख सकती थी, कई अजनबी, कुछ परिचित। चलना कठिन था, लेकिन आवश्यक था। अगले दिन, जैसे ही मैंने चलना शुरू किया, एक खयाल आया। मैं ऐसी कल्पना करने लगी जैसे मैं पुरस्कार लेने के लिए मंच पर जा रही हूं और आसपास के लोग मेरा उत्साह बढ़ा रहे हैं। मैं उत्साह से भर गई और बाकी मरीजों की मुस्कुराहट के आदान–प्रदान ने इसे और भी फायदेमंद बना दिया।

मैं ऐसे चल रही थी जैसे पहले कभी नहीं चली थी, मुस्कुराते हुए और

आंखों से हाथ हिलाते हुए गुजर रही थी। उस स्थिति में किसी न किसी तरह से पीड़ित अजनबियों के मुस्कुराते चेहरे किसी पुरस्कार से कम नहीं थे। हर चाल के साथ, अजनबी अनजान दोस्तों में बदल गए जो मुझे मुस्कुराहट लौटाने का इंतज़ार कर रहे थे।

जब हम दिन की आखिरी सैर कर रहे थे, तो नर्स ने मुझे रुकने के लिए कहा, जिस पर मैं एक और चक्कर पूरा करने के बाद सहमत हो गई। अगले दिन, मेडिकल पैरामीटर सामान्य होने पर आरटी (राइल्स ट्यूब) से दवा देना बंद कर दिए गया और शाम तक मुझे पानी पीने की अनुमति दी गई। डॉक्टर खुश थे कि यह काम कर गया और उन्होंने मुझे चलना जारी रखने के लिए कहा। अगली सुबह नाश्ता परोसा गया। दोपहर तक डिस्चार्ज की औपचारिकताएं शुरू कर दी गईं। अगले दिन मुझे छुट्टी दे दी गई।

यह सब इस जादू के कारण हुआ कि जो गलत हुआ उसके लिए शिकायत करने से ध्यान हटाकर, जो सही हुआ या हो रहा है और आगे भविष्य में सही हो सकता है उसके लिए प्रशंसा करने और उसके लिए कृतज्ञ होने की ओर गया और मेरे सपने उन्हें हकीकत में बदलने का इंतजार कर रहे थे।

जीवन का जश्न मनाएं: घर पर माहौल में ढलने में कुछ दिन लग गए। ऑपरेशन के बाद शुरुआती कुछ दिनों तक जीवन पहले जैसा नहीं रहता। छोटी–छोटी चीजों के लिए भी आप निर्भर रहते हैं। हमने कॉमेडी शो/फिल्में देखीं, अच्छी यादों के बारे में बात की और ठीक होते ही क्या–क्या करना है, की योजना बनाना शुरू कर दिया – हमारी अगली छुट्टियाँ, क्या सृजन करना है , भाग लेने के लिए उत्सव व कार्यक्रम, दोस्तों और परिवार के साथ मिलना–जुलना। कुछ ही दिनों में मैं 5–10 मिनट तक चलने में सक्षम हो गई।

मैंने ''रचनात्मक रूप से संलग्न रहें'' के सिद्धांत का उपयोग करने के लिए अपना लैपटॉप चालू किया। तकनीकी आलेख लेखन का निमंत्रण था। इस अवस्था में, हालाँकि मैं अधिक देर तक बैठ नहीं सकती थी, फिर भी मैंने प्रतिदिन 2–3 पंक्तियाँ खड़े होकर लिखना शुरू कर दिया। फिर मैं 5 मिनट तक टहलूंगी और फिर कुछ देर आराम करूंगी। प्रत्येक दिन, मैं थोड़ी प्रगति कर रही थी। कुछ दिनों तक कोई प्रगति नहीं हुई। लेकिन उन छोटी प्रगतियों के लिए, हमने जश्न मनाया। इसने मुझे और परिवार के सदस्यों को सशक्त बनाया। मैंने अपना लेख समय सीमा से ठीक पहले लिखकर जमा कर दिया। सौभाग्य से, लेख को पुरस्कृत भी किया गया। हमने इसे भी उतने ही उत्साह से मनाया जैसे कि बड़ी उपलब्धि हो।

जीवन में हम संपत्ति, पदोन्नति आदि जैसी बड़ी उपलब्धियों के लिए दौड़ते रहते हैं और समय के साथ जीवन का जश्न मनाना भूल जाते हैं। यदि हम जीवन में छोटी–छोटी चीजों का जश्न मनाते हैं, तो जीवन आनंदमय हो जाता है और हम बड़ा लक्ष्य हासिल करने के लिए और भी अधिक प्रेरित होते हैं। हम इस बात का इंतजार करते हैं कि दूसरे हमारे लिए जयकार करें, लेकिन हम शायद ही कभी अपने लिए जयकार करते हैं। आइए, एक आदत बनाएं कि चाहे कुछ भी हो, मैं रोजाना अपने लिए जयकार करूंगी, भले ही कोई दूसरा मेरे साथ आए न आए।

ट्रैक पर रहें: इस दौरान , घर पर कई दोस्त, रिश्तेदार और सहकर्मी मुझसे मिलने आए और हमने बातें की और हंसे। जिस क्षण बातचीत दर्दनाक यादें, नुकसान और मेरे कष्टों पर चलती थी, हम इसे मज़ेदार यादों या बात करने के लिए किसी दिलचस्प चीज़ की ओर मोड़ देते थे। बार–बार दर्द महसूस करना आपको नकारात्मक चक्र में डाल देता है जो आपको अवसाद, पीटीएसडी (पोस्ट ट्रॉमैटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर), ओसीडी, चिंता आदि की ओर ले जाता है। इसके बारे में बात न करना या न सोचना ही काफी नहीं है, लेकिन इसके लिए आपको अपने दिमाग को रचनात्मक विचारों और रचनात्मक गतिविधियों में लगाना होगा।

दुनिया हर तरह के लोगों से भरी है। मेरी चिकित्सीय स्थिति जानने के बावजूद, कुछ कुख्यात लोगों ने परपीड़क आनंद के लिए मुझे नीचा दिखाने की पूरी कोशिश की। अपनी ऊर्जा और प्रयासों को उनमें निवेश करने के बजाय, मैंने उन्हें वैसे ही स्वीकार करके सकारात्मकता के पथ पर बने रहना जारी रखा और फिर लेख–लेखन, कविता, पेंटिंग आदि जैसे रचनात्मक कार्यों की ओर बढ़ गई।

आज जब मैं यह लेख लिख रही हूं, मैं 25–30 मिनट तक खड़े होकर लिख पा रही हूं। जब मैंने लेख लिखने के बारे में सोचा, तो मैं अपने पूरे अनुभव – जुड़वाँ बच्चों को खोने, सर्जरी और घर पर वर्तमान रिकवरी

चरण के अलावा कुछ और नहीं सोच पा रही थी। यह सब मुझे गहराई से छू गया। आशा है कि यह लेख आपको कठिन समय में अपनी दिमागी शक्ति का उपयोग करने और इससे निपटने के लिए रचनात्मक तरीके खोजने के लिए प्रेरित करेगा। कोई भी ज्ञान तब तक शक्तिशाली नहीं होता जब तक उसे प्रयोग में न लाया जाए। यदि हम इन सिद्धांतों को अपने दैनिक जीवन में छोटी–छोटी घटनाओं में लागू करें, तो बहुत जल्द हम निश्चित रूप से पार पाने में सक्षम होंगे।

प्रबंधक (बीओपी)
पीईएम, नोएडा

सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि

तरुण मंडल

सत्यनिष्ठा का अर्थ है सच्चाई और नैतिकता के साथ जीवन जीना। इसका सीधा संबंध ईमानदारी, विश्वास और जिम्मेदारी से है, जो किसी भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास का आधार होता है। जब राष्ट्र के नागरिक सत्यनिष्ठा का पालन करते हैं, तो राष्ट्र का हर क्षेत्र –सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक प्रगति करता है। सत्यनिष्ठा की संस्कृति केवल व्यक्तिगत जीवन को ही सशक्त नहीं बनाती है बल्कि पूरे राष्ट्र की समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है।

सत्यनिष्ठा का महत्वः

सत्यनिष्ठा न केवल व्यक्तिगत उन्नति के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज और राष्ट्र के विकास के लिए भी आवश्यक है। सत्यनिष्ठा का अर्थ केवल सत्य बोलना ही नहीं है बल्कि अपने कार्यों और व्यवहार में सच्चाई और ईमानदारी को भी बनाए रखना है। जब लोग ईमानदारी से अपने कार्य करते हैं, तो वे अपने चारों ओर एक विश्वास और पारदर्शिता के वातावरण का निर्माण करते हैं।

सत्यनिष्ठा के बिना समाज में भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी और अनैतिकता का विस्तार होता है, जो राष्ट्र के विकास के लिए सबसे बड़ी बाधाएं हैं। सत्यनिष्ठ व्यक्ति और संस्थान समाज में विश्वास की भावना को बढ़ावा देते हैं, जिससे सामाजिक ढांचे में स्थिरता और सुरक्षा बनी रहती है। यही कारण है कि सत्यनिष्ठा को समाज का आधारभूत गुण माना जाता है।

राष्ट्र की समृद्धि में सत्यनिष्ठा की भूमिकाः

राष्ट्र की समृद्धि केवल आर्थिक विकास से नहीं होती, बल्कि नैतिक मूल्यों पर आधारित एक सशक्त और ईमानदार समाज के निर्माण से होती है। जब देश के नागरिक सत्यनिष्ठा का पालन करते हैं, तो समाज में नैतिकता और विश्वास की भावना उत्पन्न होती है, जो समृद्धि और विकास के लिए अनिवार्य है।

भ्रष्टाचार किसी भी राष्ट्र की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है। यह समाज में असमानता और अन्याय को भी बढ़ावा देता है। जब शासन व्यवस्था और नागरिक सत्यनिष्ठा का पालन करते हैं, तो शासन में पारदर्शिता आती है और जनता का सरकार पर विश्वास बढ़ता है, जिससे विकास योजनाओं का सही ढंग से क्रियान्वयन होता है।

जब एक राष्ट्र के सभी संस्थान, जैसे सरकार, व्यापारिक संस्थाएं और शैक्षिक संस्थान, ईमानदारी से काम करते हैं, तो यह न केवल समाज में विश्वास और न्याय की भावना को मजबूत करता है, बल्कि यह राष्ट्र के आर्थिक विकास को भी गति देता है।

सामाजिक विकास में सत्यनिष्ठा का प्रभावः

सत्यनिष्ठा का सबसे बड़ा प्रभाव समाज पर पड़ता है। इससे समाज में विश्वास, सहयोग और एकता की भावना बढ़ती है। समाज के विभिन्न वर्गों के बीच आपसी समझ और सहिष्णुता बढ़ती है, जिससे सामाजिक ढांचा मजबूत होता है।

सत्यनिष्ठा से समाज में अपराध और अन्य अनैतिक गतिविधियों में कमी आती है। जब लोग नैतिकता का पालन करते हैं, तो समाज में एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण होता है, जिसमें लोग एक–दूसरे के प्रति सम्मान और ईमानदारी से पेश आते हैं। इस प्रकार, सत्यनिष्ठा से समाज में शांति और स्थिरता का निर्माण होता है, जो किसी भी राष्ट्र के समृद्ध भविष्य के लिए आवश्यक है।

राजनीति और प्रशासन में सत्यनिष्ठा की भूमिकाः

राजनीति और प्रशासन में सत्यनिष्ठा का पालन करना किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब राजनेता और प्रशासनिक अधिकारी सत्यनिष्ठा से कार्य करते हैं, तो शासन व्यवस्था में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व आता है और देश की अंतरराष्ट्रीय छवि भी मजबूत होती है और विदेशों से निवेश और सहयोग आकर्षित होता है। इससे जनता का सरकार और प्रशासन पर विश्वास बना रहता है और शासन की योजनाओं का सही कार्यान्वयन होता है।

आर्थिक विकास में सत्यनिष्ठा का योगदानः

आर्थिक क्षेत्र में सत्यनिष्ठा का पालन करने से व्यापार और उद्योगों में पारदर्शिता आती है। इससे निवेशकों और व्यापारियों का विश्वास बढ़ता है, जो किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति के लिए आवश्यक है। जब व्यापारिक संस्थाएं और सरकार सत्यनिष्ठा का पालन करती हैं, तो यह देश की आर्थिक स्थिति को स्थिर करता है और दीर्घकालिक विकास की दिशा में कदम बढ़ाता है।

युवा पीढ़ी के लिए सत्यनिष्ठा का महत्वः

युवा पीढ़ी किसी भी राष्ट्र का भविष्य होती है। यदि युवाओं में सत्यनिष्ठा का मूल्य बचपन से ही विकसित किया जाए, तो वे समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं। शिक्षा के माध्यम से सत्यनिष्ठा के महत्व को समझाया जा सकता है, जिससे युवा अपने कार्यों में ईमानदारी और नैतिकता का पालन कर सकें। वे भविष्य में एक ईमानदार और समृद्ध समाज का निर्माण करने में सक्षम होंगे, जो देश के लिए दीर्घकालिक समृद्धि और सफलता सुनिश्चित करेगा।

निष्कर्षः

सत्यनिष्ठा की संस्कृति राष्ट्र की समृद्धि का आधार है। जब देश के नागरिक, नेता और संस्थान सत्यनिष्ठा के साथ कार्य करते हैं, तो राष्ट्र में पारदर्शिता, विश्वास और शांति का वातावरण बनता है। यह न केवल आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करता है बल्कि समाज में स्थिरता और न्याय की भावना भी उत्पन्न करता है। समाज में विश्वास और नैतिकता को भी बढ़ावा देती है, जो किसी भी राष्ट्र की समृद्धि के लिए आवश्यक हैं।

वरि. अभियंता (एम एण्ड एस)
सीएफएफपी, हरिद्वार

कहानी

रिश्तेदारी

पार्क से खेलकर घर आया तो देखा, पापा अभी–अभी पहुँचे थे और मोज़े उतार रहे थे। मुझे देखते ही बोले –

"कृष्णू, इधर आओ।"

मैंने सुना तो सही, पर फुटबॉल को गार्डन में किक मारता रहा। खेल मेरा शौक है। भाई को बास्केटबॉल और शतरंज पसंद है, पर मुझे फुटबॉल अकेले ही खेलना पड़ता है। इस बार स्कूल की टीम में जगह बनाना चाहता हूँ।

पापा की आवाज़ फिर आई –

"कृष्णू....।"

अब अनसुना करना ठीक नहीं था। गुस्सा बढ़ता तो डाँट भी पड़ती। मैं अंदर गया। पापा सोफ़े पर बैठे मोबाइल दिखा रहे थे। उसमें लिखा था कि सरकार ने 23 नस्लों के कुत्तों को पालने पर रोक लगा दी है।

पापा का यह पोस्ट दिखाना खास था। क्योकि मुझे कुत्तों से लगाव है। पालतू कुत्ता रखने की कोशिश कई बार की, रोया भी, पर हर बार मौका निकल गया। कभी मम्मी के घुटनों का दर्द, कभी उनकी डाँट।

मेरे लिए सहारा है – कल्लू। वह गली का देसी कुत्ता है, लेकिन मेरे लिए किसी पालतू से कम नहीं।

कल्लू काले–सफेद रंग का है। मुझे देखते ही उछलने–कूदने लगता है और मेरे साथ दौड़ पड़ता है। उसकी अपनी कहानी भी है। बचपन में हादसे में उसने एक आँख खो दी। कुछ दाँत और एक टाँग भी चोटिल हो गई।

जब हम तीसरी मंज़िल पर रहते थे, तब उससे डरते थे। लोग कहते थे कि वह बीमार है। हम बचकर निकलना ही बहादुरी समझते थे। बाद में समझ आया कि कल्लू बुरा नहीं है। अब तो पूरा परिवार उसे मानता है। मम्मी भी बचे चावल या दूध में भीगी रोटियाँ देती हैं।

घर कोई मेहमान आए तो कल्लू गेट पर पहरा देता है। भौंकता है ताकि दूसरा कुत्ता पास न आए और मेहमान सुरक्षित रहें। लोग उसके भौंकने से डर जाते हैं। तब मेरी ड्यूटी होती है कि उसे दौड़ाकर दूर ले जाऊँ।

कल्लू के साथ दौड़ना मुझे खेल जैसा लगता है। मुझे खुशी मिलती है और शायद उसे भी। वह मेरे लिए दोस्त से भी बढ़कर है।

भाई मज़ाक में कहता है – "कल्लू तेरा रिश्तेदार है, कल्लू–आद्यंत; भाई–भाई।"

रिश्तेदारी की बात पर मन में सवाल आते हैं। क्या कभी मनुष्य और कुत्ते एक ही वंशज थे? विज्ञान कहता है कि कभी ऐसा था। वे चार पैरों वाले रह गए और हम दोपाए बन गए।

आद्यंत बरनवाल

तो क्या धरती पर रहने का अधिकार हम दोनों का बराबर नहीं है? फिर हम क्यों तय करते हैं कि यह केवल इंसानों की है?

हाल के सालों में कुत्तों के हमले की घटनाएँ बढ़ी हैं। बच्चे और बूढ़े घायल हुए हैं। यही कारण है कि सरकार ने रोक और नियम बनाए। लेकिन इससे बहुत से कुत्ते भूख से मर जाएँगे।

एक तरफ़ है 'जियो और जीने दो' का सिद्धांत। दूसरी तरफ़ समाज से उनका बहिष्कार। सवाल उठता है कि ये बेजुबान कहाँ जाएँगे? क्या कोई जगह है जहाँ केवल कुत्ते रहें और चैन से जी सकें?

इन सवालों के जवाब मेरे पास अभी नहीं हैं। शायद बड़ा होकर समझ पाऊँ।

कल ही अख़बार में पढ़ा। सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया है कि पकड़े गए आवारा कुत्तों को नसबंदी और टीकाकरण के बाद उसी जगह छोड़ा जाए। केवल बहुत आक्रामक या बीमार कुत्तों को अलग रखा जाएगा। साथ ही, लोगों और कुत्तों दोनों की सुरक्षा के लिए फीडिंग ज़ोन बनाए जाएँगे।

यह पढ़कर लगा कि शायद कल्लू जैसे कुत्तों की ज़िंदगी आसान होगी। अगर मनुष्य और कुत्ते दोनों सीमाएँ समझें और एक–दूसरे का सम्मान करें, तो रिश्तेदारी और भी गहरी हो सकती है।

आद्यंत बरनवाल
पुत्र–श्री धनंजय कुमार बरनवाल
अभियंता, निदेशक (आईएस एण्ड पी सचिवालय)
उद्योग क्षेत्र, नई दिल्ली

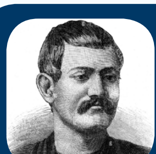

अपनी बात को इस देश में आखिरी व्यक्ति तक पहुंचाने का सरलतम मार्ग है हिन्दी। क्योंकि हिन्दी भारत के जन – सामान्य की आत्मा में बसती है।

– आचार्य केशवचन्द्र सेन

स्मार्टनेस

नवीन जीनगर

शाम का समय था, हल्का अंधेरा होने लगा था और मैं अपने घर के पास बने बगीचे में टहल रहा था। चारों ओर जीवन की हलचल फैली हुई थी—कहीं बच्चे खेलों में मग्न थे, कहीं लोग खुले आसमान के नीचे लगे व्यायाम उपकरणों पर पसीना बहा रहे थे, तो कहीं कोई अपने कुत्ते को टहलाने निकला था। उसी चहल–पहल के बीच मैं बगीचे की पगडंडी पर चल रहा था कि अचानक मेरी नज़र एक व्यक्ति पर पड़ी। वह अपने बच्चों के साथ खेल रहा था। न जाने क्यों, उस पल मेरे मन में तुरंत एक विचार आया – "यह व्यक्ति वाकई स्मार्ट है"।

मैं आगे बढ़ता चला गया, लेकिन उस विचार ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया। आख़िर ऐसा क्या था जिसने मेरे मन को यह कहने पर विवश कर दिया कि वह व्यक्ति स्मार्ट है? वह कौन–सी ऐसी विशेषताएँ थीं जो मुझे एक क्षण में ही उसके बारे में यह निर्णय लेने पर मजबूर कर गईं ?

मैंने खुद से प्रश्न किया—क्या यह उसका अच्छा रूप–रंग था? क्या उसका पहनावा? या फिर उसकी भाषा? या कुछ और?

क्या अच्छा रूप–रंग किसी को स्मार्ट बना सकता है?

हम सबका रूप–रंग, नैन नक्श और त्वचा का रंग हमें हमारे माता–पिता से विरासत में मिलता है। यह हमारे जीन (genes) का हिस्सा है। इसी तरह हमारा शरीर उस भोजन से बनता है जो हम खाते हैं क्योंकि जब हम पैदा होते है तो छोटे से होते है। देखा जाए तो इन बातों पर हमारा बहुत अधिक नियंत्रण नहीं होता। इसलिए रूप–रंग या शारीरिक विशेषताएँ किसी व्यक्ति की स्मार्टनेस को परिभाषित नहीं करतीं।

कई बार बहुत आकर्षक और सुंदर दिखने वाला व्यक्ति भी मूर्खतापूर्ण काम कर सकता है। इसलिए केवल सुंदरता को स्मार्टनेस का पैमाना नहीं बनाया जा सकता।

और अगर पहनावे की बात करें—तो कपड़े निश्चित रूप से व्यक्तित्व पर असर डालते हैं, पर वे किसी के वास्तविक स्मार्ट होने की प्रमाण नहीं हैं। क्योंकि जिस व्यक्ति को मैंने देखा, उसने साधारण–सा सफेद पायजामा और एक टी–शर्ट पहन रखी थी। कोई विशेष आकर्षक या महंगे कपड़े नहीं। यह देखकर स्पष्ट हुआ कि स्मार्टनेस का ताल्लुक केवल कपड़ों या बाहरी दिखावे से नहीं होता।

क्या भाषा किसी को स्मार्ट बनाती है?

हमारे भारतीय समाज में अक्सर यह धारणा देखने को मिलती है कि जो लोग अंग्रेजी में धाराप्रवाह बोलते हैं, वह स्मार्ट माने जाते हैं। परंतु सच तो यह है कि अंग्रेजी भी केवल एक भाषा है—जैसे हिंदी, तमिल, बांग्ला या कोई और भाषा। यह केवल संवाद का माध्यम है, स्मार्टनेस का पैमाना नहीं।

सोचिए, कितनी बार हम बिना कोई शब्द बोले, केवल हावभाव या भावनाओं से एक–दूसरे तक अपनी बात पहुँचा देते हैं। इसका मतलब यह है कि संवाद केवल भाषा पर निर्भर नहीं करता। इसलिए अंग्रेजी बोलना या न बोलना किसी को स्मार्ट नहीं बनाता।

तो फिर स्मार्टनेस क्या है?

मेरे अनुभव के अनुसार स्मार्टनेस की असली पहचान है–

"आप क्या कहते हैं और कैसे कहते हैं"।

आपके शब्द और उनकी प्रस्तुति ही आपको स्मार्ट बनाती है। एक कहावत है–

"शब्द घाव भी दे सकते हैं और शब्द मरहम भी बन सकते हैं।"

यानि कि हमारे शब्द किसी को आहत भी कर सकते हैं और किसी का दिल जीत भी सकते हैं। स्मार्ट वही है जो अपने शब्दों का चुनाव समझदारी से करे और उन्हें **स्नेह, करुणा** और **सम्मान** के साथ कहे।

जिस व्यक्ति को मैंने बगीचे में देखा, वह अपने बच्चों से खेलते समय उन्हें बड़े प्यार और आदर से खेल सिखा रहा था। उसके हर शब्द में दया, अपनापन और कोमलता झलक रही थी। शायद यही वह कारण था, जिसने मुझे यह सोचने पर मजबूर किया कि यह व्यक्ति स्मार्ट है।

स्वयं पर काम करना ज़रूरी है

स्मार्टनेस कोई जन्मजात गुण नहीं है। यह एक आदत है, जिसे हम अपनी सोच और अपने शब्दों से विकसित कर सकते हैं।

हमें थोड़ा समय खुद के लिए निकालना चाहिए और सोचना चाहिए – **मैं क्या कह रहा हूँ? और कैसे कह रहा हूँ?**

यही दो बातें आपके व्यक्तित्व को गढ़ती हैं।

स्मार्टनेस शब्द का प्रयोग क्यों?

हिंदी में **"स्मार्टनेस"** शब्द से कई अर्थ निकाले जा सकते हैं। इसे **विवेकशीलता, बुद्धिमत्ता, चतुराई** या **सजगता** के रूप में समझा जा सकता है। यदि सही शब्द चुनना हो तो **"विवेकशीलता"** और "बुद्धिमत्ता" सबसे उपयुक्त प्रतीत होते हैं।

लेकिन फिर भी मैंने इस लेख में जानबूझकर अंग्रेजी का शब्द **"स्मार्टनेस"** प्रयोग किया है। क्योंकि यह एक ऐसा शब्द है जो इन सभी गुणों, अच्छी समझ, सही निर्णय, बोलचाल की कला, व्यक्तित्व का प्रभाव और दूसरों के प्रति सम्मान को एक साथ समेट लेता है।

निष्कर्ष

मेरे दृष्टिकोण से स्मार्टनेस का असली अर्थ है–"शब्दों का संयम, संवाद की कला और दूसरों के प्रति सम्मान"।

सुंदरता या भाषा किसी की स्मार्टनेस का सही पैमाना नहीं हो सकती।

यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव और विचार है। हो सकता है आपकी राय अलग हो और मैं उस राय का पूरा सम्मान करता हूँ। लेकिन मेरी नज़र में, **जब आप अपने शब्दों में प्रेम, करुणा और आदर को शामिल करते हैं, तभी आप वास्तव में स्मार्ट कहलाते हैं।**

प्रबंधक (वित्त)
कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

ऑपरेशन सिंदूर

प्रतिभा शाही

स्वर्ग सी सुंदर धरती की
गरिमा पर तुम ने प्रहार किया
पहलगांव के पावन आँचल पर
रक्तिम लाल बौछार किया
क्या मिलता है तुम को
निर्दोषों का लहू बहा करके
हंसते खेलते परिवारों को
आतंकी दहशत से तबाह करके
बिंदी रोई, चूड़ा रोया
घायल पिता को धराशाई देखकर
नन्हा दिल कितना घबराया
कैसे भूलेंगी आँखें
दहशत भरा वो खूनी मंजर
कोई कुसूर नहीं था जिनका
क्यों थे उनके सीने पर खंजर
तुमने कहा था बतला देना
अपने सत्ताधीशों को
कैसे तेरी आँखों के सामने
मिटाया तेरे सिंदूर को

अहिंसा के समर्थक हैं हम
हमको शांति प्यारी है
लेकिन, कायरों तुम्हारी चुनौती का
अब जबाब देना बहुत ज़रूरी है
मांगे हुए हथियारों के दम पर
तुम औकात अपनी भूल गए

सन इकहत्तर और निन्यानवे के युद्ध में
तुम मात अपनी भूल गए
तेरी गुस्ताखियों को
कितनी बार हम माफ़ करेंगे
तेरी हर हिमाकत का
अब चुकता हम हिसाब करेंगे

तेरी आतंकी ठिकानो को
चुन चुन कर हमने नष्ट किया
तेरे सैन्य शक्ति को तो
सिर्फ दो दिन में ही ध्वस्त किया
मांगे हुए ड्रोन और बारूद
काम ना तेरे आ सकें
भारतीय मिसाइलों के कहर से
कोई ना तुझे बचा सकें
भारतीय सैनिक और राजनैतिक
शक्तियों ने
मिलकर तुम पर वार किया
सिंधु जल संधि का निलंबन और
बंद तेरे साथ सब व्यापार किया
अपनी लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था को
धीरे–धीरे अब संभालना तुम
भारतीय संस्कृति में सिंदूर की कीमत
अब कभी ना भूलना तुम

वरि. प्रबंधक (ट्रैक्शन इंजीनियरिंग)
ईडीएन, बेंगलूरु

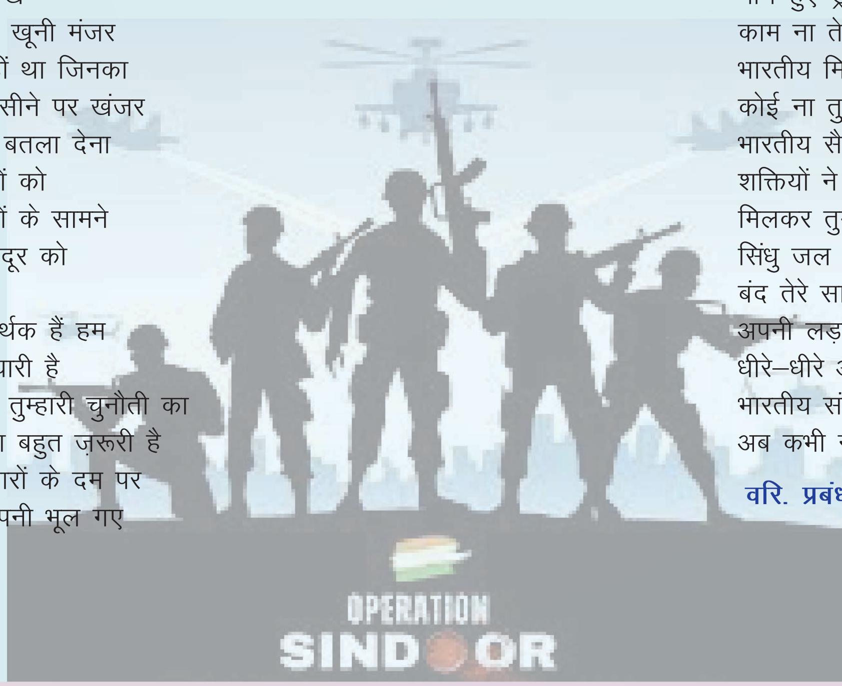

हिंदी की शक्तिः वैश्विक व्यापार में सफलता की कुंजी

प्रवीण लाखे

वैश्विक आर्थिक और व्यापारिक परिदृश्य में भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम नहीं रह गई हैं, बल्कि वे व्यवसाय की सफलता में रणनीतिक संसाधन बन चुकी हैं। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भाषा का महत्व उसे बोलने वाले लोगों की संख्या के आधार पर मिलता है। हिंदी, जो कभी केवल भारत के कुछ हिस्सों में बोली जाने वाली एक भाषा थी, आज वैश्विक व्यापारिक परिदृश्य में एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभरी है। इसका प्रमुख कारण है विश्व में 100 करोड़ से भी अधिक लोगो द्वारा हिंदी को जानना, समझना एवं बोलना।

आज भारत की राजभाषा हिंदी की न केवल एक सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान है, बल्कि वैश्विक व्यापार में भी यह तेजी से प्रभावी भूमिका निभा रही है। वैश्विक कंपनियाँ अब हिंदी को केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व स्तर पर उपभोक्ताओं से जुड़ने के लिए एक रणनीतिक शक्ति के रूप में देख रही हैं। आर्थिक विकास के इस दौर में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अब हिंदी को केवल संचार के माध्यम के रूप में नहीं, बल्कि सीधे करोड़ों ग्राहकों तक पहुँचने और व्यापार को बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीतिक साधन के रूप में देख रही हैं।

हिंदी का विकास

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत के सांस्कृतिक विकास और राष्ट्रीय पहचान की प्रतीक है। इसके विकास की लंबी और गौरवपूर्ण यात्रा है, जो सदियों से चली आ रही है। भक्ति आंदोलन के दौरान संतों द्वारा जन–जन तक पहुँचाई गई यह भाषा, स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्र को एकजुट करने का महत्वपूर्ण माध्यम बनी। इसी महत्व को समझते हुए, 14 सितंबर 1949 को इसे राजभाषा का संवैधानिक दर्जा दिया गया। आज, हिंदी का प्रभाव भारत से परे वैश्विक मंच तक पहुँच गया है, जहाँ डिजिटल क्रांति और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की रणनीतियों ने इसे एक शक्तिशाली माध्यम बना दिया है। यह बढ़ती स्वीकार्यता और शक्ति हिंदी को वास्तव में राष्ट्र के स्वाभिमान का सच्चा प्रतीक बनाती है।

हिंदी का वैश्विक विस्तार

हिंदी का वैश्विक विस्तार आज केवल भाषा के स्तर पर सीमित नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रभाव की दिशा में एक सशक्त कदम बन चुका है। विश्व के अनेक देशों, जैसेः अमेरिका, कनाडा, मॉरीशस, फिजी, संयुक्त अरब अमीरात और यूनाइटेड किंगडम आदि देशों में हिंदी भाषी समुदाय के लोग न केवल संख्या में बढ़ रहे हैं, बल्कि वहाँ की सामाजिक संरचना और व्यापारिक गतिविधियों में भी सक्रिय योगदान दे रहे हैं। भारतीय सिनेमा, योग, आयुर्वेद और संगीत के वैश्विक प्रसार ने हिंदी को एक सांस्कृतिक सेतु बना दिया है। साथ ही, डिजिटल युग में सोशल मीडिया, ऑनलाइन शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी की बढ़ती उपस्थिति इस बात का प्रमाण है कि यह भाषा सीमाओं से परे जाकर विश्व संवाद का एक सशक्त माध्यम बन रही है। आज हिंदी केवल भारत की पहचान नहीं, बल्कि वैश्विक चेतना का हिस्सा बन चुकी है। विश्व बैंक और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थानों ने भी भारत की आर्थिक भूमिका और हिंदी भाषी बाजार की महत्ता को स्वीकार किया है।

हिंदीः वैश्विक व्यापार की स्थानीय रणनीति

भारत की तेज़ी से उभरती अर्थव्यवस्था, जनसंख्या की विशालता और बदलते उपभोक्ता व्यवहार ने वैश्विक व्यापार जगत को एक नए दृष्टिकोण के साथ भारत की ओर आकर्षित किया है। इसी परिप्रेक्ष्य में, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ यह भली–भांति समझ चुकी हैं कि भारत जैसे विविधतापूर्ण बाजार में उपभोक्ताओं तक पहुँचने के लिए केवल उत्पाद या सेवाएं पर्याप्त नहीं, बल्कि भाषा और भावनात्मक जुड़ाव भी उतना ही आवश्यक है। हिंदी, जो कि देश की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है, अब मार्केटिंग और ब्रांड संचार का एक रणनीतिक औजार बन गई है। जब ब्रांड उपभोक्ता की भाषा में संवाद करते हैं, तो उपभोक्ता केवल उत्पाद ही नहीं खरीदते है बल्कि अनुभव, विश्वास और अपनापन भी खरीदते हैं। यही कारण है कि कोका–कोला, अमेज़न, गूगल, पेप्सी जैसी विश्वस्तरीय कंपनियाँ अपने विज्ञापन, इंटरफेस और ग्राहक सेवा में हिंदी को समाहित कर रही हैं। हिंदी के प्रयोग से न केवल उपभोक्ताओं की भावनाओं को स्पर्श किया जा रहा है, बल्कि ब्रांड की स्वीकार्यता और पहुँच को भी उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया जा रहा है। यह स्पष्ट संकेत है कि हिंदी अब एक मात्र भाषा नहीं, बल्कि व्यापारिक सफलता की कुंजी बन चुकी है।

बहुभाषावाद और कोड–मिश्रणः आधुनिक संचार की नई भाषा–नीति

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में बहुभाषावाद केवल भाषाओं का सह–अस्तित्व नहीं, बल्कि विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का संगम बन चुका है। भारत जैसे बहुभाषी देश में, जहाँ एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भाषा बदल जाती है, वहाँ व्यापारिक संचार की प्रभावशीलता बहुभाषिक दृष्टिकोण अपनाए बिना संभव नहीं है। इसी संदर्भ में कोड–मिश्रण अर्थात ''एक ही संवाद में दो या अधिक भाषाओं का प्रयोग'' आज की व्यावसायिक संप्रेषण रणनीतियों का अभिन्न अंग बन गया है। विशेष रूप से हिंग्लिश (हिंदी + इंग्लिश) ने ब्रांडों को शहरी और युवा उपभोक्ताओं से जुड़ने का सहज माध्यम प्रदान किया है। कोड–मिश्रण ने न केवल भाषा की बाधाओं को तोड़ा है, बल्कि भावनाओं को भी संप्रेषित किया है। यह प्रवृत्ति उपभोक्ताओं के भाषाई व्यवहार को समझने, उनसे जुड़ने और उन्हें सांस्कृतिक स्तर पर अपनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी पहल है। बहुभाषावाद और कोड–मिश्रण मिलकर एक ऐसी ''संवाद–नीति'' की रचना कर रहे हैं, जो न केवल संप्रेषण को प्रभावशाली बनाती है, बल्कि बाज़ार और ब्रांड के बीच विश्वास का सेतु भी निर्मित करती है।

मार्केटिंग और विज्ञापन में हिंदी का प्रयोग

मार्केटिंग जगत में हिंदी का प्रयोग उपभोक्ता के मन से सीधे जुड़ने का प्रभावशाली माध्यम बन गया है। विज्ञापन जब हिंदी में होते हैं, तो वे केवल उत्पाद नहीं बेचते, बल्कि भावनाएँ, भरोसा और सांस्कृतिक

अपनापन भी प्रस्तुत करते हैं, जिससे ब्रांड की पहचान गहराई से स्थापित होती है। जैसे:

- **Pepsi —** "ये दिल माँगे मोर"
- **Coca-Cola —** "ठंडा मतलब कोका कोला"
- **Hero MotoCorp —** "हम में है हीरो"
- **Domino's Pizza —** "हंग्री क्या?"
- **Fevicol —** "वही मजबूत जोड़"
- **Asian Paints —** "हर घर कुछ कहता है"

इन स्लोगनों ने उपभोक्ता मन में गहरा भावनात्मक प्रभाव डाला और ब्रांड की लोकप्रियता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भविष्य की ओर

हिंदी का लगातार बढ़ता प्रभाव यह स्पष्ट करता है कि यह केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक सशक्त और प्रभावशाली आर्थिक शक्ति बन चुकी है। जो कंपनियाँ इस सच्चाई को समझ कर हिंदी को अपनी व्यावसायिक रणनीतियों में प्रभावी रूप से सम्मिलित कर रही हैं, वे न केवल भारतीय उपभोक्ता बाजार में अपनी उपस्थिति को दृढ़ता से स्थापित कर रही हैं, बल्कि ग्राहकों के साथ गहरे, विश्वसनीय और स्थायी संबंध भी निर्मित कर रही हैं। हिंदी का व्यापक उपयोग वैश्विक व्यापारिक परिदृश्य में सामंजस्य, विश्वास और सहभागिता को बढ़ावा देता है, जिससे यह भविष्य में एक अपरिहार्य और निर्णायक व्यावसायिक साधन के रूप में उभर रही है।

सहायक अधिकारी (अनुवाद)
राजभाषा विभाग, पीएसडब्ल्यूआर, नागपुर

जीवन की भरपाई

दीप्ति सिंह

जीवन में हर क्षति की भरपाई हो सकती है,
सिवाय जीवन के...
जीवन में जीने से अधिक
मरने के क्षण आते हैं ,
यही जीवन की असली
वास्तविकता है कि हमें ,
उन क्षणों में भी
जीना होता है ...
यही जीवन की,
जीवन पर असली जीत है...
बहुत से क्षण जीवन में
ऐसे स्वीकारने पड़ते हैं
जिनसे जीवन बसता है...
पर जीवन में
वही क्षण ही नही बसते
जिनके लिए जीवन
स्वीकारा जाता है...
हाँ, सोचा जाता है...
कभी–कभी कि इस
जीवन को कहां–कहां
से काटे कि कुरूपता
कट जाए...
और कहां–कहां से जोड़े
और कहां–कहां से सीये
कि जी सकने लायक
कुछ जी सकें...
क्या मृत्यु के साथ ही
खत्म होगा
जीवन की इच्छा का ये अध्याय !

पत्नी– श्री विजय प्रताप सिंह चौहान
अपर अभियंता ग्रेड II, (सीएमएम)
पीईएम, नोएडा

नारी शक्ति

नरोत्तम कुमार

मैं माँ बनी, फिर बनी पुत्री
बन सहपाठन, बनी स्त्री।
रूढ़िवाद की पहन बेड़ियाँ,
सहती चली मैं अपनी चूड़ियाँ।
कभी शरीर पर, कभी चरित्र पर,
छलकता रहा तेजाब मुझ पर।
झुलस कर रह गया सपनों का घर,
बैठ चार दीवारों में बनाया उनका घर।
साथ जब चलने को जब कदम उठाए,
उठा प्रश्न मासिक धर्म पर,
बल परिचय उन पुरुषों को दिखाये।
पाकर विजय कर्म धर्म पर,
पठन पाठन की आज़ादी पाकर,
बनाने चली मैं अपने सपनों का घर ।
कभी लौह स्त्री के रूप में,
कभी उड़न परी के रूप में,
बन लक्ष्मी रण में,
दुर्गा शक्ति उन को दिखलाई।
रख बीज नौ माह तक,
हत्या पर विजय पाकर ।
मैं माँ बनी, फिर बनी पुत्री
बन सहपाठन, बनी स्त्री।।

कार्यपालक (मानव संसाधन)
बीएपी, रानीपेट

महिला सशक्तिकरण-कब तक सिर्फ एक नारा?

आज के दौर में महिला सशक्तिकरण एक ऐसा नारा बन गया है जिसे हर दिन, हर मौके पर चिल्ला–चिल्ला के दोहराया जाता है। परंतु आज यह नारा एक नारा ही बनकर रह गया है जिसमें हज़ारो महिलाएँ भाग लेती हैं ताकि वह करोड़ो महिलाओं के हक़ के लिए लड़ सके। कहते हैं बोलना बहुत सरल होता है पर करना उतना ही कठिन–कुछ यही दशा हो गई है महिला सशक्तिकरण की। आसान शब्दों में समझा जाए तो महिला सशक्तिकरण का अर्थ है–महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और शैक्षिक रूप से सशक्त बनाना ताकि वह स्वतंत्र रूप से निर्णय ले सके और समाज में समान अधिकार प्राप्त कर सके। परंतु निराशा की बात यह है कि इस परिभाषा में ही इस लड़ाई की सबसे चिंताजनक बात छुपी है– ताकि वह स्वतंत्र रूप से निर्णय ले और समाज में समान अधिकार प्राप्त कर सके–ऐसा क्यों? क्यों हम इस मोड़ पर आए जहाँ अधिकार भी लिंग देखकर दिया जाता है? इतनी पिछड़ी मानसिकता इंसानो को शोभा नहीं देती, वह इंसान जिसे बाकी प्राणियों से ज्यादा बुद्धिमान व सभ्य माना जाता है।

हर समस्या का हल निकालने के लिए उसकी जड़ों तक जाना आवश्यक है। यह जानना बहुत ज़रूरी है कि महिलाओं को सशक्तिकरण की आवश्यकता ही क्यों पड़ी? इसका एक सरल सा उत्तर है – पितृसत्तात्मक समाज, पिछड़ी मानसिकता एवं महिलाओं की चुप्पी। कसूरवार है वो पितृसत्तात्मक मानसिकता जिसने महिलाओं को दबाया – उनके विचारों, आकांक्षाओं व स्वतंत्रता को बांधा और अपने हिसाब से ढाला। इस प्रक्रिया को बढ़ावा दिया जिसकी वजह से पिछड़ी मानसिकता ने हमारे समाज के लोगों को ताकत दी इस दिशा में जाने की और अंत में आती है महिलाओं की चुप्पी जिसने इस जुल्म को सहा और उसी क्षण आवाज़ नहीं उठाई।

तभी से शुरू हुआ महिलाओं का निम्न और पुरुषों का श्रेष्ठ होना। इस मानसिकता को बदलने में वक्त लगेगा और महिला सशक्तिकरण उसके लिए उपयुक्त हथियार है। समस्या की जड़ तक जाने के बाद ही लोगों को समझ आएगा कि यह कोई नारीवाद नहीं है जो पुरुषों को नीचा दिखाना चाहता है बल्कि यह एक ऐसा नारीवाद है जो पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करना चाहता है। आज ग्रामीण क्षेत्रों में चाहे स्कूलों का गठन हो चुका हो पर फिर भी लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता नहीं दी जाती है। गाँव की महिलाएँ आज भी घूँघट में छिपती हैं और सैनिटरी पैड खरीदने से हिचकिचाती हैं। महिलाएँ आज भी कार्यस्थलों में वेतन असमानता और भेदभाव का शिकार बनती हैं। क्या ही हासिल कर लिया उस महिला ने जो घर से तो निकल पाई पर कार्यस्थल पर आकर भी भेदभाव का सामना कर रही है ? पहले तो लड़–झगड़ के किसी तरह अपनी शिक्षा पूरी करो, फिर और झगड़ के अपने हक़ के लिए लड़ के ऑफिस में काम करने की अनुमति लो। पर इतनी मुश्किल के बाद जब काम करने पहुँचो तो वहाँ पर भी भेदभाव। एक लड़की की ज़िंदगी में संघर्ष कभी थमता ही नहीं है। अगर ऑफिस नहीं तो शादी के बाद घर में संघर्ष, परिवार की इच्छाएँ, घर की जिम्मेदारियाँ, पति के ताने, बच्चों की देखभाल और फिर अंत में सुनना पड़ता है कि "तुम्हें पूरा दिन करना ही क्या होता है?" यही दशा है हमारे समाज की।

सानिया

अगर यह सब भी नारियों की दशा न समझा पाए तो और भी है– घरेलु हिंसा, शारीरिक शोषण, उत्पीड़न चाहे वो मानसिक, मौखिक, भावनात्मक या शारीरिक हो। दहेज प्रथा आज भी लड़की का मान घटाती है और बेटियों को आज भी पराया धन माना जाता है। राजनीति की बात करें तो महिलाओं की सहभागिता अभी भी कम है, ऐसा नहीं है कि वृद्धि नहीं हुई – हुई है, परंतु नेतृत्व के उच्च स्तर पर उनकी संख्या अभी भी काफी कम है। व्यापार में तो महिलाओं की सहभागिता में बहुत कमी है जो कि समझ नहीं आता क्योंकि घर का वित्त और बजट सँभालने वाली महिला से बेहतर कौन हो सकता है वित्त सलाहकार के तौर पर?

अपनी दशा स्वीकार करने के बाद अगला काम है एक दिशा का चयन करना। एक ऐसी दिशा जो हमें महिला सशक्तिकरण को एक सफल पहल बनाने में सहायक होगी। सबसे पहले शिक्षा और जागरूकता अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब एक लड़की शिक्षित होती है, तो न केवल वह आत्मनिर्भर बनती है, बल्कि वह अपने परिवार और समाज को भी सशक्त बनाती है। सन 2021 के आंकड़ों के अनुसार पुरुषों की साक्षरता दर 84.7% जबकि महिलाओं की 70.3% है। इस स्तर को बदलना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए। राजनीति में महिलाओं की वृद्धि अनिवार्य है क्योंकि जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक महिलाओं के हितों का प्रतिनिधत्व करना संभव नहीं हो पाएगा। भारत के संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व लगभग 15% है, जबकि कई विकसित देशों में यह संख्या 30–50% तक होती है। इसे प्रेरणा बनाकर हमें भी एक कदम आगे बढ़ाना चाहिए। इसके साथ ही औरतों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता अनिवार्य है। सरकार द्वारा स्वरोज़गार, छोटे उद्योगों और स्टार्ट अप्स के अवसर प्रदान करने चाहिए। सशक्त कानूनों का होना अनिवार्य है जो महिलाओं के खिलाफ अत्याचारों पर रोक लगा सके और इनका सही कार्यान्वयन एवं न्याय प्रणाली की पारदर्शिता भी ज़रूरी है। अतः इस प्रकार हम महिला सशक्तिकरण को सफल एवं सार्थक बना सकते हैं। महिलाओं का सशक्तिकरण केवल एक नीति नहीं, बल्कि एक सामाजिक क्रांति है।

सपुत्री–श्री रामदेव प्रसाद यादव
प्रशासनिक अधिकारी
निदेशक (मा. सं.) सचिवालय
कार्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

कहानी

सर्व-सम्मान है आवश्यक

वैशाली कंचन

रोहित एक बहुत ही निम्न परिवेश में जन्मा व साधारण सी परिस्थितियों में पला बड़ा था। उसके पिताजी सिद्धेश जी रेलवे में टिकट कलेक्टर के पद पर कार्यरत थे और माताजी विमला जी गृहणी थीं। रोहित के 3 छोटे भाई बहन थे। मामूली सी तनख्वाह होने के कारण सिद्धेश जी बच्चों व परिवार की आवश्यकताओं को बमुश्किल पूरा कर पाते थे। महीने की 20 तारीख तक का खर्चा उनकी आय से चलता था और बाकी 10 दिन विमला जी के जोड़े हुए पैसों से जैसे–तैसे चलता था। ऐसी विषम परिस्थितियों को झेलते–झेलते रोहित समय से पहले ही परिपक्व हो गया था।

जहां कॉलेज के सब लड़के छुटि्टयों में घूमने फिरने और मौज मस्ती करने जाते, रोहित घर पर रहकर रोज़मर्रा के कार्यों में माँ की मदद करता व भाई बहनों को पढ़ाता था। उसकी यह प्रबल धारणा थी कि सृष्टि से जो लिया है, उसे लौटाकर अपना कर्तव्य हर मानव को अवश्य निभाना चाहिए। इसलिए जहां एक ओर उसके सभी दोस्त महंगी गाड़ियों में कॉलेज आते थे, वहीं वह सदा साइकिल से कॉलेज जाता था – इससे दो फायदे होते, पहला धन की बचत दूसरा पर्यावरण की रक्षा। इस तरह उसके आदर्शों का अनुसरण भी हो जाता था। परंतु इतनी सारी खूबियों के बावजूद एक स्पष्ट वक्ता होने के कारण वह अधिकांश व्यक्तियों की नज़रों को नहीं भाता था। लोग हर वक्त उससे पीछा छुड़ाने का यथासंभव प्रयास करते व बातचीत करने से बचते थे। आखिर सही को सही व गलत को गलत सुनने का जिगर सब में नहीं होता। बस इसी कारण से वह हर किसी का दुश्मन बन जाता।

सिद्धेश जी बहुत बार रोहित को प्यार से समझाते कि ''जैसा देश वैसा भेष''। वह सदा नसीहत देते कि इस प्रकार का आचरण ठीक नहीं है और यह अंततः रोहित को हर किसी का शत्रु बना देगा। अगर किसी की बात पसंद नहीं आती तो चुप हो जाना एक बेहतर विकल्प है परंतु आदत से मजबूर रोहित के कान पर जूं तक नहीं रेंगती। उसके सर पर सच का साथ देने का भूत सवार रहता और वह हर नसीहत को एक सिरे से दरकिनार कर देता। देखते ही देखते उसका हर दोस्त दुश्मन बन गया और वह अकेला और बहुत अकेला पड़ गया। वह जिससे भी बात करने की कोशिश करता वह उसे टाल देता और अपना रास्ता बदल लेता। अब उसे लोगों व दोस्तों की कमी महसूस होने लगी पर वह कहावत है ना ''अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।'' समय बीत जाने के पश्चात हाथ मलने का कोई फायदा नहीं होता।

अब कोई भी रोहित से सीधे मुँह बात तक ना करता था। सिद्धांतों का पक्का होना अच्छी बात है परंतु अपनी सोच को किसी और पर थोपना ठीक बात नहीं है। विचारों का मतभेद तो हर किसी के बीच में होता है और यह सिलसिला जीवन पर्यंत चलता रहता है परंतु यह ज़रूरी नहीं कि जो हमें गलत लगता है, वो सच में ही गलत ही हो। नज़र और नज़रिये का फर्क ही किसी कार्य को सही या गलत बनाता है। मसलन विमान में बैठा पायलट ज़मीन देखकर घर को याद करता है और वहीं ज़मीन पर खड़ा व्यक्ति उस विमान को ऊपर उड़ता देख उस में बैठने के सपने संजोता है। अपनी सोच के हिसाब से कार्य करते हुए दूसरों की सोच को भी सम्मान देना चाहिए क्योंकि सोच की भिन्नता ही नये अविष्कारों को जन्म देती है। रोहित की हठ ने उसे सर्वगुण संपन्न होते हुए भी सबका अप्रिय बना दिया व उसके जीवन को अकेलेपन से भर दिया था। अच्छाइयों का भण्डार भी तभी असरदार होता है जब व्यक्ति विशेष को जीवन के मूल सिद्धांतों का भली–भांति बोध हो अन्यथा सभी गुण, सभी अच्छाइयां व्यर्थ हैं।

प्रबंधक (आरओडी मुख्यालय)
लोधी रोड, नई दिल्ली

सावन

जब जब घनघोर घटाएं छाई
दिन में अंधियारी घिर आयी
बूंदों ने भी नृत्य दिखाया
सावन की बदरी फिर छाई

धरती माँ ने हरी ओढ़नी लहराई
चहुँओर हरियाली मन को भाई
मेंढक ने कव्वाली गाई
सावन की बदरी फिर छाई

जब पेड़ो पर पड़ गए झूले

शार्वी राजौरा

जब बड़ी बुआ अपने घर आयी
और साथ में घेवर भी लायी
सावन की बदरी फिर छाई

शिव के भक्त निकले कांवड़ लेकर
फिर थोड़े दिन में रक्षा बंधन आई
हंसी खुशी सब ओर बिखरी
सावन की बदरी फिर छाई

पुत्री– श्री विकास राजोरा
प्रबन्धक, पीएसबीजी–1,
नई दिल्ली

माटी दर्शन

माटी का जीवन दर्शन विचित्र है। यदि हम माटी को मिट्टी कहें तो यह हमारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण होगा। यदि माटी (पृथ्वी) को महाभूतों में से एक तत्व कहकर परिभाषित किया जाए, तो यह न केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण से बल्कि जीवन दर्शन के दृष्टिकोण से भी अनुकूल होगा। हम नई पीढ़ी के लोग हैं... हमें विज्ञान की भाषा अधिक तर्कसंगत लगती हैं...... तो चलिए पहले विज्ञान की पुस्तकों की भाँति मिट्टी की परिभाषा जान लेते हैं।

मिट्टी: धरती की ऊपरी सतह की ऐसी परतें जो उथली हों उसे मिट्टी की संज्ञा दी जाती है। इस परम तत्व का निर्माण चट्टानों के विघटन से तथा कार्बनिक पदार्थों के मेलजोल से होता है। यह वही परत है जिसमें सभी जीव–जंतु तथा वनस्पतियां स्थायी तौर पर विद्यमान है। रसायन विज्ञान के अनुसार मिट्टी नाना प्रकार के तत्वों का मिश्रण है जबकि भारतीय जीवनदर्शन के अनुसार यह पंचमहाभूतों में से एक है। पंचमहाभूतों अर्थात आकाश (Space), वायु (Quark), अग्नि (Energy), जल (Force) तथा पृथ्वी (Matter)। यहाँ पृथ्वी का अर्थ मिट्टी ही है। सांख्य दर्शन में भी मिट्टी को सृजनकर्ता द्रव्य माना गया है। कैलाश संहिता में भी इन्हीं पांच द्रव्यों की व्याख्या की गई है जिससे सृष्टि का निर्माण हुआ है। मिट्टी का नाना प्रकार के गुणों का होना ही इसे महाद्रव्य बनाता है। हम इसे निम्नलिखित सारणी की भांति भी समझ सकते हैं।

क्रम संख्या	पंचमहाभूत	विज्ञान के अनुसार	भारत दर्शन के अनुसार
1	आकाश	Space	Space
2	वायु	Air	Quark
3	अग्नि	Fire	Energy
4	जल	Water	Force
5	पृथ्वी	Soil	Matter

मानवीय सन्दर्भ में मिट्टी ही धरती है। क्योंकि मिट्टी ही हमें उन सभी संसाधनों को उपलब्ध करा देती है जिसकी हमें आवश्यकता है। मिट्टी के अन्दर व्याप्त उर्वरता को किसान उत्पादकता के दृष्टिकोण से देखते हैं। यही उर्वरता वनस्पतियों के विकास के लिए लाभप्रद है। मिट्टी के अन्दर यह गुण सूक्ष्मजीवों के कारण है जो अपघटन प्रक्रियाओं से मिट्टी को निरंतर उर्वर बनाते रहते हैं। जैव विविधता,के लिए भी मिट्टी का उर्वर होना आवश्यक है। मिट्टी किसी एक जीव अथवा वनस्पति की नहीं है .... यह सबकी है। यही कारण है कि मिट्टी विविध प्रकार के गुणों को समेटे हुए है।

माटी में असंख्य सूक्ष्मजीव रहते हैं...। कुछ सूक्ष्मजीव वातावरण के नाइट्रोजन मिट्टी में विलीन करने में लगे हुए हैं। कुछ जीव अथवा वनस्पति के सड़ेगले टुकड़ों को विघटित कर माटी में मिलाने में लगे हुए है। सूक्ष्मजीवों के इन कार्यों को देखकर ऐसा लगता है जैसे ये जीवों अथवा वनस्पतियों के भविष्य के लिए उर्वर भूमि बना रहे हैं। यही सूक्ष्मजीवों का गुणधर्म है इसी से उनके जीवन का निर्वाह होता है...... है ना ये विचित्र बात।

दीपक कुमार पांडे

सूक्ष्मजीव बहुत सयाने हैं ये संसार से सभी कचरों अथवा अपशिष्टों को मिट्टी में मिला देते हैं। इसीलिये प्रकृति ने अनंतकाल के लिए संतुलन का ठेका सूक्ष्मजीवों को दिया हुआ है। ये सूक्ष्मजीव जीवाणु अथवा विषाणु के रूप में हर वस्तु को मिट्टी में विलीन करने के लिए लालायित रहते हैं। सूक्ष्मजीवों के विभिन्न रूप एवं गुणधर्म हैं सबका अपना अलग काम है। सभी अपने काम को बड़ी तन्मयता से करते हैं.......... करेंगे भी क्यों नहीं ???? इन्ही कार्यों से ही उनकी जीवनलीला चल रही है। सूक्ष्मजीवों के पूर्वज पता नहीं कितनी सभ्यताओं अथवा संस्कृतियों के कार्बनिक पदार्थों को मिट्टी में मिला चुके हैं...... फिर भी उनका काम अनवरत जारी है।

माटी का विचित्र तंत्र: मिट्टी में एक लघु किन्तु संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र विद्यमान है। यह कीड़े–मकौड़ों का भी घर है और सूक्ष्मजीवों का भी। जिससे हम उर्वरता करते हैं वह इन जीवों का पोषक तत्व भी है। माटी धरती पर अपनी काया को इस प्रकार ढाल लिया है कि जल भी प्रवाहित होने के लिए व्याकुल हो जाता है। सर्वविदित है कि जल अपवाह ढलान में ही संभव है। समस्त नदी–नाले ढलान की ओर ही प्रवाहित होते है। माटी जल को मार्ग उपलब्ध कराते हुए भी अपने गुणधर्मों में भी बढ़ोत्तरी कर लेता है।

चित्रः माटी अपना अतीत – माटी अपना भविष्य

माटी अपना अतीत – माटी अपना भविष्यः माटी स्वयं में एक पूर्ण द्रव्य है। माटी ही अपना अतीत भी रहा है। मानव समाज ने जो भी कुछ प्राप्त किया वह इसी मिट्टी के कारण संभव हो सका। विज्ञान "जल की

उपस्थिति'' को मानव विकास से जोड़ती है किन्तु मिट्टी के बिना मानव विकास संभव नहीं है। मनुष्य एक स्थलीय जीव है उसके लिए माटी ही सब कुछ है। यही कारण है कि साधारण बोलचाल में हम स्वयं को मिट्टी के पुतले मानते हैं। हमारे शरीर का तीन चौथाई भले ही जल हो किन्तु काया माटी की ही है।

माटी (ईश्वरीय तत्व): माटी का दर्शन ईश्वर के जीवन दर्शन के समतुल्य है। माटी में ही आत्मीयता तथा परमकरुणा अन्तर्निहित है जिसे मानव विकास से समझा जा सकता है। माटी विगत लाखों वर्षों में स्थूल पदार्थ से महत्त्वपूर्ण पदार्थ बनकर परमपूर्णता को प्राप्त हो गई है। यह जीवों तथा वनस्पतियों दोनों के लिए अपनी पोषकता परोस देती है। जीवजंतु भी इसी माटी में महानिर्वाण होकर माटी और जंतु के बीच पुत्र एवं जननी का संबंध प्रमाणित करते हैं। हमारे भोज्य सामग्री का 95 प्रतिशत माटी देता है बाकी वायुमंडल और सूर्य की देन होती है।

क्रम संख्या	माटी दर्शन	भावार्थ
1	माटी अर्थात अध्ययनकर्ता	माटी परिवेश का अध्ययन भी करती है।
2	माटी अर्थात अध्यापनकर्ता	माटी हमें सेवा सुश्रुता सिखाती है।
3	माटी अर्थात चिन्तनकर्ता	माटी जीवजंतुओं के लिए परिस्थिति अपनेआप को ढाल लेती है
4	माटी अर्थात मननकर्ता	माटी मौन रहकर क्रमिक विकास की माया रचती रहती है।
5	माटी अर्थात लेखनकर्ता	माटी जैव विकास का मार्ग नियत करती है।
6	माटी अर्थात तर्कशीलता	माटी परिवेश के अनुसार अपना गुणधर्म संजोकर रखती है
7	माटी अर्थात स्पष्टता	माटी में तनिक में कुटिलता नहीं है।
8	माटी अर्थात सटीकता	माटी उत्पादन की सटीक जानकारी देती है।
9	माटी अर्थात तात्विकता	माटी पोषकता का भण्डार है।
10	माटी अर्थात निर्भीकता	माटी बिना किसी भय के अपनी पौष्टिकता दान कर देती है।
11	माटी अर्थात तीक्ष्णता	माटी पुनरोद्धार के लिए लालायित रहती है।
12	माटी अर्थात कटाक्षता	माटी विषैले द्रव्यों को उदासीन कर देती है।
13	माटी अर्थात न्यायप्रियता	माटी के सभी सभी वनस्पति एकसमान है।
14	माटी अर्थात निस्संकोचता	माटी किसी एक जीव के लिए पक्षपाती नहीं है।
15	माटी अर्थात उदारता	माटी सभी के लिए उदार है।
16	माटी अर्थात सर्वसमावेशिता	माटी सर्वसमावेशी है।
17	माटी अर्थात समन्वयता	माटी जीवों एवं वनस्पतियों में समन्वय बनाये रखती है।
18	माटी अर्थात सांस्कृतिकता	माटी सांस्कृतिकता का स्तम्भ है।
19	माटी अर्थात समदर्शिता	माटी समदर्शिता महान उदाहरण है।
20	माटी अर्थात समालोचना	माटी अप्राकृतिक बदलाव का विरोध करती है।
21	माटी अर्थात विवेचनकर्ता	माटी के मृत तत्व भूतकाल के अतिसूक्ष्म प्रमाणपत्र है।
22	माटी अर्थात परीक्षा	माटी आत्मनिर्भर बनाने के लिए सबकी परीक्षा लेती है।
23	माटी अर्थात समीक्षक	माटी महान समीक्षक है
24	माटी अर्थात कर्तव्यनिष्ठ	माटी कर्तव्यनिष्ठ है यह अपने दायित्यों का भलीभांति निर्वहन करती है।
25	माटी अर्थात नेतृत्वकर्ता	माटी जैव–विकास नेतृत्वकर्ता भी है।
26	माटी अर्थात चेतना	माटी के अन्दर से ही चेतनता का प्रादुर्भाव होता है।
27	माटी अर्थात संवेदना	माटी संवेदनशील है इसे दूसरों के कष्टों का ज्ञान होता है
28	माटी अर्थात ललक	माटी में ममत्व झलकता है
29	माटी अर्थात कसक	माटी का विरह रूप विकास के कसक को प्रदर्शित करता है।
30	माटी अर्थात सिद्धता	माटी सिद्धि प्राप्त कर चुकी है।
31	माटी अर्थात पूर्णता	माटी सर्व गुण सम्पन्न है।

माटी चराचर जगत का आदर्श द्रव्य है। यह सभी को समान भाव से जीवन निर्वाह के लिए पोषकता एवं स्थायित्व प्रदान करती है। माटी को सिद्धमाता कहें या परम अभिभावक माटी स्वयं में पूर्ण है, सनातन है। यह कहीं रेतीली है कहीं दोमट। कहीं सूखी है कहीं गीली। यह सभी स्थानों में जैव विकास के लिए अपना आँचल फैलाये ममत्व भाव से सबका अभिनन्दन करती रहती है। इस संसार में किसी भी जीव की सफलता उसके कर्म, ज्ञान, संकल्प, साहस तथा आचरण पर निर्भर है। माटी एक जननी के रूप में एक स्वच्छंद निकाय प्रदान करती है जहाँ जीव अपना क्रमिक विकास करते हैं। जलीय जीव भी माटी के भरोसे हैं क्योंकि माटी अपने कई रूपों में उनको भी पोषित करती है। जीव और वनस्पति के बीच सामंजस्य स्थापित करने में माटी की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

माटी निरीह जीव को भी क्षमतावान बना देती है। माटी वह ईश्वरीय–तत्व है जिसको आत्मसात करके जीव पूर्णविश्वास के साथ अपने जीवन का निर्वाह करता है। माटी सभी जीवों को भलीभांति जानती है और वनस्पतियों को भी। माटी किसी भी बीजतत्व को पौरुषता प्रदान कर वृक्ष बना देती है। अन्न को फसल बना देती है। एकांकी जी रहे पौधों को

पोषित कर उनका समाज तैयार कर देती है। जिस प्रकार महिलाओं का वक्ष स्थल उन्हें ममत्व का आभास कराता है ठीक उसी प्रकार से माटी की उपस्थिति से ही धरती को जननी के समकक्ष मान लिया जाता है।

क्रमिक विकास माटी के अधीन है। माटी केवल धरती तक सीमित नहीं है यह सभी ग्रहों पर विद्यमान है। माटी काफी समय से मंगल ,वृहस्पति अथवा चंद्र जैसे खगोलीय पिंडों पर जल की बाट जोह रही है .... । जैसे ही ईश्वर वहाँ जल प्रदान करेंगे जैव विकास प्रारम्भ हो जाएगा। माटी का कर्म, ज्ञान, संकल्प, साहस तथा आचरण ईश्वर के समकक्ष है। माटी ऐसा प्राकृत–तत्व है जिससे धरती को भी माता की उपाधि मिली .... । यदि माटी ना होता तो यह अन्य खगोलीय पिंडों की भांति निर्जीव होती। माटी के कारण ही इस पिंड पर (धरती पर) खुशहाली है। माटी नित्य एवं शाश्वत तत्व है। माटी तत्वों का अनमोल मिश्रण है जो सभी को जीवन देती है और स्वयं में समाहित कर लेती है ।

चित्रः मैं जीव जंतुओं एवं वनस्पस्तियों दोनों की माता हूँ।

भारतवर्ष की स्थलीय आकृति, वनस्पति और जलवायु पृथक होने का कारण यहाँ की माटी है। मृदा समूहों की एक विशाल विविधता केवल भारत में ही देखने को मिलती है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) माटी की गुणवत्ता परखकर उसका वर्गीकरण करता है। उदाहरण के तौर पर– शुष्क एवं मरुस्थलीय मृदा राजस्थान, कच्छ तथा हरियाणा के कुछ क्षेत्रों में पायी जाती है। जलोढ़ माटी उत्तर प्रदेश, बंगाल, पंजाब तथा हरियाणा जैसे राज्यों में पायी जाती है। भारतवर्ष के मध्य भागों में लाल मिट्टी पायी जाती है जबकि केरल, कर्नाटक तथा तमिलनाडु जैसे राज्यों में लैटेराइट **मिट्टी दृष्टिगोचर होती है। माटी ने ही राज्यों को विविधता प्रदान की है ....माटी सबकी माता ....। जय माता माटेश्वरी(मातेश्वरी)।**

धरती के अद्वितीय प्राकृतिक संसाधन में से एक रूप, मिट्टी में विभिन्न तत्वों में सिलिकेट्स, आयरन, कैल्शियम, और मैग्नीशियम जैसे महत्वपूर्ण घटक विद्यमान होते हैं। यह मिश्रण जीवन के सभी पहलुओं को शामिल करता है और विविधता से भरपूर सजीव जीवन की सम्भावना देता है। मिट्टी की संचयन और संग्रहण क्षमता एक प्राकृतिक कला का प्रतीक होती है, जिससे विभिन्न रूपों की रचनात्मकता और कलात्मक निर्माण की प्रक्रिया प्रकट होती है। इसके अलावा, मिट्टी का उपयोग निर्माण, कला, और संवाद में भी होता है,............संवाद अथवा भावो अथवा विचारों में। माटी दर्शन एक समृद्ध और सांस्कृतिक घटक के रूप में हमारे समाज में घुल चुकी है। मिट्टी की दृढ़ता और स्थिरता हमें याद दिलाती है कि जीवन के अवलोकन और अनुभव में स्थिरता महत्वपूर्ण होती हैं ....। चाहे समय कैसा भी बदलता रहे फिर भी हमें स्थिर रहकर अपने धर्म का पालन करना चाहिए।

मिट्टी की प्राकृतिक गुणधर्मों के अध्ययन से हम सीखते हैं कि जीवन में अनुकूलता, सहयोग और समन्वय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जो समृद्ध, स्थिर और उत्कृष्ट जीवन की संभावना को बढ़ावा देते हैं।........ ...सच में माटी अद्भुत है और .... अद्भुत है इसका जीवन दर्शन।

वरि. अभियंता (फैक्टरी मेन स्टोर)
ट्रांसफॉर्मर प्लांट, झांसी

आलेख

पृथ्वी हमारी धरोहर

सुमन नकवाल

समय आ चुका है जब मानव जाति को यह समझना होगा कि पृथ्वी हमारी धरोहर है और इसका सरंक्षण ही हमारी सर्वोपरी जिम्मेदारी। यदि आज भी जागरूक न हुए तो हम आने वाली पीढ़ी को स्वच्छ पानी एवं हवा के लिए तड़पता हुआ छोड़ जाएंगे। आइये हम सब यह संकल्प लें कि हमारी आने वाली पीढ़ी को धरोहर के रूप में स्वच्छ एवं हरी–भरी धरती सौंप कर जाएं। हम अपनी पीढ़ी के लिए पैसा, जायदाद, संपत्ति इत्यादि तो जोड़ रहे हैं, जबकि आने वाले समय में उन्हे स्वच्छ वायु, वातावरण एवं स्वच्छ जल की सर्वाधिक आवश्यकता होगी।

हम कुछ छोटे–छोटे किंतु महत्वपूर्ण कदम उठा कर अपने पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं। हमें प्लास्टिक का इस्तेमाल रोकना चाहिए। प्लास्टिक की चम्मच, कप, स्ट्रॉ, प्लेट इत्यादि के स्थान पर लकड़ी से बनी चम्मच, स्ट्रॉ, स्टील के कप–प्लेट, ग्लास इत्यादि का उपयोग करना चाहिए। जितना हो सके अपने घर से कपड़े का थैला ले कर के चलने से प्लास्टिक से बने थैले का उपयोग कम कर सकेंगे। आधुनिकीकरण की अंध–चाल एवं होड़ से बचकर, जो आवश्यक हो वही खरीदना चाहिए। जिन चीजों की आवश्यकता न हो, उसे नहीं खरीदना चाहिए। रीयूज और रीसायकल के माध्यम से बेफिजूल के अपशिष्ट से निजात पा सकेंगे। नदी–नालों को स्वच्छ रख कर हम महत्वपूर्ण रूप से पर्यावरण संरक्षण में सहयोग दे सकेंगे। सब्जी–फलों के बचे हुए छिलके को खाद के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए। हमें गीला एवं सूखा कूड़ा अलग–अलग करके कूड़ेदान में डालना चाहिए। हमेशा पानी की बचत करनी चाहिए एवं घर से पीने का पानी लेकर चलना चाहिए। प्लास्टिक की बोतल बंद जल का सेवन करने से बचना चाहिए। ऐसा करने से ना केवल जल की चोरी नियंत्रित होगी अपितु प्लास्टिक की बोतल के अपशिष्ट से निजात पा सकेंगे।

जल ही जीवन है, यह आत्मसात करना न सिर्फ हमारा कर्तव्य है बल्कि हमारा परम धर्म भी है। जल की एक–एक बूंद का इस्तेमाल सोच समझ कर करना चाहिए एवं अपने बच्चों को भी जल की कीमत से अवगत कराना चाहिए। बारिश के पानी का संचय करना चाहिए। रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून। आज की परिस्थिति में रहीम जी के इस दोहे द्वारा दिया गया संदेश एकदम सटीक बैठता है कि इस संसार में सभी को पानी बचा कर रखना चाहिए इसके बिना किसी का भी उबार नहीं हो सकता है।

हम जिस नाजुक दौर से गुजर रहे हैं उसके चलते हमें हर कदम फूँक– फूँक कर चलना चाहिए। बढ़ता हुआ तापमान, कहीं बाढ़, कहीं सूखा, यह सभी पर्यावरण के बिगड़ते हुए संतुलन का संकेत है। पंजाब में आई प्राकृतिक आपदा से हम सभी अवगत हैं। ऐसे में हम सभी को अपने सामर्थ्य के अनुसार आगे आकर मदद करनी चाहिए।

पेड़ काटने पर सख्त पाबंदी लगानी चाहिए। वृक्षारोपण कार्यक्रम के माध्यम से जगह–जगह वृक्ष लगाए जाने चाहिए। आइये हम सब मिलकर पेड़ लगाएँ। पेड़ ना सिर्फ प्रदूषण रोकते हैं अपितु भूस्खलन से भी बचाते हैं। चलचित्र, अखबार, रेडियो इत्यादि के माध्यम से जन–जन तक पर्यावरण बचाने हेतु संदेश पहुंचाए जाने चाहिए।

आइये हम ये प्रण लें कि हम पर्यावरण सरंक्षण में अपना भरपूर योगदान करेंगे। याद रहे अगर आज हम अपने पर्यावरण के संरक्षण के प्रति सचेत ना हुए तो पृथ्वी पर मानव जीवन समाप्त हो जाएगा। पृथ्वी पर जीवन इतिहास बन कर रह जाएगा। समय रहते नहीं जागे तो देर हो जाएगी। पर्यावरण सरंक्षण प्रत्येक मानव का सर्वोपरी कर्तव्य है। आइये हम सब मिलकर हमारे पृथ्वी ग्रह की रक्षा करें। हम सभी अपने कर्तव्य का सच्ची निष्ठा से निर्वहन करें और हमारी पृथ्वी को पुनः सुंदर एवं हरा–भरा बनाएँ।

वरिष्ठ प्रबन्धक
गुणवत्ता एवं व्यावसायिक उत्कृष्टता
पीईएम, नोएडा

हिन्दी ने विश्वभर में भारत को एक विशिष्ट स्थान दिलाया है। इसकी सरलता, सहजता और संवेदनशीलता हमेशा आकर्षित करती है।

– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

ऑपरेशन सिंदूरः एक अद्वितीय शौर्य गाथा

शिवनाथ

1971 के युद्ध में भारत से पाकिस्तान की करारी हार और पृथक बांग्लादेश के निर्माण के बाद, पाकिस्तान ने भारत से लड़ने के लिये छद्म युद्ध की रणनीति पर काम किया और उसका उद्देश्य इस रणनीति के माध्यम से ''भारत को हजारों ज़ख्मों से लहूलुहान'' करना था। सीमा पार आतंकवाद पाकिस्तान की विदेश नीति का एक हथियार बन गया है और 40 से ज्यादा वर्षों से भारत आतंकवाद का दंश सह रहा है।

वर्ष 2019 के दौरान जम्मू और कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाने के पश्चात पंचायत एवं राज्य विधान सभा के चुनाव निष्पक्ष तौर पर सम्पन्न किये गये और राज्य में पंचायत एवं राज्य स्तर पर लोकतंत्रिक व्यवस्था के अनुसार लोकप्रिय सरकार स्थापित की गयी। साथ ही साथ सीमा सुरक्षा ग्रिड और खुफिया तंत्र को मज़बूत किया गया। घाटी में सक्रिय आतंकी कमांडरों को मार गिराया गया और बड़ी संख्या में सक्रिय आतंकियों का सफ़ाया किया गया। परिणाम स्वरूप घाटी में भारी संख्या में पर्यटकों की आवाजाही शुरू हो गयी जिससे कश्मीरियों को नये नये रोजगार के अवसर मिलने लगे। सरकार बड़े पैमाने पर कश्मीर में आर्थिक एवं बुनियादी ढाँचे के विकास पर जोर शोर से लगी हुई थी। कश्मीरियों में बढ़ता राष्ट्रवाद और कश्मीर मुद्दे का अंतर्राष्ट्रीयकरण लगभग समाप्त हो चुका था क्योंकि कश्मीर मुद्दे पर अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर बात नहीं हो रही थी। घाटी में लौटती सामान्य स्थिति और बढ़ते व्यवसाय से पाकिस्तान की कश्मीर नीति को गहरा धक्का लग रहा था।

भारत के सर्जिकल और एयर स्ट्राइक के बाद, पाकिस्तान यह बखूबी जानता था कि पाकिस्तान से जुड़ी कोई भी आतंकी कार्रवाई भारत के सैन्य प्रकोप को आमंत्रित करेगी। इसे ध्यान में रखते हुए, पाकिस्तान ने पहलगाम हमले को अंजाम दिया जिसका उद्देश्य भारत में सांप्रदायिक दंगे भड़काना और पर्यटकों को निशाना बनाकर घाटी में बढ़ती समृद्धि को बाधित करना था। बैसरन घाटी को उसकी भौगोलिक जटिलताओं, सुरक्षित ठिकानों और दुर्गमता के कारण चुना गया था, जिससे सुरक्षा बलों की प्रतिक्रिया बाधित हो और मदद आने में देरी हो।

22 अप्रैल, 2025 को बैसरन घाटी पहलगाम में जिहादी आतंकवादियों ने धार्मिक पहचान के आधार पर 26 पर्यटकों की बेरहमी से हत्या कर दी। पर्यटक बिना किसी खतरे का आभास हुये अपनी छुट्टियां मना रहे थे। अचानक लोगों को एहसास हुआ कि 4–5 हथियारबंद आतंकवादी नजदीक से लोगों के सर पर गोली मार कर हत्या कर रहे हैं। जब तक वे कुछ समझ पाते तब तक आतंकवादियों ने 26 लोगों को मौत के घाट उतार दिया था। इस घटना ने पूरे देश को पूरी तरह झकझोर दिया था। देश इस अपराध को किसी भी कीमत पर माफ नही कर सकता था। भारत ने उसी दिन से आतंकियों को सजा देने की तैयारियां शुरु कर दी। सबसे पहले घटना क्षेत्र के आस–पास के इलाके की घेराबंदी और निगरानी बढ़ा दी गयी जिससे हत्यारे पाकिस्तान न भाग पायें।

पहलगाम हमले के बाद ही भारत ने स्पष्ट कर दिया था कि आतंकियों को उनके स्थान की परवाह किए बिना दंडित किया जाएगा। भारत ने व्यापक रणनीतिक तैयारी की और पाकिस्तान को चिंता में रखते हुए 15 दिनों के भीतर आतंकवादी ठिकानों पर सटीकता से हमला किया। पाकिस्तान एक भी हमले को नाकाम नही कर सका।

पहलगाम हमला होने के पश्चात भारत को अंदाजा हो गया था कि हमला पाकिस्तान प्रायोजित है और पहले दिन से ही कड़े कदम उठाने शुरू कर दिये गए थे जिसके तहत सबसे पहले सिंधु जल संधि को निलंबित किया गया जोकि सन 1960 से निरंतर चल रही थी। बावजूद 1965, 1971 और 1999 में पाकिस्तान से युद्ध भी हो चुके थे। यह एक ऐतिहासिक और रणनीतिक फैसला था। साथ ही दूतावास का आकार घटाने और विदेशी नेताओं और राजनयिकों के साथ संवाद करके घटना के बारे मे पूरे विश्व को विस्तार से बताया गया। पाकिस्तानी नागरिकों को शीघ्र ही भारत छोड़ने के लिए आदेश दिया गया, पाकिस्तान के साथ व्यापार, यात्रा, हवाई क्षेत्र पूरी तरह बंद कर दिया गया।

एक तरफ कूटनीतिक और प्रशासनिक कदम उठाये जा रहे थे तो दूसरी तरफ थल सेना सीमा पर अपनी गतिविधियां बढ़ाने में जुटी हुई थी और वायुसेना बड़े पैमाने पर युद्ध अभ्यास करने में लगी थी। थल सेना निरंतर आक्रामक मुद्रा में पाकिस्तान की तरफ कूच कर रही थी। इस तरह की सैन्य और कूटनीतिक लामबंदी देख पाकिस्तान पूरी तरह सशंकित हो रहा था और बार–बार परमाणु हमले की धमकियां दे रहा था। कई बार पाकिस्तान के मंत्री स्वयं ही हमले का दिन और तारीख मीडिया को बता रहे थे। दिल्ली में लगातार शीर्ष सुरक्षा बैठकें दुश्मन को अटकलों का संकेत दे रही थीं।

सरकार ने 6 मई से राष्ट्रव्यापी नागरिक सुरक्षा अभ्यास शुरू करने की घोषणा की और सीमावर्ती राज्यों में यह अभ्यास किया भी गया और दिल्ली में नागरिक सुरक्षा अभ्यास 7 मई को होने की बात कही गयी। ये पाकिस्तान को गुमराह करने की भारत की एक चाल थी। जब 6–7 मई 2025 की मध्यरात्रि में भारत ने पीओजेके और पाकिस्तान में सीमा पार सटीक और लक्ष्य–विशिष्ट हथियारों से पाकिस्तान की हवाई सुरक्षा को भेदते हुए 9 आतंकवादी ठिकानों को नष्ट करके ऑपरेशन 'सिंदूर' का आगाज किया। इस हमले में हमारी सेना ने लश्कर एवं जैश–ए–मुहम्मद जैसी खतरनाक आतंकी तंजीमों के मुख्यालय और प्रशिक्षण केंद्र को ध्वस्त कर दिया। ये पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में बहावलपुर और मुरीदके में स्थित थे। बाकी 7 आतंकवादी ठिकाने पीओजेके में स्थित थे। इस हमले में 100 से अधिक आतंकी मारे गये जिसमें बहुत सारे आतंकी कमांडर भी मारे गये।

ऑपरेशन का नाम 'सिंदूर' रखने के पीछे का मकसद पहलगाम हमले में मारे गए लोगों की शोक संतृप्त पत्नियों को सम्मान देना और उनके त्याग को समर्पित था क्योंकि आतंकियों ने उन बहनों के पतियों की हत्या करके उनके माथे का सिंदूर मिटाया था।

भारतीय सेनाओं के हमले से किसी प्रकार की संपार्श्विक क्षति नहीं हुई और सामान्य नागरिकों को भी कोई क्षति नहीं हुई सिर्फ आतंकवादी ठिकानों को ध्वस्त किया गया। हमले का समय ऐसा चुना गया जब सामान्यतः लोग बाहर नहीं होते हैं और ऐसे हथियार चुने गये जिनसे निर्धारित लक्ष्य पर ही हमला हो। यह एक सम्मिलित सैन्य कार्रवाई थी जिसके तहत 7 आतंकी ठिकानों को थल सेना ने तबाह किया और 02 ठिकानों को वायु सेना ने तबाह किया। आतंकी ठिकानों की सही जानकारी और आतंकवादियों की गतिविधियों का पता लगाने में हमारे खुफिया तंत्र ने अहम भूमिका निभायी।

भारत ने पहलगाम हमले का बदला लेने के बाद पाकिस्तान को बता दिया और कहा कि अब यदि पाकिस्तान किसी प्रकार की बदले की कार्रवाई करेगा तो उसका जबाव दिया जायेगा और भारत का आगे हमला करने का कोई इरादा नहीं है। हालाँकि, पाकिस्तान ने 7 और 8 मई की रात यूएवी और मिसाइलों के माध्यम से हमारे नागरिकों और सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना बनाकर हमला किया जिसको हमारी सेना ने मजबूत बहुस्तरीय वायु रक्षा प्रणालियों से बेअसर कर दिया। हमारी सेना ने संतुलित जबाबी कार्रवाई करते हुये पाकिस्तान के वायु रक्षा प्रणालियों को भारी नुकसान पहुँचाया। 9– 10 मई रात्रि के दौरान पाकिस्तान ने जब हमारे कई सैन्य अड्डों को तीव्र गति वाली मिसाइलों से निशाना बनाने की कोशिश की जिसे हमारी सेना ने नाकाम करते हुये पाकिस्तान के 11 हवाई ठिकानों पर 10 मई की सुबह ब्रह्मोस मिसाइलों के ज़रिए पलटवार किया जिनमें नूर खान और सरगोदा हवाई ठिकाने रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इन ठिकानों को भारी नुकसान पहुँचाया गया। पाकिस्तान भारत के एक भी हवाई हमले को नाकाम नहीं कर सका। इस हमले से भारतीय वायुसेना ने अपने अभूतपूर्व युद्ध कौशल का परिचय दिया और अनुकरणीय हवाई श्रेष्ठता प्रमाणित की। साथ ही साथ पाकिस्तानी वायु रक्षा प्रणाली को पूरी तरह से निष्प्रभावी कर दिया। भारतीय वायुसेना की इस कार्रवाई ने पाकिस्तान के सैन्य नेतृत्व को संघर्ष विराम के लिए मजबूर कर दिया और उसने भारत के डीजीएमओ को युद्ध रोकने के लिये अनुरोध किया। भारत ने अपनी शर्तों पर ऑपरेशन सिंदूर स्थगित कर दिया क्योंकि भारत ने अपने अधिकांश सैन्य उद्देश्य 6–7 मई को ही प्राप्त कर लिये थे। भारत ने पाकिस्तान को स्पष्ट रूप से बता दिया कि अब भारत के खिलाफ प्रत्येक आतंकवादी हमले को युद्ध का कृत्य माना जाएगा। भारत अब आतंकवादियों और उनके समर्थकों के बीच कोई अंतर नहीं करेगा एवं परमाणु ब्लैकमेल को स्वीकार नहीं करेगा।

भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से बहुत ही महत्वपूर्ण एवं रणनीतिक उद्देश्यों को हासिल किया एवं भविष्य में पाकिस्तान हमला करने से पहले सौ बार सोचेगा साथ ही साथ पूरे विश्व को संदेश दिया कि भारत एक शक्तिशाली देश है और आतंक के खिलाफ अपनी लड़ाई लड़ने में पूरी तरह सक्षम है। ऑपरेशन सिंदूर की प्रमुख उपलब्धियां इस प्रकार हैं– आतंकवादी ढांचे के खिलाफ अब तक की सबसे बड़ी सैन्य कार्रवाई के माध्यम से आतंकवादी समूहों और उनके समर्थकों को एक कड़ा संदेश दिया गया है कि आतंकवादी कृत्यों को हर कीमत पर दंडित किया जाएगा। आतंकवादी शिविरों और ठिकानों का पता लगाने में बेजोड़ खुफिया अभियान का प्रदर्शन। आतंकवादी शिविरों पर सटीक और सधा हुआ हवाई हमला करके सिर्फ आतंकी अड्डों को तबाह किया। मेक इन इंडिया रक्षा उपकरणों के बेहतर प्रदर्शन ने साबित कर दिया है कि भारत उभरता हुआ रक्षा उपकरण निर्माता है। ब्रह्मोस मिसाइल इस युद्ध में गेम चेंजर बनकर उभरी, दुनिया भर में इस स्वदेशी मिसाइल की मांग बढी है। भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान पर पूर्ण हवाई श्रेष्ठता स्थापित की और भारत के खिलाफ परमाणु हमले की धमकी वाली पाकिस्तान की ब्लैकमेलिंग इस युद्ध ने समाप्त कर दी है। सिंधु जल संधि (आई. डब्ल्यू. टी.) का निलंबन पाकिस्तान के नापाक इरादों से निपटने के लिए भारत का नया रणनीतिक हथियार बन चुका है।

अभियंता (टी.सी.एक्स एवं आई.पी.आर)
हीप, हरिद्वार

भाषा परिचय

सिप्रारानी आचारी

मन की ध्वनि और भावनाओं
की परिभाषा है भाषा
जीवन का प्रारम्भ उद्गार है भाषा
एक सभ्यता की सत्यता है भाषा
एक जाति का परिचय और
एक व्यक्ति का व्यक्तित्व है भाषा
भाषा की पवित्रता और पारदर्शी प्रस्तावन
एक श्रृंखलित जीवन का है आवाहन ।।
भाषा एक साधन है
अभिव्यक्ति का माध्यम है
भाषा समाज का है दर्पण
शास्वत कला और संस्कृति को है अर्पण

निज़ भाषा हमारे पुर्वजों की है अजय गाथा
और अदम्य साहस का है अवदान ।।
भाषा है साहित्य की गरिमा
कवि और कविता की है आत्मा
मातृभाषा की भव्यता, दिव्यता और मातृत्व
हमारे रक्त का है गूढ़ तत्व
मातृभाषा संरक्षण के लिए निरंतर प्रयास
हर एक हिंदुस्तानी का है एक गुरु दायित्व ।।
हर भाषा का सम्मान, हमारे राष्ट्र का है स्वाभिमान ।।

अभियंता (सीई, एमएम, पीआर)
ईडीएन, बेंगलुरु

पंच परमेश्वर

मुंशी प्रेमचंद

जुम्मन शेख़ और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी। साझे में खेती होती थी। कुछ लेन–देन में भी साझा था। एक को दूसरे पर अटल विश्वास था। जुम्मन जब हज करने गए थे, तब अपना घर अलगू को सौंप गए थे, और अलगू जब कभी बाहर जाते, तो जुम्मन पर अपना घर छोड़ देते थे। उनमें न खान–पान का व्यवहार था, न धर्म का नाता; केवल विचार मिलते थे। मित्रता का मूलमंत्र भी यही है।

इस मित्रता का जन्म उसी समय हुआ, जब दोनों मित्र बालक ही थे; और जुम्मन के पूज्य पिता, जुमराती, उन्हें शिक्षा प्रदान करते थे। अलगू ने गुरु जी की बहुत सेवा की थी, खूब रकाबियाँ माँझीं, खूब प्याले धोए। उनका हुक्क़ा एक क्षण के लिए भी विश्राम न लेने पाता था; क्योंकि प्रत्येक चिलम अलगू को आधे घंटे तक किताबों से अलग कर देती थी। अलगू के पिता पुराने विचारों के मनुष्य थे। उन्हें शिक्षा की अपेक्षा गुरु की सेवा–शुश्रूषा पर अधिक विश्वास था। वह कहते थे कि विद्या पढ़ने से नहीं आती; जो कुछ होता है, गुरु के आशीर्वाद से। बस, गुरु जी की कृपा–दृष्टि चाहिए। अतएव यदि अलगू पर जुमराती शेख़ के आशीर्वाद अथवा सत्संग का कुछ फल न हुआ, तो यह मानकर संतोष कर लेगा कि विद्योपार्जन में उसने यथाशक्ति कोई बात उठा नहीं रखी, विद्या उसके भाग्य ही में न थी, तो कैसे आती?

मगर जुमराती शेख़ स्वयं आशीर्वाद के कायल न थे। उन्हें अपने सोटे पर अधिक भरोसा था, और उसी सोटे के प्रताप से आज आस–पास के गाँवों में जुम्मन की पूजा होती थी। उनके लिखे हुए रेहननामे या बैनामे पर कचहरी का मुहर्रिर भी क़लम न उठा सकता था। हलके का डाकिया, कांस्टेबल और तहसील का चपरासी, सब उनकी कृपा की आकांक्षा रखते थे। अतएव अलगू का मान उनके धन के कारण था, तो जुम्मन शेख़ अपनी अनमोल विद्या से ही सबके आदरपात्र बने थे।

जुम्मन शेख़ की एक बूढ़ी ख़ाला (मौसी) थी। उनके पास कुछ थोड़ी–सी मिल्कियत थी; परंतु उसके निकट संबंधियों में कोई न था। जुम्मन ने लंबे–चौड़े वादे करके वह मिल्कियत अपने नाम लिखवा ली थी। जब तक दानपत्र की रजिस्ट्री न हुई थी, तब तक ख़ालाजान का खूब आदर–सत्कार किया गया। उन्हें खूब स्वादिष्ट पदार्थ खिलाए गए। हलवे–पुलाव की वर्षा–सी की गई; पर रजिस्ट्री की मोहर ने इन ख़ातिरदारियों पर भी मानो मुहर लगा दी। जुम्मन की पत्नी करीमन रोटियों के साथ कड़वी बातों के कुछ तेज़, तीखे सालन भी देने लगी। जुम्मन शेख़ भी निष्ठुर हो गए। अब बेचारी ख़ालाजान को प्रायः नित्य ही ऐसी बातें सुननी पड़ती थीं।

बुढ़िया न जाने कब तक जिएगी। दो–तीन बीघे ऊसर क्या दे दिया, मानो मोल ले लिया है! बघारी दाल के बिना रोटियाँ नहीं उतरतीं! जितना रुपया इसके पेट में झोंक चुके, उतने से तो अब तक गाँव मोल ले लेते।

कुछ दिन ख़ालाजान ने सुना और सहा; पर जब न सहा गया तब जुम्मन से शिकायत की। जुम्मन ने स्थानीय कर्मचारी–गृहस्वामी के प्रबंध में दख़ल देना उचित न समझा। कुछ दिन तक और यों ही रो–धोकर काम चलता रहा। अंत में एक दिन ख़ाला ने जुम्मन से कहा– बेटा! तुम्हारे साथ मेरा निर्वाह न होगा। तुम मुझे रुपए दे दिया करो, मैं अपना पका–खा लूँगी।

जुम्मन ने धृष्टता के साथ उत्तर दिया– रुपए क्या यहाँ फलते हैं?

ख़ाला ने नम्रता से कहा– मुझे कुछ रूखा–सूखा चाहिए भी कि नहीं?

जुम्मन ने गंभीर स्वर से जवाब दिया– तो कोई यह थोड़े ही समझा था कि तुम मौत से लड़कर आई हो?

ख़ाला बिगड़ गईं, उन्होंने पंचायत करने की धमकी दी। जुम्मन हँसे, जिस तरह कोई शिकारी हिरन को जाल की तरफ़ जाते देखकर मन ही मन हँसता है। वह बोले– हाँ, ज़रूर पंचायत करो। फ़ैसला हो जाए। मुझे भी यह रात–दिन की खटखट पसंद नहीं।

पंचायत में किसकी जीत होगी, इस विषय में जुम्मन को कुछ भी संदेह न था। आस–पास के गाँवों में ऐसा कौन था, जो उसके अनुग्रहों का ऋणी न हो; ऐसा कौन था, जो उसको शत्रु बनाने का साहस कर सके? किसमें इतना बल था, जो उसका सामना कर सके? आसमान के फ़रिश्ते तो पंचायत करने आवेंगे नहीं।

इसके बाद कई दिन तक बूढ़ी ख़ाला हाथ में एक लकड़ी लिए आस–पास के गाँवों में दौड़ती रहीं। कमर झुककर कमान हो गई थी। एक–एक पग चलना दूभर था; मगर बात आ पड़ी थी। उसका निर्णय करना ज़रूरी था।

बिरला ही कोई भला आदमी होगा, जिसके सामने बुढ़िया ने दुःख के आँसू न बहाए हों। किसी ने तो यों ही ऊपरी मन से हूँ–हाँ करके टाल दिया, और किसी ने इस अन्याय पर ज़माने को गालियाँ दीं! कहा– क़ब्र में पाँव लटके हुए हैं, आज मरे कल दूसरा दिन; पर हवस नहीं मानती। अब तुम्हें क्या चाहिए? रोटी खाओ और अल्लाह का नाम लो। तुम्हें अब खेती–बारी से क्या काम है? कुछ ऐसे सज्जन भी थे, जिन्हें हास्य–रस के रसास्वादन का अच्छा अवसर मिला। झुकी हुई कमर, पोपला मुँह, सन के–से बाल–इतनी सामग्री एकत्र हों, तब हँसी क्यों न आवे? ऐसे न्यायप्रिय, दयालु, दीन–वत्सल पुरुष बहुत कम थे, जिन्होंने उस अबला के दुखड़े को ग़ौर से सुना हो और उसको सांत्वना दी हो। चारों ओर से घूम–घामकर बेचारी अलगू चौधरी के पास आई। लाठी पटक दी और दम लेकर बोली– बेटा, तुम भी दम भर के मेरी पंचायत में चले आना।

अलगू– मुझे बुलाकर क्या करोगी? कई गाँव के आदमी तो आवेंगे ही।

ख़ाला– अपनी विपद तो सबके आगे रो आई। अब आने–न–आने का अख़्तियार उनको है।

अलगू– यों आने को आ जाऊँगा; मगर पंचायत में मुँह न खोलूँगा।

ख़ाला– क्यों बेटा?

अलगू– अब इसका क्या जवाब दूँ? अपनी खुशी। जुम्मन मेरा पुराना मित्र है। उससे बिगाड़ नहीं कर सकता।

ख़ाला– बेटा, क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?

हमारे सोए हुए धर्म–ज्ञान की सारी संपत्ति लुट जाए, तो उसे ख़बर नहीं होती, परंतु ललकार सुनकर वह सचेत हो जाता है। फिर उसे कोई जीत नहीं सकता। अलगू इस सवाल का कोई उत्तर न दे सका, पर उसके हृदय में ये शब्द गूँज रहे थे– क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?

संध्या समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। शेख़ जुम्मन ने पहले से ही फ़र्श बिछा रखा था। उन्होंने पान, इलायची, हुक़्क़े–तम्बाकू आदि का प्रबंध भी किया था। हाँ, वह स्वयं अलबत्ता अलगू चौधरी के साथ ज़रा दूर पर बैठे हुए थे। जब पंचायत में कोई आ जाता था, तब दबे हुए सलाम से उसका स्वागत करते थे। जब सूर्य अस्त हो गया और चिड़ियों की कलरवयुक्त पंचायत पेड़ों पर बैठी, तब यहाँ भी पंचायत शुरू हुई। फ़र्श की एक–एक अँगुल ज़मीन भर गई; पर अधिकांश दर्शक ही थे। निमंत्रित महाशयों में से केवल वे ही लोग पधारे थे, जिन्हें जुम्मन से अपनी कुछ कसर निकालनी थी। एक कोने में आग सुलग रही थी। नाई ताबड़तोड़ चिलम भर रहा था। यह निर्णय करना असंभव था कि सुलगते हुए उपलों से अधिक धुआँ निकलता था या चिलम के दमों से। लड़के इधर–उधर दौड़ रहे थे। कोई आपस में गाली–गलौज करते और कोई रोते थे। चारों तरफ़ कोलाहल मच रहा था। गाँव के कुत्ते इस जमाव को भोज समझकर झुंड के झुंड जमा हो गए थे।

पंच लोग बैठ गए, तो बूढ़ी ख़ाला ने उनसे विनती की–

'पंचों, आज तीन साल हुए, मैंने अपनी सारी जायदाद अपने भांजे जुम्मन के नाम लिख दी थी। इसे आप लोग जानते ही होंगे। जुम्मन ने मुझे ता–हयात रोटी–कपड़ा देना क़बूल किया। साल भर तो मैंने इसके साथ रो–धोकर काटा। पर अब रात–दिन का रोना नहीं सहा जाता। मुझे न पेट की रोटी मिलती है न तन का कपड़ा। बेकस बेवा हूँ। कचहरी–दरबार नहीं कर सकती। तुम्हारे सिवा और किसको अपना दुःख सुनाऊँ? तुम लोग जो राह निकाल दो, उसी राह पर चलूँ। अगर मुझमें कोई ऐब देखो, तो मेरे मुँह पर थप्पड़ मारो। जुम्मन में बुराई देखो, तो उसे समझाओ, क्यों एक बेकस की आह लेता है ! मैं पंचों का हुक्म सिर–माथे पर चढ़ाऊँगी।'

रामधन मिश्र, जिनके कई असामियों को जुम्मन ने अपने गाँव में बसा लिया था, बोले– जुम्मन मियाँ, किसे पंच बदते हो? अभी से इसका निपटारा कर लो। फिर जो कुछ पंच कहेंगे, वही मानना पड़ेगा।

जुम्मन को इस समय सदस्यों में विशेषकर वे ही लोग दीख पड़े, जिनसे किसी न किसी कारण उनका वैमनस्य था। जुम्मन बोले– पंचों का हुक्म अल्लाह का हुक्म है। ख़ालाजान जिसे चाहें, उसे बदें। मुझे कोई उज़्र नहीं।

ख़ाला ने चिल्लाकर कहा– अरे अल्लाह के बंदे! पंचों का नाम क्यों नहीं बता देता? कुछ मुझे भी तो मालूम हो।

जुम्मन ने क्रोध से कहा– अब इस वक्त मेरा मुँह न खुलवाओ। तुम्हारी बन पड़ी है, जिसे चाहो, पंच बदो।

ख़ालाजान जुम्मन के आक्षेप को समझ गई, वह बोलीं– बेटा, खुदा से डरो, पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न किसी के दुश्मन। कैसी बात कहते हो! और तुम्हारा किसी पर विश्वास न हो, तो जाने दो; अलगू चौधरी को तो मानते हो? लो, मैं उन्हीं को सरपंच बदती हूँ।

जुम्मन शेख़ आनंद से फूल उठे, परंतु भावों को छिपाकर बोले– अलगू ही सही, मेरे लिए जैसे रामधन वैसे अलगू।

अलगू इस झमेले में फँसना नहीं चाहते थे। वे कन्नी काटने लगे। बोले– ख़ाला, तुम जानती हो कि मेरी जुम्मन से गाढ़ी दोस्ती है।

ख़ाला ने गंभीर स्वर में कहा– बेटा, दोस्ती के लिए कोई अपना ईमान नहीं बेचता। पंच के दिल में खुदा बसता है। पंचों के मुँह से जो बात निकलती है, वह खुदा की तरफ़ से निकलती है।

अलगू चौधरी सरपंच हुए। रामधन मिश्र और जुम्मन के दूसरे विरोधियों ने बुढ़िया को मन में बहुत कोसा।

अलगू चौधरी बोले– शेख़ जुम्मन! हम और तुम पुराने दोस्त हैं! जब काम पड़ा, तुमने हमारी मदद की है और हम भी जो कुछ बन पड़ा, तुम्हारी सेवा करते रहे हैं; मगर इस समय तुम और बूढ़ी ख़ाला, दोनों हमारी निगाह में बराबर हो। तुमको पंचों से जो कुछ अर्ज़ करनी हो, करो।

जुम्मन को पूरा विश्वास था कि अब बाज़ी मेरी है। अलगू यह सब दिखावे की बातें कर रहा है। अतएव शांत–चित्त होकर बोले– पंचों, तीन साल हुए ख़ालाजान ने अपनी जायदाद मेरे नाम हिब्बा कर दी थी। मैंने उन्हें ता–हयात खाना–कपड़ा देना क़बूल किया था। खुदा गवाह है, आज तक मैंने ख़ालाजान को कोई तकलीफ़ नहीं दी। मैं उन्हें अपनी माँ के समान समझता हूँ। उनकी ख़िदमत करना मेरा फ़र्ज़ है; मगर औरतों में ज़रा अनबन रहती है, उसमें मेरा क्या बस है? ख़ालाजान मुझसे माहवार ख़र्च अलग माँगती हैं। जायदाद जितनी है, वह पंचों से छिपी नहीं। उससे इतना मुनाफ़ा नहीं होता है कि माहवार ख़र्च दे सकूँ। इसके अलावा हिब्बानामे में माहवार ख़र्च का कोई जिक्र नहीं। नहीं तो मैं भूलकर भी इस झमेले में न पड़ता। बस, मुझे यही कहना है। आइंदा पंचों का अख़्तियार है, जो फ़ैसला चाहें, करें।

अलगू चौधरी को हमेशा कचहरी से काम पड़ता था। अतएव वह पूरा क़ानूनी आदमी था। उसने जुम्मन से जिरह शुरू की। एक–एक प्रश्न जुम्मन के हृदय पर हथौड़े की चोट की तरह पड़ता था। रामधन मिश्र इन प्रश्नों पर मुग्ध हुए जाते थे। जुम्मन चकित थे कि अलगू को क्या हो गया। अभी यह अलगू मेरे साथ बैठा हुआ कैसी–कैसी बातें कर रहा था! इतनी ही देर में ऐसी कायापलट हो गई कि मेरी जड़ खोदने पर तुला हुआ है। न मालूम कब की कसर यह निकाल रहा है? क्या इतने दिनों की दोस्ती कुछ भी काम न आवेगी?

जुम्मन शेख़ तो इसी संकल्प–विकल्प में पड़े हुए थे कि इतने में अलगू ने फ़ैसला सुनाया–

जुम्मन शेख़! पंचों ने इस मामले पर विचार किया। उन्हें यह नीति–संगत मालूम होता है कि ख़ालाजान को माहवार ख़र्च दिया जाए। हमारा विचार है कि ख़ाला की जायदाद से इतना मुनाफ़ा अवश्य होता है कि माहवार ख़र्च दिया जा सके। बस, यही हमारा फ़ैसला है, अगर जुम्मन को ख़र्च देना मंजूर न हो, तो हिब्बानामा रद्द समझा जाए।

यह फ़ैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गए। जो अपना मित्र हो, वह शत्रु का व्यवहार करे और गले पर छुरी फेरे, इसे समय के हेर–फेर के सिवा और क्या कहें? जिस पर पूरा भरोसा था, उसने समय पड़ने पर धोखा दिया। ऐसे ही अवसरों पर झूठे–सच्चे मित्रों की परीक्षा की जाती है। यही कलियुग की दोस्ती है। अगर लोग ऐसे कपटी–धोखेबाज़ न होते, तो देश में आपत्तियों का प्रकोप क्यों होता? यह हैज़ा–प्लेग आदि

व्याधियाँ दुष्कर्मों के ही दंड हैं।

मगर रामधन मिश्र और अन्य पंच अलगू चौधरी की इस नीति–परायणता की प्रशंसा जी खोलकर कर रहे थे। वे कहते थे– इसका नाम पंचायत है! दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया। दोस्ती, दोस्ती की जगह है, किंतु धर्म का पालन करना मुख्य है। ऐसे ही सत्यवादियों के बल पर पृथ्वी ठहरी है, नहीं तो वह कब की रसातल को चली जाती ।

इस फ़ैसले ने अलगू और जुम्मन की दोस्ती की जड़ हिला दी। अब वे साथ–साथ बातें करते नहीं दिखाई देते। इतना पुरानी मित्रता–रूपी वृक्ष सत्य का एक झोंका भी न सह सका। सचमुच वह बालू की ही ज़मीन पर खड़ा था।

उनमें अब शिष्टाचार का अधिक व्यवहार होने लगा। एक–दूसरे की आवभगत ज्यादा करने लगे। वे मिलते–जुलते थे, मगर उसी तरह, जैसे तलवार से ढाल मिलती है।

जुम्मन के चित्त में मित्र की कुटिलता आठों पहर खटका करती थी। उसे हर घड़ी यही चिंता रहती थी कि किसी तरह बदला लेने का अवसर मिले।

अच्छे कामों की सिद्धि में बड़ी देर लगती है; पर बुरे कामों की सिद्धि में यह बात नहीं होती। जुम्मन को भी बदला लेने का अवसर जल्द ही मिल गया। पिछले साल अलगू चौधरी बटेसर से बैलों की एक बहुत अच्छी गोई मोल लाए थे। बैल पछाहीं जाति के सुंदर, बड़े–बड़े सींगों वाले थे। महीनों तक आस–पास के गाँव के लोग दर्शन करते रहे। दैवयोग से जुम्मन की पंचायत के एक महीने के बाद इस जोड़ी का एक बैल मर गया। जुम्मन ने दोस्तों से कहा– यह दग़ाबाज़ी की सज़ा है। इंसान सब्र भले ही कर जाए, पर खुदा नेक–ओ–बद सब देखता है। अलगू को संदेह हुआ कि जुम्मन ने बैल को विष दिला दिया है। चौधराइन ने भी जुम्मन पर ही इस दुर्घटना का दोषारोपण किया। उसने कहा– जुम्मन ने कुछ कर–करा दिया है। चौधराइन और करीमन में इस विषय पर एक दिन खूब ही वाद–विवाद हुआ। दोनों देवियों ने शब्द–बाहुल्य की नदी बहा दी। व्यंग्य, वक्रोक्ति, अन्योक्ति और उपमा आदि अलंकारों में बातें हुईं। जुम्मन ने किसी तरह शांति स्थापित की। उन्होंने अपनी पत्नी को डाँट–डपटकर समझा दिया। वह उसे उस रणभूमि से हटा भी ले गए। उधर अलगू चौधरी ने समझाने–बुझाने का काम अपने तर्क–पूर्ण सोटे से लिया।

अब अकेला बैल किस काम का? उसका जोड़ बहुत ढूँढ़ा गया, पर न मिला। निदान यह सलाह ठहरी कि इसे बेच डालना चाहिए। गाँव में एक समझू साहु थे, वह इक्का–गाड़ी हाँकते थे। गाँव के गुड़–घी लादकर मंडी ले जाते, मंडी से तेल, नमक भर लाते, और गाँव में बेचते। इस बैल पर उनका मन लहराया। उन्होंने सोचा, यह बैल हाथ लगे तो दिन–भर में बेखटके तीन खेप हों। आजकल तो एक ही खेप में लाले पड़े रहते हैं। बैल देखा, गाड़ी में दौड़ाया, बाल–भौंरी की पहचान कराई, मोल–तोल किया और उसे लाकर द्वार पर बाँध ही दिया। एक महीने में दाम चुकाने का वादा ठहरा। चौधरी को भी ग़रज़ थी ही, घाटे की परवा न की।

समझू साहु ने नया बैल पाया, तो लगे उसे रगेदने। वह दिन में तीन–तीन, चार–चार खेपें करने लगे। न चारे की फ़िक्र थी, न पानी की, बस खेपों से काम था। मंडी ले गए, वहाँ कुछ सूखा भूसा सामने डाल दिया। बेचारा जानवर अभी दम भी न लेने पाया था कि फिर जोत दिया। अलगू चौधरी के घर था तो चैन की बंशी बजती थी। बैलराम छठे–छमाहे कभी बहली में जोते जाते थे। खूब उछलते–कूदते और कोसों तक दौड़ते चले जाते थे। वहाँ बैलराम का रातिब था–साफ़ पानी, दली हुई अरहर की दाल और भूसे के साथ खली, और यही नहीं, कभी–कभी घी का स्वाद भी चखने को मिल जाता था। शाम–सबेरे एक आदमी खरहरे करता, पोंछता और सहलाता था। कहाँ वह सुख–चैन, कहाँ यह आठों पहर की खपत ! महीने भर ही में वह पिस–सा गया। इक्के का जुआ देखते ही उसका लहू सूख जाता था। एक–एक पग चलना दूभर था। हड्डियाँ निकल आयी थीं; पर था वह पानीदार, मार की बरदाश्त न थी।

एक दिन चौथी खेप में साहु जी ने दूना बोझ लादा। दिन–भर का थका जानवर, पैर न उठते थे। पर साहु जी कोड़े फटकारने लगे। बस, फिर क्या था, बैल कलेजा तोड़कर चला। कुछ दूर दौड़ा और चाहा कि ज़रा दम ले लूँ; पर साहु जी को जल्द पहुँचने की फ़िक्र थी; अतएव उन्होंने कई कोड़े बड़ी निर्दयता से फटकारे। बैल ने एक बार फिर ज़ोर लगाया; पर अबकी बार शक्ति ने जवाब दे दिया। वह धरती पर गिर पड़ा, और ऐसा गिरा कि फिर न उठा। साहु जी ने बहुत पीटा, टाँग पकड़कर खींचा, नथनों में लकड़ी ठूँस दी; पर कहीं मृतक भी उठ सकता है? तब साहु जी को कुछ शक़ हुआ। उन्होंने बैल को ग़ौर से देखा, खोलकर अलग किया; और सोचने लगे कि गाड़ी कैसे घर पहुँचे। बहुत चीख़े–चिल्लाए; पर देहात का रास्ता बच्चों की आँख की तरह साँझ होते ही बंद हो जाता है। कोई नज़र न आया। आस–पास कोई गाँव भी न था। मारे क्रोध के उन्होंने मरे हुए बैल पर और दुर्रे लगाये और कोसने लगे–अभागे। तुझे मरना ही था, तो घर पहुँचकर मरता! ससुरा बीच रास्ते ही में मर रहा! अब गाड़ी कौन खींचे? इस तरह साहु जी खूब जले–भुने। कई बोरे गुड़ और कई पीपे घी उन्होंने बेचे थे, दो–ढाई सौ रुपए कमर में बँधे थे। इसके सिवा गाड़ी पर कई बोरे नमक के थे; अतएव छोड़कर जा भी न सकते थे। लाचार बेचारे गाड़ी पर ही लेट गए। वहीं रतजगा करने की ठान ली। चिलम पी, गया। फिर हुक्क़ा पिया। इस तरह साहु जी आधी रात तक नींद को बहलाते रहे। अपनी जान में तो वह जागते ही रहे; पर पौ फटते ही जो नींद टूटी और कमर पर हाथ रखा, तो थैली ग़ायब! घबराकर इधर–उधर देखा, तो कई कनस्तर तेल भी नदारद! अफ़सोस में बेचारे ने सिर पीट लिया और पछाड़ खाने लगा। प्रातःकाल रोते–बिलखते घर पहुँचे। सहुआइन ने जब यह बुरी सुनावनी सुनी, तब पहले तो रोयी, फिर अलगू चौधरी को गालियाँ देने लगी– निगोड़े ने ऐसा कुलच्छनी बैल दिया कि जन्म–भर की कमाई लुट गई।

इस घटना को हुए कई महीने बीत गए। अलगू जब अपने बैल के दाम माँगते तब साहु और सहुआइन, दोनों ही झल्लाए हुए कुत्ते की तरह चढ़ बैठते और अंड–बंड बकने लगते– वाह! यहाँ तो सारे जन्म की कमाई लुट गई, सत्यानाश हो गया, इन्हें दामों की पड़ी है। मुर्दा बैल दिया था, उस पर दाम माँगने चले हैं ! आँखों में धूल झोंक दी, सत्यानाशी बैल गले बाँध दिया, हमें निरा पोंगा ही समझ लिया है! हम भी बनिए के बच्चे हैं, ऐसे बुद्धू कहीं और होंगे। पहले जाकर किसी गड्ढे में मुँह धो आओ, तब दाम लेना। न जी मानता हो, तो हमारा बैल खोल ले जाओ। महीना भर के बदले दो महीना जोत लो। और क्या लोगे?

चौधरी के अशुभचिंतकों की कमी न थी। ऐसे अवसरों पर वे भी एकत्र

हो जाते और साहु जी के बर्राने की पुष्टि करते। परंतु डेढ़ सौ रुपये से इस तरह हाथ धो लेना आसान न था। एक बार वह भी गरम पड़े। साहु जी बिगड़ कर लाठी ढूँढ़ने घर में चले गए। अब सहुआइन ने मैदान लिया। प्रश्नोत्तर होते–होते हाथापाई की नौबत आ पहुँची। सहुआइन ने घर में घुसकर किवाड़ बंद कर लिए। शोरगुल सुनकर गाँव के भलेमानस जमा हो गए। उन्होंने दोनों को समझाया। साहु जी को दिलासा देकर घर से निकाला। वह परामर्श देने लगे कि इस तरह से काम न चलेगा। पंचायत कर लो। जो कुछ तय हो जाए, उसे स्वीकार कर लो। साहु जी राजी हो गए। अलगू ने भी हामी भर ली।

पंचायत की तैयारियाँ होने लगीं। दोनों पक्षों ने अपने–अपने दल बनाने शुरू किए। इसके बाद तीसरे दिन उसी वृक्ष के नीचे पंचायत बैठी। वही संध्या का समय था। खेतों में कौए पंचायत कर रहे थे। विवादग्रस्त विषय था यह कि मटर की फलियों पर उनका कोई स्वत्व है या नहीं; और जब तक यह प्रश्न हल न हो जाए, तब तक वे रखवाले की पुकार पर अपनी अप्रसन्नता प्रकट करना आवश्यक समझते थे। पेड़ की डालियों पर बैठी शुक–मंडली में यह प्रश्न छिड़ा हुआ था कि मनुष्यों को उन्हें बेमुरौवत कहने का क्या अधिकार है, जब उन्हें स्वयं अपने मित्रों से दग़ा करने में भी संकोच नहीं होता।

पंचायत बैठ गई, तो रामधन मिश्र ने कहा– अब देरी क्या है? पंचों का चुनाव हो जाना चाहिए। बोलो चौधरी; किस–किस को पंच बदते हो।

अलगू ने दीन भाव से कहा– समझू साहु ही चुन लें।

समझू खड़े हुए और कड़ककर बोले– मेरी ओर से जुम्मन शेख़।

जुम्मन का नाम सुनते ही अलगू चौधरी का कलेजा धक्–धक् करने लगा, मानो किसी ने अचानक थप्पड़ मार दिया हो। रामधन अलगू के मित्र थे। वह बात को ताड़ गए। पूछा– क्यों चौधरी तुम्हें कोई उज़्र तो नहीं।

चौधरी ने निराश होकर कहा– नहीं, मुझे क्या उज़्र होगा?

अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधारक होता है। जब हम राह भूलकर भटकने लगते हैं तब यही ज्ञान हमारा विश्वसनीय पथ–प्रदर्शक बन जाता है।

पत्र–संपादक अपनी शांति कुटी में बैठा हुआ कितनी धृष्टता और स्वतंत्रता के साथ अपनी प्रबल लेखनी से मंत्रिमंडल पर आक्रमण करता है; परंतु ऐसे अवसर आते हैं, जब वह स्वयं मंत्रिमंडल में सम्मिलित होता है। मंडल के भवन में पग धरते ही उसकी लेखनी कितनी मर्मज्ञ, कितनी विचारशील, कितनी न्यायपरायण हो जाती है। इसका कारण उत्तरदायित्व का ज्ञान है। नवयुवक युवावस्था में कितना उद्दंड रहता है। माता–पिता उसकी ओर से कितने चिंतित रहते हैं! वे उसे कुल–कलंक समझते हैं; परंतु थोड़े ही समय में परिवार का बोझ सिर पर पड़ते ही वह अव्यवस्थित–चित्त उन्मत्त युवक कितना धैर्यशील, कैसा शांतचित्त हो जाता है, यह भी उत्तरदायित्व के ज्ञान का फल है।

जुम्मन शेख़ के मन में भी सरपंच का उच्च स्थान ग्रहण करते ही अपनी ज़िम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। उसने सोचा, मैं इस वक्त न्याय और धर्म के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। मेरे मुँह से इस समय जो कुछ निकलेगा, वह देववाणी के सदृश है–और देववाणी में मेरे मनोविकारों का कदापि समावेश न होना चाहिए। मुझे सत्य से जौ भर भी टलना उचित नहीं!

पंचों ने दोनों पक्षों से सवाल–जवाब करने शुरू किए। बहुत देर तक दोनों दल अपने–अपने पक्ष का समर्थन करते रहे। इस विषय में तो सब सहमत थे कि समझू को बैल का मूल्य देना चाहिए। परंतु दो महाशय इस कारण रियायत करना चाहते थे कि बैल के मर जाने से समझू को हानि हुई। इसके प्रतिकूल दो सभ्य मूल के अतिरिक्त समझू को दंड भी देना चाहते थे, जिससे फिर किसी को पशुओं के साथ ऐसी निर्दयता करने का साहस न हो। अंत में जुम्मन ने फ़ैसला सुनाया–

अलगू चौधरी और समझू साहु! पंचों ने तुम्हारे मामले पर अच्छी तरह विचार किया। समझू को उचित है कि बैल का पूरा दाम दें। जिस वक्त उन्होंने बैल लिया, उसे कोई बीमारी न थी। अगर उसी समय दाम दे दिए जाते, तो आज समझू उसे फेर लेने का आग्रह न करते। बैल की मृत्यु केवल इस कारण हुई कि उससे बड़ा कठिन परिश्रम लिया गया और उसके दाने–चारे का कोई अच्छा प्रबंध न किया गया।

रामधन मिश्र बोले– समझू ने बैल को जान–बूझ कर मारा है, अतएव उससे दंड लेना चाहिए।

जुम्मन बोले– यह दूसरा सवाल है! हमको इससे कोई मतलब नहीं!

झगड़ू साहु ने कहा– समझू के साथ कुछ रियायत होनी चाहिए।

जुम्मन बोले– यह अलगू चौधरी की इच्छा पर निर्भर है। यह रियायत करें, तो उनकी भलमनसी।

अलगू चौधरी फूले न समाए। उठ खड़े हुए और ज़ोर से बोले– पंच–परमेश्वर की जय!

इसके साथ ही चारों ओर से प्रतिध्वनि हुई– पंच–परमेश्वर की जय!

प्रत्येक मनुष्य जुम्मन की नीति को सराहता था– इसे कहते हैं न्याय! यह मनुष्य का काम नहीं, पंच में परमेश्वर वास करते हैं, यह उन्हीं की महिमा है। पंच के सामने खोटे को कौन खरा कह सकता है?

थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उनके गले लिपटकर बोले– भैया, जब से तुमने मेरी पंचायत की तब से मैं तुम्हारा प्राण–घातक शत्रु बन गया था; पर आज मुझे ज्ञात हुआ कि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे और कुछ नहीं सूझता। आज मुझे विश्वास हो गया कि पंच की ज़बान से खुदा बोलता है। अलगू रोने लगे। इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया। मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई।

हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा बीएचईएल की तीन इकाइयों का निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा मई– जून 2025 के दौरान बीएचईएल की तीन इकाइयों–ईडीएन बेंगलुरु, हीप हरिद्वार और सीएफपी रुद्रपुर का राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण बैठक में समिति के सदस्यों के अलावा बीएचईएल एवं भारी उद्योग मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारीगण शामिल हुए।

समिति के माननीय सदस्यों ने भारत सरकार द्वारा जारी राजभाषा संबंधी नियमों, विनियमों को लागू करने में इन इकाइयों द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की तथा तीनों ही इकाइयों को **'उत्कृष्ट'** दर्जे के साथ प्रमाण–पत्र प्रदान किया।

विश्व हिन्दी दिवस - 2025 का आयोजन

कॉर्पोरेट कार्यालय सहित बीएचईएल की सभी इकाइयों/प्रभागों में विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया।

इस अवसर पर, 10 जनवरी (विश्व हिन्दी दिवस) को दिल्ली–एनसीआर स्थित इकाइयों के कर्मचारियों के लिए काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कुल 20 कर्मचारियों ने भाग लिया। निर्णायक के रूप में हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री उपेन्द्र पाण्डेय जी को आमंत्रित किया गया था। निर्णायक की भूमिका निभाने के उपरांत श्री पाण्डेय ने अपनी वीर रस एवं श्रृंगार रस की कविताओं से सभी प्रतिभागियों एवं श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

बी एच ई एल
BHEL

www.bhel.com

Follow us on

BHELOfficial BHEL_India BHEL_India bhel.india company/bhel